पाती

(भोजपुरी दिशा बोध के पत्रिका)

अंक-90

सितम्बर-2018

सहयोग-₹50/-

विशेष : रचना-आलोचना

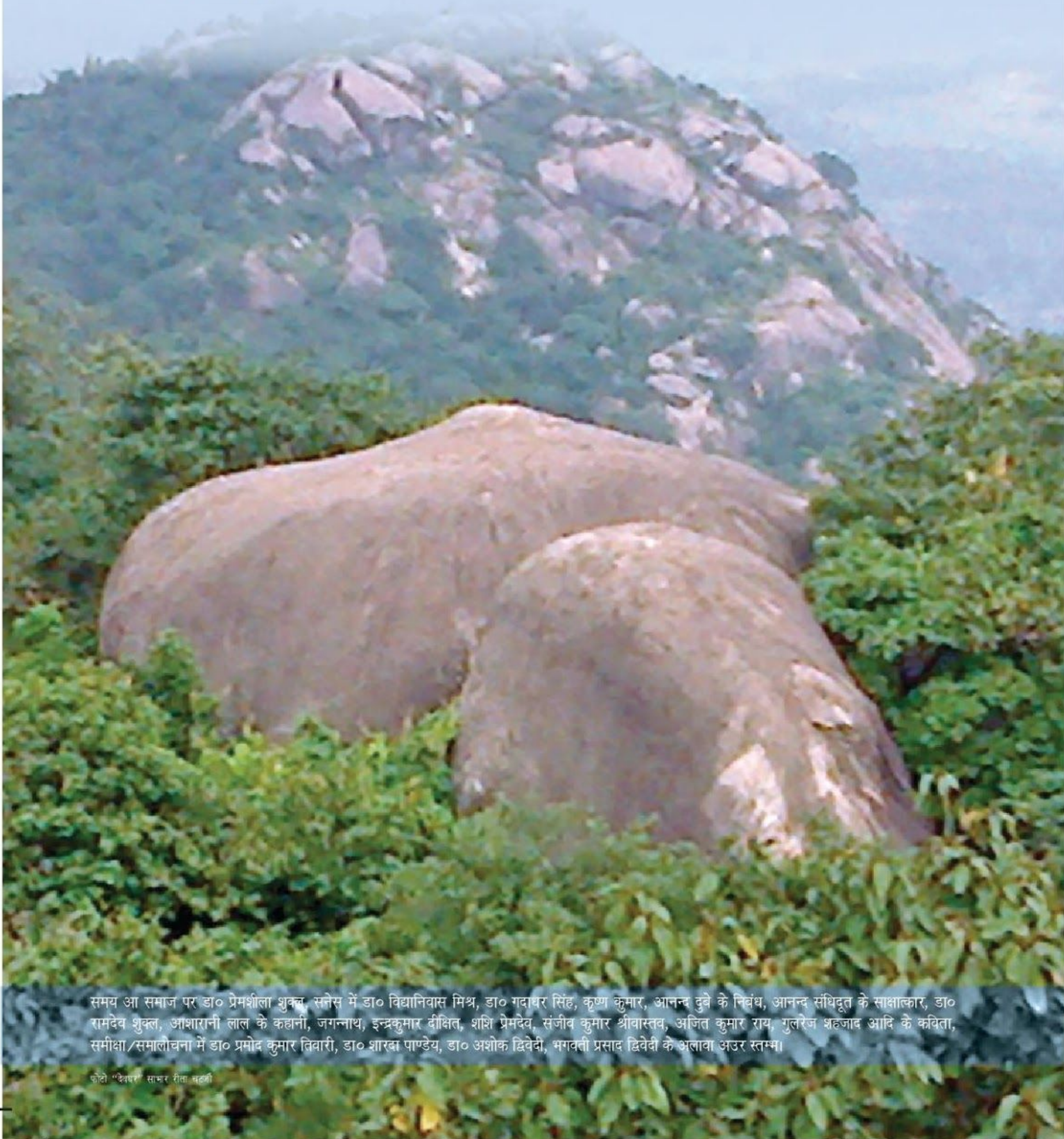

समय आ समाज पर डा० प्रेमशीला शुक्ल, सनेस में डा० विद्यानिवास मिश्र, डा० गदाधर सिंह, कृष्ण कुमार, आनन्द दुबे के निबंध, आनन्द संधिदूत के साक्षात्कार, डा० रामदेव शुक्ल, आशारानी लाल के कहानी, जगन्नाथ, इन्द्रकुमार दीक्षित, शशि प्रेमदेव, संजीव कुमार श्रीवास्तव, अजित कुमार राय, गुलरेज शहजाद आदि के कविता, समीक्षा/समालोचना में डा० प्रमोद कुमार तिवारी, डा० शारदा पाण्डेय, डा० अशोक द्विवेदी, भगवती प्रसाद द्विवेदी के अलावा अउर स्तम्भ।

फोटो "देवघर" साभार रीता सहनी

''पाती -आजीवन सदस्य/संरक्षक''

सतीश त्रिपाठी (अध्यक्ष, 'सेतु' न्यास, मुम्बई) डा० ओम प्रकाश सिंह (भोजपुरिका डाट काम), तुषारकान्त उपाध्याय (पटना, बिहार), डा० शत्रुध्न पाण्डेय (तीखमपुर, बलिया), जे.जे. राजपूत (भड़ूच, गुजरात),राजगुप्त (चौक, बलिया) धीरा प्रसाद यादव (बलिया), देवेन्द्र यादव (सुखपुरा, बलिया) विजय मिश्र (टण्डवा, बलिया), डॉ० अरूणमोहन भारवि (बक्सर), ब्रजेश कुमार द्विवेदी (टैगोरनगर, बलिया), दयाशंकर तिवारी (भीटी, मऊ), श्री कन्हैया पाण्डेय (बलिया), भगवती प्रसाद द्विवेदी (पटना), सरदार बलजीत सिंह (सी० ए०), बलिया, जयन्त कुमार सिंह (खरौनी कोठी) बलिया, डा० (श्रीमती) प्रेमशीला शुक्ल (देवरिया), डा० जयकान्त सिंह 'जय' (मुजफ्फरपुर) एवं डा० कमलेश राय (मऊ), कृष्ण कुमार (आरा), डा० अयोध्या प्रसाद उपाध्याय (कुंवर सिंह वि० वि० आरा), अजय कुमार (पी०एन०बी०, आरा), रामयश अविकल (आरा), डा० ब्रजभूषण मिश्र (मुजफ्फरपुर), हरिद्वार प्रसाद 'किसलय' (भोजपुर), विजयशंकर पाण्डेय (नारायणी विहार, वाराणसी), डा० अमरनाथ शर्मा (बलिया), कौशलेन्द्र कुमार सिन्हा (एसबीआई, बलिया), डा० दिवाकर पाण्डेय (पकड़ी, आरा), गुरविन्दर सिंह (नई दिल्ली), डा० प्रकाश उदय (वाराणसी), डा० नीरज सिंह (आरा), विक्रम कुमार सिंह (पूर्वी चम्पारन), नागेन्द्र कुमार सिंह (कुतुब बिहार, नई दिल्ली), जलज कुमार मिश्र (बेतिया पं० चम्पारण), श्रीमती इन्दु अजय सिंह (द्वारका, नई दिल्ली), डा० संजय सिंह (करमनटोला, आरा), आनन्द सन्धिदूत (वासलीगंज, मिर्जापुर), नगेन्द्र सिंह एवं राकेश कुमार सिंह, (राजनगर, पालम, नई दिल्ली), डा० हरेश्वर राय (जवाहरनगर, सतना, म० प्र०), केशव मोहन पाण्डेय (कुशीनगर), गुलरेज शहजाद (मोतीहारी), शशि सिंह (राजनगर, नई दिल्ली), जितेन्द्र कुमार (पकडी, आरा), योगेन्द्र प्रसाद सिंह (बोकारो, झारखंड), डा० प्रमोद कुमार तिवारी (गुजरात, विद्यापीठ), महेन्द्र प्रसाद सिंह (रंगश्री, नई दिल्ली), अजीत सिंह (इलाहाबाद), संतोष वर्मा (साधु नगर, नई दिल्ली), संजय कुमार सिंह (राजनगर, नई दिल्ली), डा० भगवान पाण्डेय 'निरास' (बक्सर, बिहार)

किताब मिलल...

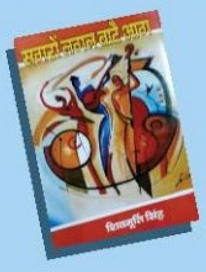

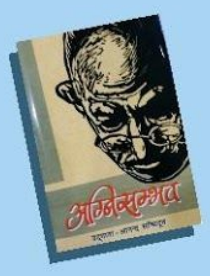

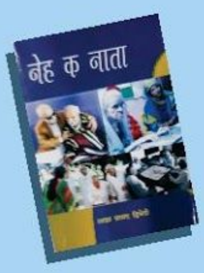

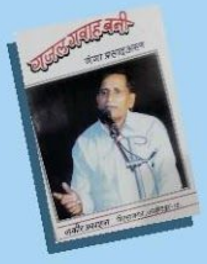

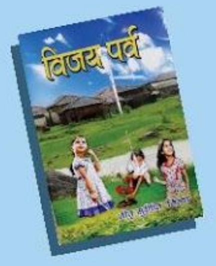

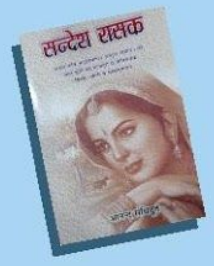

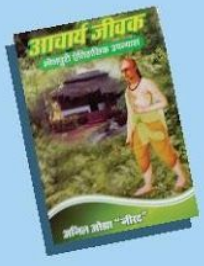

भोजपुरी-साहित्य के पठनीय सृजन/प्रकाशन

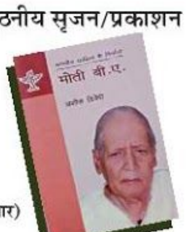

मोती बी०ए०

(जीवन-संघर्ष आ कविता-संसार)
अशोक द्विवेदी

₹ पेपर बैक-50/-

कुछ आग, कुछ राग

(कविता-संकलन)
अशोक द्विवेदी

₹ सजिल्द-350/- पेपर बैक-200/-

भोजपुरी के नया पठनीय उपन्यास

बनचरी

अशोक द्विवेदी

₹ सजिल्द-300/- पेपर बैक-220/-

'पाती' कार्यालय- डा0 अशोक द्विवेदी, टैगोर नगर, सिविल लाइन्स, बलिया-277 001 या एफ-1118, आधार तल, चितरंजन पार्क, नई दिल्ली-110019
Mobile: +91-8004375093, 8707407392, 8373955162, 9919426249,
Email: ashok.dvivedipaati@gmail.com

पाती

(भोजपुरी दिशा बोध के पत्रिका)

www.bhojpuripaati.com

अंक: 90 सितम्बर' 2018

(तिमाही)

भोजपुरी के अनन्य प्रेमी, लब्ध-प्रतिष्ठ कवि त्रिभुवन प्रसाद सिंह 'प्रीतम' के 'पाती-परिवार' का ओर से विनय सहित श्रद्धाँजलि

प्रबन्ध संपादक
प्रगत द्विवेदी

कंपोजिग / ग्राफिक्स
शैलेश कुमार, अरूण निखंजन, सत्यप्रकाश

इन्टरनेट मीडिया सहयोगी
डा0 ओम प्रकाश सिंह

आवरण चित्र- फोटो "देवघर" साभार
रीता चटर्जी

संपादक
डॉ0 अशोक द्विवेदी

'पाती'- परिवार (प्रतिनिधि)

हीरालाल 'हीरा', शशि प्रेमदेव, अशोक कुमार तिवारी (बलिया) विष्णुदेव, डा० अरूणमोहन 'भारवि' (बक्सर), कृष्ण कुमार (आरा), विजय शंकर पाण्डेय, डा० प्रकाश उदय (वाराणसी), दयाशंकर तिवारी, डा० कमलेश राय (मऊ), जगदीशनारायण उपाध्याय (देवरिया), गुलरेज शहजाद (मोतिहारी पूर्वी चम्पारण)जलज कुमार मिश्र 'अनुपम' (बेतिया, पश्चिम चम्पारण), डा० जयकान्त सिंह, डा० ब्रजभूषण मिश्र (मुजफ्फरपुर), भगवती प्रसाद द्विवेदी, तुषारकान्त उपाध्याय (पटना), आकांक्षा (मुम्बई), अनिल ओझा 'नीरद' (कोलकाता), गंगाप्रसाद 'अरुण', अजय ओझा (जमशेदपुर), डा० सुशीलकुमार तिवारी, गुरूविन्द्र सिंह (नई दिल्ली)

संचालन, संपादन
अवैतनिक एवं अव्यावसायिक

e-mail:-paati.bhojpuri@gmail.com,
ashok.dvivedipaati@gmail.com

<u>संपादन-कार्यालय</u>:-

<u>टैगोर नगर, सिविल लाइन्स, बलिया-277001 एवं</u>

एफ-1118, आधार तल, चितरंजन पार्क, नई दिल्ली-19

मो0- 08004375093, 08707407392, 91-8373955162

एक अंक-50/-
सालाना सहयोग-250/-
(डाक व्यय सहित)
आजीवन सदस्य सहयोगः
न्यूनतम-2500/-

(पत्रिका में प्रगट कइल विचार, लेखक लोग के आपन हऽ ओसे पत्रिका परिवार के सहमति जरूरी नइखे)

एह अंक में....

हमार पन्ना - ● आधुनिकता के नवसंस्कृति / 3–6

समय आ समाज - ● सावन आ गइल / डा0 प्रेमशीला शुक्ल / 12–15

सनेस - ● अखिल भा0 भोजपुरी साहित्य सम्मेलन के एगो पुरान भाषन / डा0 विद्यानिवास मिश्र / 20–25

निबन्ध - ● कुरता–कविलास / डा0 गदाधर सिंह / 45–47

साक्षात्कार- ● 'आनन्द सन्धिदूत' के / डा0 सुमन सिंह / 16–19

रम्य-रचना- ● फेरु बैतलवा डाढ़ी–डाढ़ी / कृष्ण कुमार / 48–52

संस्मरण- ● लूटल नीमन ना हऽ / आनन्द दुबे / 39–40

कविता-गीत-गजल -
- ● जगन्नाथ / 7–8 ● इन्द्रकुमार दीक्षित / 9
- ● डा0 हरेश्वर राय / 9 ● शशि प्रेमदेव / 10–11
- ● हीरालाल 'हीरा' / 11 ● जयशंकर प्रसाद द्विवेदी / 19
- ● आलोक पाण्डेय / 30

कहानी-
- ● रजाई / रामदेव शुक्ल / 26–27
- ● धुआँ छँटल / आशारानी लाल / 28–29
- ● सुसाइड नोट / आद्याप्रसाद द्विवेदी / 31–33

रम्य-रपट- ● सम्मान–समारोह / राजगुप्त / 53–54

मूल्यांकन- ● "बलिया के भोजपुरी काव्य–परम्परा / डा0 अशोक द्विवेदी / 56–68

कविता/गीत/गजल-
- ● संजीव कुमार श्रीवास्तव / 34 ● अजित कुमार राय / 35
- ● गुरुविन्द्र सिंह / 36 ● शिवमूर्ति सिंह / 37 ● गुलरेज शहजाद / 38
- ● मिथिलेश गहमरी / 40 ● शिवजी पाण्डेय 'रसराज' / 55

समीक्षा/समालोचन-
- ● भोजपुरियत के जीत के कहानी 'बिंदिया' / डा0 प्रमोद कुमार तिवारी / 70–73
- ● पाण्डेय कपिल के दोहा / भगवती प्रसाद द्विवेदी / 74–77
- ● जिनिगी के 'आग आ राग' में पागल कविता: 'कुछ आग, कुछ राग / डा0 शारदा पाण्डेय / 78–80

सांस्कृतिक गतिविधि- ● बलिया के पाती 'अक्षर–सम्मान' आयोजन / 41–44 एवं पृष्ठ–81–82

राउर पन्ना- ● पाठक लोगन के चिट्ठी / 83–84

आधुनिकता के 'नव संस्कृति' : भुलाइल पहिचान – हेराइल इंसान

आस्था आ विश्वास के छान-पगहा तुरावत, ई जुग अतना 'फास्ट' बा कि कब, कहाँ, का घटित भइल, पते नइखे चलत। बड़ से बड़ घटना लोग दसे दिन में भुला जाता। भीड़ भड़क्का आ धक्कमधुक्की में कब केहू आपन बहुते करीबी अदिमी बगले से गुजर जाता, हमनी के पते नइखे चलत। एकदम आत्मकेन्द्रित आ व्यक्तिवादी ढंग से हमनी का अपना धुन में अपना सुख-सवारथ आ चिन्ता फिकिर के गुनावन करत, चलल चल जा तानी जा।

अभी एके हप्ता पहिले हम बीच बजार में अपना एगो संघतिया के देखलीं आ बहुत दिन बाद। हम चिचिया के उनका के बोलवलीं, बाकि ऊ ना जाने कवना धुन में, इचि तकबो ना कइले। हम सोचलीं ओहू बेचारू के का दोस? आज काल्ह अदिमी अतना ढेर सवालन से एक्के साथ जूझि रहल बा कि ओके अतनो फुरसत नइखे कि ऊ दोसरो का बारे में सोच सको। छोट-मोट जरूरत, मामूली सुख आ छिन भर के शान्ति खातिर ओके घंटन आ कबो-कबो महिनन भागे-दउरे के परत बा। हेती-हेती बात पर ओके हुरपेटल जाता। अदना-अदना चीझु खातिर ओके मन मारे के परत बा। अतना संकटग्रस्त आ फजिहताह स्थिति पहिले ना रहे आदमी खातिर।

ई माहौल, बेवस्था आ ओकरा भौतिक संस्कृति के रचल हऽ। ई ओह मुट्ठी भर लोगन के रचल ह जे अपना सुख-सवारथ आ समृद्धि खातिर खुरपेंच लड़ावल। ई ओह बैपारियन आ उद्योगपतियन के रचल ह जे 'उत्पादन' खपावे आ बजार पर कब्जा करे खातिर मकड़जाल बनवलस। ई ओह नेता, 'डान', 'माफिया' लोगन क रचल ह जे पइसा आ धाक जमावे खातिर मजबूर आ दिशाहीन नवहन के फँसलस। शक्ति, उपभोग आ प्राप्ति मात्र के ई 'नव-संस्कृति' हमनी से, हमनी क आत्मिक शक्ति आ आत्मबल छीनत चलि गइल। हमनी में भय आ शंका अतना घुसरल कि सुभाव के 'मस्ती' हेरात चलि गइल। एह संस्कृति के 'नेचुरल' ऊ ना ह, जवन पहिले लोग बतावत आ परिभाषित करत रहे। अब त 'सादा जीवन उच्च विचार' माने 'फटीचर' भा 'फटकचंद गिरधारी' होता। नवका सौन्दर्यबोध में भौतिक चीझन आ फितरत क बोलबाला बा। ओकर मतलब खाली इन्द्रिय बोध बा। 'नियोन लाइट' के रंगीन सपनीला कुहेस में पँवरत खा भा दोसरा शब्द में आपन भविष्य सँवारत खा आत्मा वात्मा क बात ठीक नइखे लागत। भीतरी सुघराई के जमाना लद गइल। आज बाहरी चमकाव आ ग्लैमर के जमाना बा।

दुख त ई बा कि देहि के कुदरती सुघराई, गोराई-सँवराई, सौन्दर्य प्रसाधन वाली दवाई आ 'कास्मेटिक' चीझु का आगा भुलाइल जाता। 'जिम' आ 'जागिंग' (कसरत आ स्वास्थ क केन्द्र वाला) से देहि के पुष्ट आ सुघर बनावल जाता। भीतरी सुघराई, जेसे हमनी का आत्मा के आ मन के ऊँचाई मिलेले- जेके फइला के आ गहिर क के हमनी के ओके विस्तार देनी जा- सहज आ प्राकृतिक बनीले

जा, जवना से सन्तोष, आनन्द आ तृप्ति मिलले, ओसे एह नवका 'नेचुरल' प्रकृतिवादियन के कुछऊ लेबे-देबे के नइखे। ऊ हमनी के एगो दोसरे किसिम का गुलामी में जकड़त बाड़न स। हमनी के ओकर आदी बनावत बाड़न स। ऊ एगो अइसन व्यूह में ले जा के छोड़ दे ताड़न स, जहाँ से मुक्ति के कवनो रास्ता नइखे। हमके हिन्दी कवि शलभ श्रीराम सिंह के एगो कविता इयाद आवऽ तिया-

निकलना होगा इस रंगीन कुहासे के पार
..... अपनी जमीन पर अपने आकाश में
वापस लौटना चाहता हूँ मैं
..... विवेकपात की यह स्थिति खतरनाक है!
खतरनाक है सन्निपात की यह स्थिति
आत्मघात की यह स्थिति खतरनाक है!

एह आन्हर एकांगी 'आधुनिकता' के नवकी पीढ़ी 'टैलेन्टेड', 'प्रोग्रेसिव' कहात बिया। का प्रगति क मतलब 'पॉप' आ 'बीट' ह? कि हलो-हाय? मूल्य मरजादा कूल्हि तूरि के लँगटे नचला के नाँव ह? का खाली भौतिक आ आर्थिक स्थिति पर भासन दिहला आ परम्परा के गारी दिहला से केहू प्रगतिशील हो जाई? वर्तमान के भविष्य से जोरि के देखे वाला लोग ई नइखे देखत कि वर्तमान कवना नेइँ पर खाड़ बा? टेक्नीक के विकास आ नयापन भौतिक प्रगति खातिर जरूरी बा, बाकी विवेक, दृष्टि आ विचार से प्रदूषन के का कहाई? का कहाई ओह आन्हर घोड़दउर के जेमे लोग एक दोसरा के धकियावत, कान्ह छीलत भागल जाता? का कहाई ओह अमानवीय अर्थलिप्सा के जवना के पूरा करे खातिर ऊ आदमीयत के कूल्हि पहिचान मिटा रहल बा!

आधुनिकता हमनी का सोच में नवीनता क संगलोर (पर्याय) बनल जा तिया। कुछ प्रगतिशील बुद्धिजीवी लोग इतिहास आ परम्परा में कवनो चीझु खोजलहुँ बा त खाली अपना मसरफ आ सिद्धांत के प्रतिपादन खातिर। 'आस्था', 'विश्वास' के अन्धविश्वास आ दकियानूसी चीझु मानि के भरसक कगरियाई देले बा लोग। पच्छिमपरस्त लिखनिहार लोग आपन 'चिरनवीनता' बरकरार राखे बदे अइसे इस्तेमाल करत बा जइसे कवनो बूढ़ मेहरारू आपन बार 'डाई' करा के क्रीम पाउडर से गाल क झुर्री भरि लेले। संसारीकरन (वैश्विकता) के तकाजा ई थोरे ह कि आपन नीमनो चीझु भुला दिहल जाव। नवीनता हर जुग में रहल बा। खाये-पीये, पहिरे-ओढ़े, बोले-बतियावे आ लड़े-भिड़े कूल्हि में। कला आ साहित्य में एके चमकत आ बुतात कई बेरि देखल गइल बा। जवन काल्ह नया रहे, ऊहे आज पुरान बा आ काल्ह फेरू ओकरा जगह कवनो नया ले लेई। ई त प्रकृति के शाश्वत नियम ह। नयापन, आधुनिकता ना हो सकेला।

'आधुनिकता' - दीठि में बा, बिचार में बा। ई ऊ नजरिया ह जवना के हमनी का वर्तमान के देखे आ परखेनी जा- ओकर मूल्य आँकेनी जा। ई दृष्टि-परम्परा आ नवीनता दूनों का 'सम्यक्' बोध से उपजल बिवेक का अँजोर से भरल होले। एही प्रकाश से हमनी के भविष्य के सही आ नया राह खोज सकेनी जा। अतीत क बहुत कुछ बा जवन अपनावे जोग बा। हमनी के पुरखा लोग अपना साधना, संघर्ष आ गहन चिन्तन से ना जानी कतना मणि पवले आ दिहले बा अगर हमनी का ओके ठीकरा समुझ के ठुकराइ दिहनी जा त हमनी के दुर्दशा बढ़ते जाई। परम्परा क ज्ञान आ बोध हमनी के सतही आ भटकावे वाला राह पर जाए से रोक सकेला। नया के चकचौंध में अन्हराये चउँधियाये से परम्परे बचा सकेले।

परम्परा हमनी के भाषा आ संस्कृति देहले बिया। अपना भाषा-संस्कृति, धरती आ प्रकृति क उपेक्षा हमनी के प्रगतिशील त ना, कृतघ्न गुलाम जरूर बना घाली। हमनी क धर्म आ संस्कृति आस्था आ विश्वास का भाव-भुइँ पर फुलाइल-फरल। आस्था के दिया जवना आत्मा में जरल होके अँजोर कइलस। एही आस्था का कारन हमनी का अपना धरती आ प्रकृति कूल्हि के पूजत अइनी जा। अन्धविश्वास से ना बलुक कृतज्ञता से, ओकरा एहसान मानि के। पेड़, पौधा, नदी, पोखरा, कुआँ, पहाड़ कूल्हि में देवता का दरसन कइनी जा। ई हमनी के परम्परा रहे कि जे भी दिहल धरती, आकास, सुरुज-चान सबका प्रति कृतज्ञ भाव से हमनी का माथा नववनी जा। हवा, पानी, अग्नि सबका आगा। अब त स्वार्थपूर भइला पर 'थैंक्यू' बा, बलुक जवना सीढ़ी से लोग चढ़त बा ओके काटि के फेंक

देत बा। अराजनीति, अनास्था से भरल एह 'आधुनिकता' में संस्कृति क शहरीकरन हो रहल बा।

हमके स्वामी विवेकानन्द जी के भाषण क कुछ लाइन इयाद आ रहल बा, "प्रत्येक जन को अपना पथ वरण करना होगा और प्रत्येक राष्ट्र को भी हम वह युगों पूर्व वरण कर चुके हैं और वह है अनित्य आत्मा में आस्था का पथ... है कोई ऐसा जो इससे विचलित हो सकता है? अपना स्वभाव तुम कैसे छोड़ दोगे?" आस्था के अँजोर से आलोकित ऊ सोभाव त कहिये से बदलल जा रहल बा। हँ, अब्बो गाँव आ गँवई माहौल के ढेर लोगन में ई दिया के टेम लेखा जरत बा, चेहरा प क्रांति लेखा चमकत बा, आँखि में करुणा आ दया बन के लहराता। ई बात दोसर बा कि शहर गाँव के गरसत आ भकोसत चलल जा ताड़न स। गँवई आदर्श का मूल्य खत्म होत जा ताड़न स। बाकी 'गँवईपन' का नाश का साथे साथ शहरनों क नाश साफे लउक रहल बा। शहर अब कचरा क ढेर बनल जा ताड़न स। उहाँ रोशनी त बा बाकी साफ हवा नइखे, आदमी बा आदमीयत नइखे।

सहकारिता आ सहअस्तित्व के मूल भावना जवन 'जीयऽ आ जीए दऽ' क सनेस देत रहे, ओपर अतना बज्जरपात भइल बा कि आपुसी भाईचारा आ सोभाविक सहजोग क प्रवृत्ति लुप्त हो रहलि बा। हमनी के संस्कृति में ऊहे बेवस्था नीमन मानल गइल जवना में बाघ बकरी एक्के घाट प पानी पिए। पहिले क जमीदारी लेखा अजुवो हर चीझु प इजारेदारी आ गुंडई बा। हल्ला बोल के कब्जा करे वाला जबाना बा। नई शैली के ई सहकारिता आगा कवन गुल खिलाई राम जानसु! कहाता कि घाट हमार ह! जमीन हमार ह! आ हवा अब कोटा का मोताबिक मिली। कहात त ईहो बा कि नोकरिये नियर एहू क आरक्षण होखे के चाहीं।

पहिले क लोग फेंड़ लगावे, कुआँ आ पोखरा खोनवावे। ऊ बड़े-बड़े बगइचा आ जलाशय ओ लोग का 'निज' के ना, बलुक 'लोक' के कामे आवे। हमनी का गँवई इलाका आ सरेह में अइसन कतने उजड़त बाग आ कुआँ पोखरा मिल जइहें स, जवन केहु का पुरखन का नाँव से पुकारल जालन स, बाकी सभका कामे आवत बाड़न स। ई बात दोसर बा कि शहरी मानसिकता आ गँवई राजनीति ओहू के नाँव निशान मिटावे प आमादा बिया। अब बड़-छोट मकान आ फैक्टरियन के नीचे इन्हनी क ध्वंस अवशेषो ना मिली। भौतिक उन्नति का होड़ में बहुत कुछ निम्मन बाउर बिला जाई। 'निजीपन', 'परायापन' के नया दर्शन में घुटन, कुण्ठा, शंका, भय आ संत्रासे नु बा। ई कूल्हि हमनी का अस्तित्व खातिर मारके आ विध्वंसक बा।

सुख का पाछा जारी एह खुदगरज अन्हर-दउड़ में जे जतना तेज दउरत बा, ऊ ओतने असंतुष्ट, लुलुवाइल आ दुखी-परेशान बा। ई दउड़ हमनी के तिरपित आ संतुष्ट करे का बजाय अउर भूखा-पियासा बना रहलि बा। भूख खाली पेट क रहित आ पियास खाली कंठ क, त बुताइयो जाइत। केहू 'ना' मिलला से दुखी बा त केहू 'ढेर ना' मिलला से। केहू ढेर पाइयो के दुखी बा कि ऊ उपभोग नइखे क पावत। एतना दउर-धूप, मारामारी से जवन जुटवलस-सजवलस ओके दोसरका देख के जरत-बुताता- नोकसान पहुँचावे में लागल बा- हड़पे के जोजना बना रहल बा। ई असंतोष, अतृप्ति, जलन-कुढ़न आखिर केने से भाईचारा आ सहअस्तित्व पैदा करी? समरसता आ समंजस बइठावे खातिर सोचे क जहमत के उठाई? जवन दोसरा के मिले वाला बा, केहू तरे ऊ ओकरे के मिल जाय, इहे परम उद्देश्य बा। हम ई नइखीं कहत कि ई अन्हर-दउड़ खाली शहरे में बा, गाँव में नइखे। शहर में अपना जियका खातिर रहे वाला ढेर लोग अइसन मिलिहें, जिनकर 'गँवईपन' नइखे गइल, प्रकृति से लगाव नइखे छूटल, आस्था के दिया उनका मन आत्मा में जरत बा। एह लोग में भौतिक समृद्धि नइखे बाकी थोर बहुत मानवता बा- अपना धरती, हवा-पानी आ संस्कृति के ऊ ओतना ओछ नइखे बूझत।

रोसनी आदमी खातिर जरूरी बा। बाकी इहो तीन किसिम के बा, एगो सुरुज क, एगो बनावटी भा बिजुली के आ एगो ज्ञान क रोसनी। आजु बनावटी भा बिजुली के रोसनी क महत्व बाकी दूनों से बेसी बढ़ि गइल बा। ए रोसनी पर हक जमावे आ ओमे चमके खातिर लोग का-का नइखे करत? 'हाईलाइट' 'करे' आ 'करावे' का पाछा क रहस भेद विचित्र बा। एह रोसनी के इजारेदार आ ठीकेदार केहू पर थोरिकी सा रोसनी डाले क कवन कीमत वसूलेलन स? आ ई कीमत चुकावे वाला के का-का चलि जाला, खुद ओकरे ना पता चले। केहू मंच, केहू अखबार, केहू टी०वी० में चमके खातिर बेचैन बा। ऊ ई नइखे सोचत कि जे अपना प्रकाश, अपना तेज से ना चमकी ऊ दुसरा के का चमकाई? सुरुज खुद चमकेला। ऊ लेबे का कामना से ना चमके। ऊ खाली देला। एही से ऊ एह कूल्हि इजारेदारन आ ठीकेदारन से

महान बा। अइसन दाता का प्रति कृतज्ञता जतवला में कइसन शरम? अन्न, वस्त्र, छाँह, छाजन देबे वाली धरती हमनी क माई ह त ओकरा प्रति मातृ-भाव ले अइला में कइसन हेठी?

खाली लूटे आ भोगे क चाह हमनी का संवेदन-शक्ति आ ग्रहण करे के सहज शक्ति के खतम क दिहलस। प्रेम आस्था आ विश्वास का कारन हमनी का प्रकृति से जोराइल बन्हाइल रहनी जा। एही से ओकर पालन पोषन, आ सिंगार-पूजा करीं जा- ओकरा बिराटता का आगा मूड़ी नवाईं जा- उत्सव जलसा कइ के ओकरा में रमीं जा आ नया जीवनी शक्ति पाईं जा। सांसारिक तनाव, दुख आ भौतिक चिन्ता से लड़े आ जूझे क शक्ति। प्रकृति से सीखल सहजता छोड़ दिहला का कारन बनावटीपन जेयादा आ गइल आ हमनी का असहज आ अहथिर हो गइनी जा- निराश आ कुण्ठित। इहे हमनी का भौतिक भटकाव के चरम परिणति ह। मशीन से खेलत-जूझत कम्प्यूटर से आँकड़ा जोरत, 'क्वालिटी' आ 'क्वान्टिटी' देखत अदमियो मशीन हो गइल, ऊ अपने रचल भौतिक मायाजाल आ ग्लैमर में हेरा गइल।

एह असहजता के कम करे खातिर अमरीका वाला ढंग से- 'नेचुरल' आ 'हर्बल' क जरूरत एहू जा बड़बड़वा लोग महसूस कर रहल बा। तुर्रा ई कि ऊहो खाली उपभोगे का भावना से। हम जवना सहजता क बात करत बानी ऊ उपभोग का अलावा, सोभाव आ गुन-धरम का साथ बा। जवन लोग धरती के बेटा बा आ जे अभिन मन के मशीनी नइखे बनवले, जेकरा भीतर भाव आ आस्था बा, ऊ बेरि-बेरि दुःख तकलीफ उठवलो का बाद, टूटल नइखे। अवसाद आ पीरा का बादो ओकरा भीतर आसा के जोति जल रहलि बिया। ईहे आशा ओकर जिजीविषा-जीवनी शक्ति बा। रूख-सूख खाइ के ऊ अपना भीतर तृप्ती क अनुभव करत बा। छोट-छोट त्योहार आ उत्सव ओके उल्लसित कर जालन स। आधुनिक साजसज्जा वाला भौतिकवादी लोग के ओइसन आत्मिक सुख ना भेंटाई।

हवा, चाननी, बरखा के अपनापन भरल छुवन ओकरे के गुदगुदाई, सुहुराई, जे आन्ही, ओला, घाम लूह के थपरा खइले होखे। फेंड़ क छाह ओके कइसे सीतल लागी जे खर दुपहरिया भा घाम से नइखे लवटल। सूखल रोटी आ गुड़ का संगे पानी क मिठास आ तरावट क अनुभूति ओके कइसे हो सकेला, जे अपना चारु ओर 'कंडीशन्ड' माहौल बना लेले बा। हवा-पानी का गुन धरम के बान्हे-छान्हे आ कैद करे वाला लोग के 'असली' चीझु क आत्मिक सुख कइसे भेंटाई? बिजुली आ तेल वाली मीटर, जनरेटर ओह लोग के 'नेचुरल' सेवा भलहीं करत होखे बाकी प्रकृति क सहजता से ऊ लोग कोसन दूर बा। ओ लोग का संवेदना में नीरसता बा, जवन तर करे आ शीतल करे का बजाय अउर सुखावत बिया- परजीवी आ असहाय बनावत बिया। 'नया' आ सुखकर का जवना चाह में ऊ लोग ई तामझाम, सरजाम बटोरले बा ऊ ओह लोग के आपन असरइत आ गुलाम बनवले जाता- संवेदनशून्य एगो भौतिक इकाई। बिजुली गोल, जनरेटर चालू, जनरेटर बंद तब का?

संस्कृति क जवन विरासत हमनी के मिलल बा, ओमे बहुत कुछ अइसन बा, जवना के ना रहले हमनी का अधूरा आ विकलांग बानी जा। प्रकृति हमनी का सांस्कृतिक परम्परा क अनमोल निधि बा- ओकरा छतरछांह में हमनी का एकांत साधना, सिरजन आ सामूहिक नाच-गान कूल्हि कइले बानी जा। सहजता आ समरसता के सूतन के खोजत बा, अगर हमनी का तनिको गम्भीर होके सोचीं जा त प्रकृति आ ओकर सउँसे बनस्पति-संसार हमनी के न्यौतत मिली कि आवऽ! अपना सउँसे चिन्ता-फिकिर तनाव आ संकटन के ढकेलत, हमरा लग्गे चलि आवऽ! हम हमेशा तहन लोग के कुछ-न-कुछ पा दिहले बानी। तूँ आवऽ! आ देखऽ कि तू हमरा से का-का पा सकेलऽ? निश्छल होके, पूरा आस्था आ विश्वास के साथ आवऽ! धनी-गरीब, ऊँच-नीच, जाति-वर्ग के आत्मा लेके ना, सिरिफ मनुष्य के आत्मा लेके। खाली हमके दूहे-गारे ना, हमरा से सिखहूं खातिर आवऽ। हमके छोड़ के तहार ई दुर्दशा भइल, हमके उजारि के तहार सन्तति सुखी कइसे रहिहें?

पुनः प्रकाशन - 'पाती', अंक 16–17, जून 1996

अशोक द्विवेदी

('कविता' के संपादक, वरिष्ठ कवि जगन्नाथ जे पछिला चार-पाँच दशक से भोजपुरी-कविता के नया पाँख, नया उड़ान देबे में अजुओ लागल बाड़न)

गजल

जगन्नाथ

(एक)

उनका नजरी प हम त चढ़लीं हँऽ।
रउरा नजरी से हम उतरलीं हँऽ।

खुद के नीके तरे निहरलीं हँऽ।
भीतरे-भीतरे दरकलीं हँऽ।

लुत्फ मर-मर के रोज जीए में
हमहूँ पवली हँ, तब परिकलीं हँऽ।

मरहीं खातिर नू जी रहल बानी
जियहीं खातिर त अबले मरलीं हँऽ

बात भीतर के नू कहे के रहे
एही गराने गजल ई कइलीं हँऽ।

(दू)

रात कहँवाँ कटी, कतहूँ ना बसेरा बाटे।
ई त चिरइन के संगे रोज के फेरा बाटे।

दोसरा के ऊ फँसावे के हाल का जानो
उनका बंसी के बनल खुदहीं ऊ चेरा बाटे।

आचरण लोग के सुधरे, बा जरूरत एकर,
खुद के समुझे के, गुने के इहे बेरा बाटे।

बढ़ ना पावत बा उजाला त तनिकियो आगे
का पता, कवना किसिम के इहाँ घेरा बाटे।

भीड़ बहुते बा, चलल राह में मुश्किल, तेवर
डेगे-डेगे प लुटेरन के त डेरा बाटे।

रात के नीन ना टूटल, अबो ले सूतलि बा
फेर में भारी परल आज सबेरा बाटे।

(तीन)

सवाल पर सवाल बा।
जबाब के अकाल बा।

गटक गइल अँजोर सब
अन्हार के कमाल बा।

बा आदमी बुला मिलल
मचल बड़ा बवाल बा।

कहीं सम्हर के, जे कहीं
हवो बनल दलाल बा।

उतर सकल ना ढंग से
गजल, इहे मलाल बा।

(चार)

नेकदिल बथरिया बा।
जर रहल दियरिया बा।

उनको लाज लागेला
बात ई भितरिया बा।

रूप बाटे सोनहुला
दिल, मगर, पितरिया बा।

बा नजर भले रउवा
पास ना नजरिया बा।

जिन्दगी कटी कइसे
शायरी ही जरिया बा।

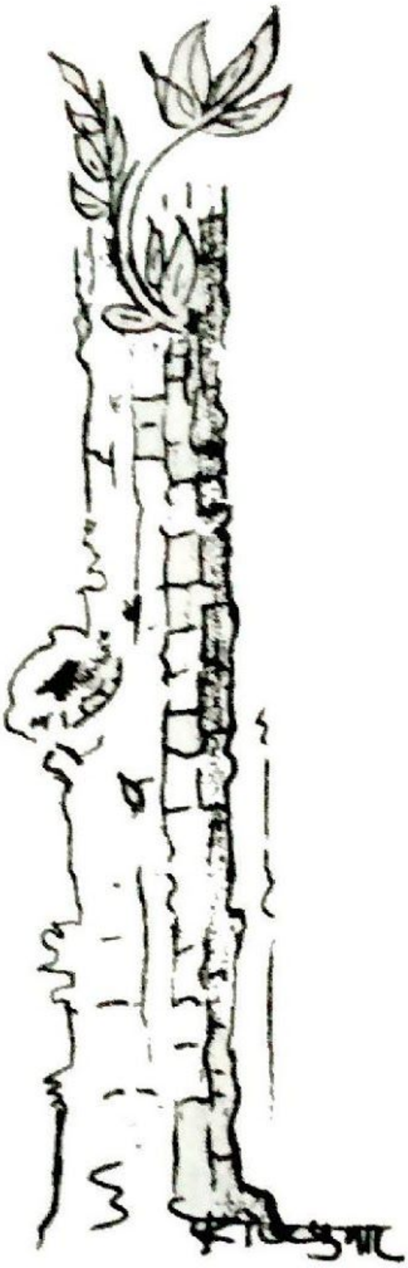

मुक्तक/चौपदा

नफरत के तेज आग बुताईं केहू तरे
मिल्लत के भाव सबमें जगाईं केहू तरे
अवतार बा धरे के, अगर, फेरू से इहाँ
भगवान एह मुलुक के बचाईं केहू तरे। १।

दोस्ती के बात छोड़ीं, रिश्तन के बात छोड़ीं
उनका से बैर के आ अनबन के बात छोड़ीं
संबंध के समुन्दर जब बे लहर भइल बा
गैरन के बात छोड़ीं, अपनन के बात छोड़ीं। २।

जमल बाजार बा मजिगर, शराफत कीन लीं ना कुछ
बहुत सस्ता मिलत बाटे, दिआनत कीन लीं ना कुछ
देखावे के भी खातिर तऽ कबो दरकार पड जाई
जो होखे पास ना रउरा, लियाकत कीन लीं ना कुछ। ३।

हर डेग पर हर मार्ग में अवरोध बेपरमान
मनलीं कि जी लीहल उहाँ तनिको न बा आसान
तब का करब, बइठल रहब एही तरे निरूपाय ?
का जिन्दगी के अर्थ आ अतने इहे अभिप्राय ?। ४।

चल रहल बा दौर हिंसा, लूट, अत्याचार के इहवाँ निरन्तर
लोग दहशत से भरल बा, वक्त करवट ले रहल बाटे भयंकर
का पता, कब आदमी का, आदमी से भेंट हो जा, डर बनल बा
खौफ मन में बा हमेशा, मौत के तलवार माथा पर तनल बा। ५। ••

❑ ए-21, साधनापुरी, गर्दनीबाग, पटना-800001

गीत

इंद्रकुमार दीक्षित

बदरा कांहें नाहीं मानेलऽ हमार कहना
मोर पानी बिनु तरसे दुआर अँगना।।

बहे पुरुवा झँकोरी, डेरवावेले निगोड़ी
कब्बो तड़केले बिजुरी गिरावेले बड़ेरी।
नाहीं पुरवेलऽ अचिको हमार मँगना।।
मोर पानी बिनु-----------।

कब्बो करें घेरा-घेरी कब्बो अंखिया तरेरी
कब्बो आइके सिवनवाँ ले काटि लेलऽ डोरी
तोर रहिया निहारेला उदास कँगना ।।
मोर पानी बिनु------------।

कहीं खेत ना जोताई कहीं बीया डाँड़ जाई
जो ना भरब सरेहिया त धान ना रोपाई
काहें 'अदरा में भदरा' करेलऽ गनना ।।
मोर पानी बिनु-----------।

जो ना ओरी तर अइबऽ, आके मेह ना गिरइबऽ
अपनी चिरई-चुरुंग के तूँ कइसे के जिअइबऽ
साँच कहतानी सगरो बिकाई गहना।।
मोर पानी बिनु--------------। ●●

5/45, मुसिफ कालोनी,
रामनाथ देवरिया (उ.प्र.) 274001

डॉ0 हरेश्वर राय के दू गो कविता

(एक) अब सहात नइखे

हमरा का हो गइल बा बुझात नइखे
हीत मीत गीत कुछुओ सोहात नइखे।

हम त दउरत रहीला फिफिहिया बनल
हमरा जतरा के रहियो ओरात नइखे।

हमके एक एक मिनटो पहाड़ लागेला
हाय! रात रछछिनिया सेरात नइखे।

मोहें बिस्तर प लागे कवाछ बिछल बा
अब तऽ करवट के बदलल रोकात नइखे।

दिल में अतना दरद बा जे का हम कहीं
कवनों बैदा बोला दीं, सहात नइखे।

(दू) नया नगर बसाईं जा

उ घर, घर ना हऽ जवना प कवनों छानी ना होखे
उ नैन कइसन, जवना में कवनों पानी ना होखे।

दाम्पत्य के देवाला निकले में इचको देर ना लागे
त्याग-समर्पन के राही जदि दुनों परानी ना होखे।

दिल के अइसन सिंघासन के का मतलब हरेश्वर
जवना प बइठल कवनों रानी-महरानी ना होखे।

ओह जिनिगिया के कीमत दू कौड़ी के रहि जाला
जवना में चानी काटे के कवनों कहानी ना होखे।

अब चलीं सभे चलीं जा एगो नया नगर बसाईं जा
जहाँ खाली प्यारे-मोहब्बत होखे, शैतानी ना होखे। ●●

बी-३७, सिटी होम्स कालोनी, जवाहरनगर सतना, म.प्र.,

छव गो गजल

शशि प्रेमदेव

(एक)
तिक्खर बाटे घाम.... जुड़ा लऽ : हरियर हो जइबऽ
सिहराइल बाड़ऽ, सुहुता लऽ : हरियर हो जइबऽ

कबसे बा तिकवत कनखी से तहके नेह-नदी
जा, पँवरे कऽ साध बुता लऽ : हरियर हो जइबऽ?

ऊ नइखे तऽ का, ओकर तकिया तऽ बा सोझा
ओही के छू लऽ, सुहरा लऽ : हरियर हो जइबऽ?

एह पिअरी के बा इलाज इहे कि सावन में
लँगटे, लरिकन संगे, नहा लऽ : हरियर हो जइबऽ?

संघतिआ नइखे कोई तऽ चिरई, फेंड़, नदी....
केहू से दुख-सुख बतिया लऽ : हरियर हो जइबऽ

मानऽ बात 'शशी', अगहन के कसहूँ फुसिला के
जा, सरिसों से गाल सटा लऽ : हरियर हो जइबऽ।

(दू)
इहाँ रोज सीता-हरण हो रहल बा!
कहाँ कवनो रावण से रण हो रहल बा?

लिखल बा जवन ग्रंथ में, ठीक ओकरा-
उलट आजकल आचरण हो रहल बा!

धँसल देखि दलदल में भाई के अपना
मगन कलजुगी लक्ष्मण हो रहल बा!

घटत जात बा रोज रकबा 'विजन' कऽ
दुखी रोज पर्यावरण हो रहल बा!

रहे पुलु बनावे क' वादा... मगर अब
नदी के सुखावे क' प्रण हो रहल बा!

एही आस पऽ जी रहल बा सुदामा
कि अब कृष्ण कऽ अवतरण हो रहल बा!

धरा कऽ, 'शशी', लूटि के रंग-रौनक
नक्षत्रन् प' अब आक्रमण हो रहल बा!

(तीन)
राजा 'ताजमहल' बनवाई!
कारीगर कऽ हाथ कटाई!

अबरा भर-दिन गाइ चराई
जबरा चाभी-दूध-मलाई!

छेनी तऽ सबका पाले बा
सब दशरथ माँझी बनू जाई?

फेरु फरल बा झोंपे-झोंपे....
फेरु बेचारा ढेला खाई!

हमहन के जे चली सुधारे
आपन कुरसी आप गँवाई!

सबले बड़ झंझट तऽ ई बा-
के अब माई के टहराई?

(चार)
जीतल त- बा चुनाव लवण्डा अहीर कऽ!
धरती प' नइखे गोड़ 'मुहम्मद बशीर' कऽ!

भागब ना हम डेराइ के, पण्डन के गाँव से
बाँचल बा जबले खून में, तेवर 'कबीर' कऽ!

साधू-समान हंस के रहिलो मुहाल बा
कउवा उड़ा रहल बा- पकौड़ा पनीर कऽ!

होखो उ' शाहखर्च कि कंजूस, ए गुरू
केहुए क' ना भइल इ खजाना, शरीर कऽ!

असवों, डरे समाज के, फगुआ गुजर गइल
खलिसा लगा के गाल प' टीका-अबीर कऽ!

दौलत जो रातो-रात बिटोरे क' चाह बा
धइ दऽ, 'शशी', उतारि के कंठी-जमीर कऽ!

(पाँच)
शोर, लंका-दहन कऽ मचावल गइल!
घर विभीषण क' लेकिन जरावल गइल!

आदमी के जनावर बनावे बदे
लग रहल बा, पढ़ावल-लिखावल गइल!

के बताई-कपट से कि हथियार से
के तरे कौरवन के हरावल गइल!

का पता ऊ सियारन के उत्पात से
भेंड़ियन के पहरुआ बनावल गइल!

का पता ऊ रहल 'इंदिरा' कि 'लता'...
कोख में राति जे के मुवावल गइल!

जब तमाचा लगावल जरूरी रहे
गाल, कश्मीर कऽ थप-थपावल गइल!

बीखि एतनो प' अमृत भइल ना 'शशी'
साँप के दूध रोजे पियावल गइल!

(छह)
हरेक साल भलहीं खेदइहें दलिद्दर!
लवटि के एही ठाँव अइहें दलिद्दर!

गरीबन प' करिहें जुलुम रोज, बाकिर-
अमीरन का पँजरी ना जइहें दलिद्दर!

बुझाता जे हमनी का छाती प' असहीं
बइठि के करेजा जुड़इहें दलिद्दर!

हवा हो गइल ऊ हुकूमत क' दावा
कि आगी में जिअते फुँकइहें दलिद्दर!

इहे सोचि जाँगर ठेठावत रहीं हम-
कबो तऽ जला के परइहें दलिदद्दर!

निकल जाव भलहीं 'शशी' कऽ दिवाला
दिवाली हचकि के मनइहें दलिद्दर! ●●

❑ प्रवक्ता (अंग्रेजी), कुंवर सिंह इ० का० बलिया

विसंगति गीत

✍ हीरालाल 'हीरा'

कइ-कइ महिनवाँ के बन्हले बाड़ऽ पारी
बोलऽ आजु जाईं बबुआ, केकरी दुआरी।

खुनवा-पसिनवा से सींचि गिरहतिया
बन्हलें उमेदि कबो, जागी किसमतिया
एही में नचवलऽ तूँ बनि के मदारी।

टुकी-टुकी बँटलऽ तूँ हमरे कमाई।
एक घरे बाप कइलऽ, दुजा घर माई
बँटलऽ समान नियर, बाप-महतारी।

होते अँखफोर लागल तोहरा के हावा
पछवाँ से मेहरी के मिलल बढ़ावा।
घर ना बनाई, ऊ लगाई लुतुकारी।

एके गिरहतिया के, तीनि टुक कइलऽ
बाँटि-चुटि घरवा के, आजु उतरइलऽ
गलती तोहार, तहार लइके सुधारी! ●●

❑ बुल्लापुर, बलिया, उ०प्र०

शिर्वाचन के महीना

सावन आ गइल !

श्रीमती प्रेमशीला शुक्ल

भीड़ भरल बाजार में अकेले चलल जात रहनीं कि पीछे से सुने के मिलल –'सावन आ गइल।' हमरा मुँह से अचक्के निकरल – ''कहवाँ ? ना बरखा, ना बदरी, ना झुलुहा ना कजरी, सावन कहवाँ आइल बा?'' हमरा बात के, जवाब के दीहित ? अकेले रहनीं। पीछे मुड़ के देखनी – दू गो सखी आपुस में बतिआवत जात रहे लोग। दुसरकी सखी कहलीं – हँ, पूरा बाजार गेरूआ रंग – के कपड़न से आ काँवर से भरल बा।'' हमहूँ नजर उठा के देखनीं – बाजार त जइसे गेरूआ रंग में रँगाइ गइल होखे, नया–नया फैशन के कपड़ा बाकी रंग गेरूआ। कबीर दास रहितन त का कहितन ? अब त जोगिए ना, जमात के जमात आपन कपड़ा रंगा लेले बा। सावनो आपन हरिअरी छोड़ि के भक्ति में गेरूवाइ गइल बा।

जब सावन हरिअर रहे, बेटी–बहिन सावन में नइहरे बोलावल जायँ। सावन बिटियन के महीना रहे। अब न बिटियन के फुरसत बा न नइहरे का सँवस कि बिटिया नइहरे आवे आ उनुके अइले से घर–त–घर बाग–बगइचा तक गुलजार हो जाए। हमरी स्मृति में कई दृश्य बारी–बारी से आवता आ मन के आकुल – व्याकुल करत जाता।

हम देखतानी, बगइचा में ढेर आम निझरि गइल बाड़ें सऽ। अइसने आम के पेड़ देखिके झुलुहा पड़ी। भाई लोगन का सामने हाथ–गोड़ जोरल जाता, तनी झुलुहा डाल दऽ आ अब झुलुहा पर दू जनी बइठल, दू जनी ठाढ़, पेंड़ा जा रहल बा – ऊपर–ऊपर, उहवाँ कोइलरि कुहुकत बा, इहवाँ कजरी होत बा–

''भइया मोरे अइले अनवइया हो, सवनवाँ में ना जइबों ननदी।''

''हुँह, बाड़ी नइहर में आ ''ना जइबों ननदी।''

अगिले साल खातिर, अगले साल खातिर।''

–कजरी में व्यवधान पड़ता।

एगो तरन्नुम वाली समवेत हँसी– हा–हा–हा....

जइसे कजरी के साज मिल गइल होखे।

बिटिया हँसि रहल बाड़ी। हँसि रहल बा गाँव के सीवान। हँसि रहल बा धरती–आसमान। हम देखतानी, नाग पंचमी से तिहुआर के सुरूआत हो गइल बा। एकरा तीसरा दिने सतमी के घर के पतोहि लोग मइया की पूजा में जुटल बा आ बेटी लोग महिआउर बनवला में । तिजहरिया के झुण्ड के झुण्ड सजल–धजल लड़की लोग थरिया में महिआउर लिहले खेत में माछी के खिआवे पहुंच गइल लोग। अनोखा नजारा। जहाँ तक नजर जाता सब ओर हरिअरी, किसिम–किसिम के हरिअरी। एक रंग के एतना 'शेड्स' आदमी का कल्पना का बाहर बा। अषाढ़ में लगावल रोपल धान, कोदो, साईं, मड़ुआ, बजरा, जोन्हरी जइसन फसल अपना बेंवत

मुताबिक उपरा गइल बाड़ी सऽ, कवनो एक फुट, कवनो आधा फुट, कवनो दू–अढ़ाई फुट तक पहुँच गइल बाड़ी स। सब आपन–आपन पतई ओढले–पहिरले ठाढ़ बा, सबके अलग–अलग रंगत, अलग–अलग गढ़न। छूए त केंहू रूखर, केहू चिक्कन। बेआर रहि–रहि के सबके गुदगुदा जाता। सब एक साथ हिलत–मिलत खिलखिला रहल बा कि अचानक सब ठमक जाता–के आइल?

हम ऊपर देखतानीं–आसमान में बादल के टुकड़ा तैरत आवऽता, छाँह करत आगे बढ़ि जाता। ऊपर बादल तैरऽता, नीचे छांह तैरऽता। कहीं छाँव कहीं धूप। नीला आसमान में सफेद बादल के टुकड़ा सुरूज भगवान के ढाँपे के कोसिस में बा। अद्भूत रंग संयोजन–नीला–सफेद ओपर सूरूज के किरिन आ बादल के बहुरंगी रूप! अद्भुत–अति अद्भुत। हे अदृश्य चित्रकार/ हम नतमस्तक बानीं।

नवचा–नवचा पतई पर माछी–कीरा ना लागे, ओमें छेद ना करे, एसे बिटिया लोग मेंड़े–मेंड़ घूम के गोहरावताड़ी– ''आवऽमाछी, खा महिआउर, जा अपना घरे। हमरा बाबा के बखरी भरे।''

सत्तिमी बीतल। अब सावन बिदा होई। पूरनवाँसी के पुरहर तिहवार मनावल जाई। भाई की कलाई पर राखी बन्हाई आ काली माई का यान्हे पनिदरकउवा होई।'' झिमिर–झिमिर बरखा हो रहल बा। लइकी लोग पोखरा पर जुटि गइल बा। आ अब पोखरा में से लोटा भर जल लेके काली माई का थान्हे वाली–नीब का जड़ पर ढरकाइ रहल बा। घर में जेतना सवाँग, ओतना लोटा जल ढरकावे के बा आ हर लोटा का साथे बाप–भाई के आसीर्वाद दीहल जाई– ''बाबा के आइ बढ़े, भइया के आयु बढ़े।''

ई ह ऽ बेटी के मान।

जब ले बेटी असीसी ना, नइहर में खुसहाली कइसे आई ?

बेटी असीसी त बखरी भरी। बेटी असीसी त आइ (आयु) बढ़ी।

सावन पवित्र उन्मुक्तता हऽ निरमल हँसी ह। जइसे नदी अपने उद्गम से निकल के पहाड़ी क्षेत्र में हँसत खिलखिलात आगे बढ़ेले, पहाड ओके रास्ता देला, तट के फेंड ओकर रक्षा करेले ओइसे लइकी-अपनी नइहर में विकास के असीम संभावना लिहले उन्मुक्त विचरण करेले, पिता ओके संरक्षण देले, भाई ओकर रक्षा करेलें। सावन नइहर हऽ पिता के, दुलार हऽ माई के, खोंइछा हऽ भाई के, नेह हऽ भउजी के, नेग हऽ आ नइहर का कुशल क्षण खातिर बेटी के प्रार्थना हऽ ओकर आशीर्वाद हऽ। मानतानीं महिआउर खिअवले माछी-कीरा ना भगिहें, पानी ढरकवले आयु ना बढ़ी। आज के वैज्ञानिक युग में ए सबके अंधविश्वास कहिके बड़ी आसानी से हँसि के खारिज क दिहल जाई बाकी एकरा पीछे जवन भाव बा, मंगल कामना बा ओकर स्थानापन्न का कुछ हो सकेला ? आजु काल्ह संवेदनहीनता जवने तरे महामारी अस फइल रहल बा, ओसे आदमी मुवत त नइखे बाकी मरणतुल्य जिनिगी जीए खातिर अभिशप्त बा। एतने नाहीं अगर लइकिन के पुत्री रूप आ भगिनीरूप में देखल जाइत त बलात्कार के घटना घटित ? अइसन अनेक सवाल हमरा मन में उठता आ हम ब्यग्र होके बाजार में इहाँ-उहाँ डोल रहल बानी। समाज में बहुत कुछ अइसन बा, जवन तर्क की कसौटी पर कस लना जा सकेला, बाकी ऊ बात जीवन में, समाज में उल्लास बा, संतुलन बा। ओपर हँसल त आसान बा बाकी ओकर विकल्प खोजल बहुत मुश्किल। ई सही बा कि समाज में बहुत कुछ अइसने बा जवन ना होखे के चाहीं, बाकी जवन कुछ होखे के चाहीं ओके तलाश के आज के बौद्धिक वर्ग, अइसन सामाजिक जीवन प्रणाली काहें नइखें खड़ा कर पावत जवन तर्कसम्मत आ रसपूरित दूनू होखे ? हँ, पच्छिम का नकल में अपनों समाज में किसिम-किसिम के 'डे' सेलिब्रेट कइल जाता, जवना का मूल में भावना से अधिक औपचारिकता रहेला। अइसन 'डे' नामक तिहुआरन में रस का ? रस के एक ठोप ना होला।

कब्बो–कब्बो एगो हवा चलेले आ ऊ अपना साथे कवनो खास देवी–देवता या ब्रत–उपवास के लेके आवेले। हमरा मन परत बा कुछ साल पहिले अइसने हवा में संतोषी माई आइल रहली। सायदे कवनो अइसन घर होखे, जहाँ ओ घरी इनकर पूजा ना होत होखे, सुक्क के ब्रत ना होत होखे। इहाँ तक कि ऊ खटाई का नाम पर लोग–बाग सुक्क के आँवरा, नीबू तक खाइल छोड़ देले रहे। आजु का जाने संतोषी माई कहाँ लुकाइल बाड़ी। बाजार में लहरत नारंगीनुमा जोगिआ रंग के देखिके हमरा मन में संतोषी माई वाला वाकया बेर–बेर उठ रहल बा। दस–पन्द्रह बरिस पहिले जोगिआ वस्त्र पहिनके गंगा जल शिव जी पर सावन में ढरले के एतना रिवाज ना रहे। आजु हालि ई बा रेलगाड़ी से लेके ठेलागाड़ी तक अइसन यात्री लोगन से मरल रहता। ये लोगन का भीड़ से गाड़ी के लेट भइल, दूसर यात्री लोगन के असुविधा भइल त आम बाति बा। त का ई कुल तमासा दस–पाँच बरिस के बा ? का भोला शिवजी, संतोषी माई अइसन कब्बो लुकाइ जइहें ?

भगवान शिव देवाधिदेव हवें अति पुरातनकाल से पृथ्वी के अधिसंख्य भाग में शिव के पूजा-अर्चना कवनो - न - कवनो रूप में होत रहल बा। वेद में राम-कृष्ण नइखे रूद्र बाडें। हालें में रोम में एगो २५०० वर्ष पुराण पुरातात्विक प्रमाण मिलल हऽ जवना में सोम अउर अग्नि का साथे रूद्र के उल्लेख बा। शिव मृत्यु के देवता मानल जाले आ जीवन बिना मृत्यु के समझले समझल जा सकेला का? जीवन के सत्य मृत्यु हऽ आ मृत्यु के सत्य जीवन। दूनूँ एक दूसरे के कारण आ सहयोगी हवें । जइसे अंधकार के बिना प्रकाश के ना जानल सकेला, अस्तित्व महसूस ना कइल जा सकेला, ओइसे बिना मृत्यु के महसूस कइले, जीवन के आनन्द ना लिहल जा सकेला। मृत्युबोध जीवन के उत्सव में बदल देला। शिव राग अउर विराग-दूनूँ में मगन रहे वाली मनः स्थिति के देवता हवें, दूनों के समाहित करेवाला देवता हवें। उनुकर समाधि जब टूटेले त कामदेव जरि के राख होइ जाले आ जब ऊ कोहबरे जाले त छः महीना तक निकसे के नाम ना लेलें। घरबारी एतना हवें कि जहाँ जइहें सपरिवार जइहें आ भँगेड़ी एतना कि काम–काज से कवनों मतलब ना। ऊ त माता अन्नपूर्णा अइसन पत्नी बाड़ी कि घर–परिवार सम्हरि जाला।

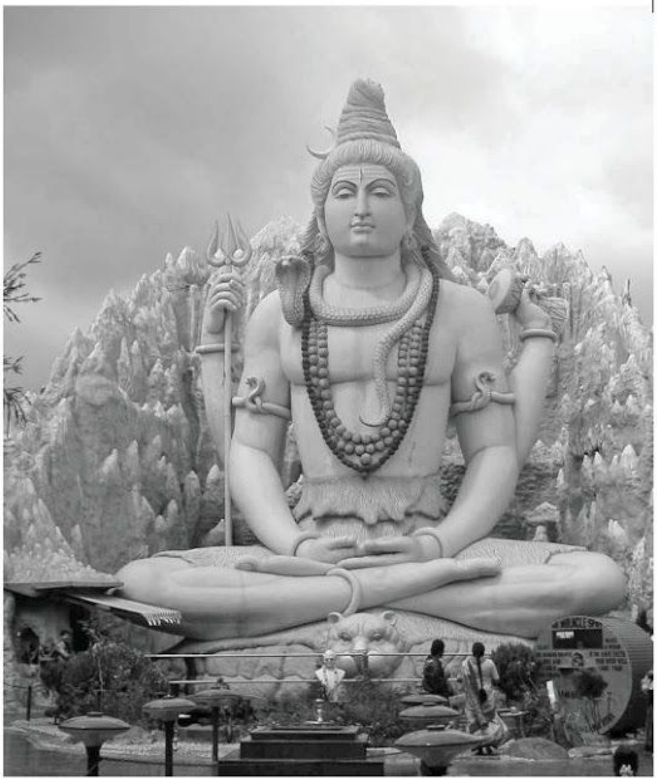

भीमाशंकर ज्योतिर्लिंग

भगवान शिव के ई गृहस्थ स्वरूप बाद में विकसित भइल। प्रारम्भ में तत्व वेत्ता लोग सृष्टि, जवना में जीवन अउर मृत्यु दुनूँ बा, का प्रतीक रूप में अरघा सहित शिव लिंग के ग्रहण कइल। एकर पूजा–अर्चना पश्चिमी एशिया समेत संपूर्ण भारतीय उपमहाद्वीप में होत रहे। आगे चलिके ई मूर्ति पूजा के आधार बनल। शिव जी का गंगा प्रिय हई एहसे गंगाजल से उनुका पूजन के विधान हऽ। समुद्रमंथन से निकलल विष के पिअला का बाद विष का प्रभाव के शान्ती करे बदे गंगाजल के महत्व अउर बढ़ गइल।

भारतीय लोक मानस शिवजी के सबसे ढेर सहज, सरल आ अपनइत देवता का रूप में मानेला। शिवजी आशुतोष हवें, अवढरदानी हवें। दूसर देवता बहुते नेम–धरम की बादो ना पसीजले आ शिवजी जब पारबती से रिसिअइलें त मनवले ना माने। कथा आवेले कि शिवजी से राम का स्वरूप का बारे में सुनला का बादो जब पारवती जी का परतीति ना भइल त सीता जी का वेष में राम जी का सम्मुख परीक्षा लिहला की नीयत से पहुँच गइली। राम जी देखते 'माता प्रणाम'। शिवजी कहाँ बानी'' कहि उठनी। अब त पार्वती जी के रकत सूखि गइल, शिवजी से का कहब–ई चिन्ता खाए लागल। कइसे शिवजी का सामने अइली। शिवजी त अन्तरजामी ठहरनीं, सब जानि गइल रहनी। शिवजी के कहनाम रहे–जवन शरीर सीता मां के रूप धइलस, ओ पत्नी से रिश्ता अब कइसन? पारबती जी केतनो

अननय–विनय करीं, शिवजी मनवले ना मानी। तब पारबती कठोर तपस्या कइली। अन्न त्याग दिहली, फल–मूल खाके रहली। फिर उहो त्याग के, पतई खाके रहली फिर उहो त्याग दिहली तब उनुकर नाम अपर्णा पड़ल। तब जाके शिव प्रसन्न भइले। लोक मान्यता का अनुसार ऊ समय सावन के रहे। मतलब, सावन मास में शिव–ढेर प्रसन्न मुद्रा में रहेलें। एह समय जे इनकर पूजा–अर्चना करेला ओ पर शिव कृपालु होलें। पार्वती का एही तपस्या का प्रतीक रूप में सावनी तीज आ भादो के हरितालिका तीज के व्रत स्त्री लोग अपना सुहाग खातिर करेली। हिमालय का पुत्री का रूप में जनम लेके पार्वती शिव के फिर से प्राप्त कइली।

मानल जाला कि बारह ज्योतिलिंगन में बैजनाथ धाम के ज्योतिलिंग मनोकामनापूर्ण करे वाला हऽ। माने इहाँ पूजा अर्चना कइला से आदमी के मनोकामना जल्दी पूरा हो जाला। आदमी के मनोकामनापूर्ति के भूखि बड़ी जबर्जस्त हऽ। एही भूख से ब्याकुल आदमी बैजनाथ धाम धावे लागल। सोना में सोहागा कि बैजनाथ धाम (देवघर) से 110 किमी0 का दूरी पर सुल्तानगंज में गंगा जी बहेली आ ऊ हो उत्तरवाहिनी होके। ई सुयोग काशी का अलावा अउर कहीं नइखे।

बैजनाथ धाम के महातम के एगो अउर कारन बतावल जाला। कहल जाला कि पिता का यज्ञ–कुंड में कूदि के जब सती प्रान त्याग दिहली त नन्दी उनुके लेके शिवजी के पास गइले। शिवजी विहल होके सती के शव लेके इहाँ–उहाँ धावे लगलें, एक–एक अंग जहाँ–तहाँ गिरत गइल। सब अंग गिरि गइल तब्बो शिवजी रूकला थमला के नाम ना लें। उनुके विकल–दसा देखि के सती प्रार्थना कइली कि हे शिव, शान्त होईं आ हमार दाहसंस्कार करीं। तब शिवजी दाहसंस्कार कइनीं। ऊ स्थान 'चिता भूमि' का रूप में देवघर से थोड़े दूर पर बा। नजदीके सती के चिताभूमि भइला का वजह से बैजनाथ धाम में शिवजी संतुष्ट आ प्रसन्न रहेनीं।

अलगे–अलगे के एतना प्रसंग जुड़ के ई परम्परा बनल होई कि सुल्तानगंज से जल उठाके सावन में जे बैजनाथ बाबा पर ढारी ओकर मनोकामना पूरा होई। जे कहीं ना रूकी, जल उठाके चलते रही जबतक पहुँच ना जाई चलते रही ऊ विशेष भक्त कहाई। फिर का ? भखउती के परंपरा बनल आ बढ़ते गइल, बढ़ते गइल। लोक का महातम से विधि–विधान में विस्तार भइल। गंगा जल का जगह कवनो नदी के जल भा कवनो जल हो गइल आ बैजनाथ धाम का जगह कवनो शिवाला हो गइल। त का परंपरा आ विधि–विधान का विस्तार से हम दुःखी बानी ? का हम लोक के महातम के नकार रहल बानी ? हमार मन अपने पर, क्षोभ आ ग्लानि से भरत जाता।

थोडी देर में क्षोभ आ ग्लानि के बदरी छँट गइल। दरअसल हमरा दुःख के कारन परंपरा के भेड़ियासान में बदलल बा। आजु ई जेतना रँगल–छुअल नारंगी भा जोगिया रंग के कपड़ा लत्ता लउकता ऊ भक्ति चाहे विराग के रंग ना हऽ फैसन के रंग ह। बाबा धाम, चाहे कवनो धाम जाए वाला लोग भक्ति भाव में कम प्रदर्शनभाव में ज्यादा बा। तमाम अनाप–सनाप बात ध रम आ भक्ति का आरी–पासी काई–सेवार अस लपेटा गइल बा। जरूरत बा एह सब के हटवला के, परंपरा का शोधन– परिष्कार के।

आकि अइसन कि ई सब भीड थोड़े दिन के चामक–चुमुक बा, ओइसे जइसे संतोषी माता के रहल ? असंभव। **शिव-पार्वती भारतीय संस्कृति का कण-कण में रचल-बसल बाड़े। अमरनाथ से लिहले रामेश्वर धाम तक शिव के जयकारा गूंजऽता। शिव आ ओंकार हवे। शिव समस्त ज्ञान-विज्ञान के आदि स्त्रोत हवें। पाणिनि से पहिले भगवान शिव का डमरू से माहेश्वर-सूत्र निकलल। पाणिनि एही के व्याख्या कइलें। शिव भक्ति में, दर्शन में, लोक में, शास्त्र में-सर्वत्र व्याप्त बाड़ें। शास्त्र कहेला कि शिव के डमरू, काल के प्रतीक हऽ। लोक कहेला कि ''डिम-डिम बाजेला डमरूआ शिवजी नाचे लगलें ना/डेरइलें, बिस्नु डेरइलें, डेरइलें तीनूँ लोक/सबसे बढ़ि के काल डेरइलें, उनुका धइलस सोच/ऊ त काँपे लगलें ना''।**

हम देखऽतानी– सावन सुदी पंचमी के घर–घर धाने के लावा भुँजाता। गाई के गोबर परोरल जाता। एसे घर गोंठाई, रसोई का दुआरी पर नाग–नागिन उरेहल जाई आ कटहर का पतई पर नाग–नागिन के दूध–लावा चढ़ावल जाई। आजु नागपंचमी हऽ। आजु से तिउहार के सुरूआत होता। पहिले नाग के पूजा, काल के पूजा, शिव का हार के पूजा, ए प्रार्थना का साथ कि ''नाग बाढ़े, नागिन बाढ़े, नाग के सातो पोआ बाढ़े, ताही पाछे हमहूँ बाढ़ी।''

शिव–पार्वती के प्रणाम। काल के प्रणाम। काल खातिर मंगलकामना–ए भाव का साथे सावन आ गइल!

••

❑ 302, ईशान होम्स, घूमा, अहमदाबाद-58

''भोजपुरी क भविष्य-पथ अँजोर से भरल बा''

आनंद सन्धिदूत

(बहुत विनम्र आ गंभीर मन - मिजाज क रचनाकार हईं आनंद संधिदूत जी। गहमर, गाजीपुर के सृजनात्मक माटी आ साहित्यिक पारिवारिक परिवेश क बड़हन भूमिका ह आपके निर्मिति में। आप पहिली कविता सन् १९६२ में लिखलीं बाकिर प्रतिबद्ध होके लिखे सन् १९६६ से शुरू कइलीं अउर आज ले अविराम-अथक सृजनरत हईं।

संधिदूत जी के कविता के सजावे-संवारे आ निखारे में आचार्य विश्वनाथ सिंह जी, पाण्डेय नर्मदेश्वर सहाय, पांडेय कपिल आ भोलानाथ गहमरी क योगदान रहल।

हिंदी-भोजपुरी दुनू भाषा में समान रूप से सृजनरत आपकऽ कई गो कृति भोजपुरी साहित्यिक-समाज में प्रसिद्धि पा चुकल हऽ। आप आलोचना अउर अनुवाद में भी गंभीर आ उल्लेखनीय कार्य कइले हईं।

भोजपुरी संधिदूत जी के आत्मा से जुड़ल हऽ एही से अपने अनुपम रूप, रंग, आ वैविध्य के संगे उनके कथन -कहन में प्रतिबिंबित होले।

जहाँ एक ओर उनकर सद्यः प्रकाशित कृति ''अग्निसम्भव'' उनके आध्यात्मिक रुझान आ गाँधीवाद के प्रति आस्था के दर्शावेले वहीं कुरल ''कवितावली'' आ ''संदेश रासक'' पुरातन के वैभव के नवीन दृष्टिकोण से देखे-जाने खातिर भोजपुरिया बौद्धिक समाज के प्रेरित करेले।

आनंद संधिदूत जी से भइल एह बातचीत में हमार ई कोशिश रहल ह कि उनके व्यक्तित्व आ कृतित्व के बारे में अधिक से अधिक चर्चा हो सके, बाकिर जेतना सम्भव भइल ऊ आपलोगन के समक्ष ह। हमके विश्वास हऽ कि भविष्य के भोजपुरी खातिर ई चर्चा उपयोगी रही----सुमन सिंह)

सुमन - आपके सृजनात्मक ऊर्जा के करजोर हमार प्रणाम। अपने सद्यः प्रकाशित दुनू पुस्तक (संदेश रासक अउर अग्निसम्भव) खातिर हमार विनम्र साधुवाद स्वीकारीं। आपके बहुत–बहुत बधाई।

सबसे पहिले त इहे जानल चाहब कि 'अग्निसम्भव' प्रबंध काव्य लिखे क विचार कइसे आइल? कवने प्रेरणा से प्रेरित एह ओरी चल अइलीं ?

आनंद संधिदूत जी - गाँधी जी पर कुछ लिखे का पहिले गाँधीवाद के गम्भीर अध्ययन के प्रेरणा हमके बैंक यूनियन में अपना सक्रियता से आइल निराशा से मिलल। बैंक यूनियन का अध्यक्ष आदि पदन पर हमार चयन निर्विरोध होत रहे, बाकिर हम यूनियन के कार्य प्रणाली से पूर्णतया सहमत ना रहलीं। हमार इच्छा यूनियन का कार्यविधि में प्रयोग के रहे लेकिन यूनियन के शीर्ष नेतृत्व सी. पी .आई के रहे जवन गाली–गलौज, मारपीट में विश्वास रखेवाला अधपढ़ आ अधगढ़ लोगन के महत्व देत रहे। ऊ बैंक का वर्तमान दुर्दशा का भावी आशंका से बेखबर रहे आ ओकरा पास बैंकन के सरकारी लूट से बचावे के कवनों ठोस कार्यक्रम ना रहे। अंत में हम

ओह से अलग होखे क फैसला लिहलीं आ मिर्जापुर में डंकीनगंज चौराहा पर बारह दिन गंगाजल पी के अनशन कइलीं आ अध्यक्ष पद से इस्तीफा दे दिहलीं। एकरा बाद हम आपन समय गाँधीवाद का अध्ययन आ लेखन में लगवलीं आ एकर परिणाम 'अग्नि सम्भव' का रूप में मिलल।

सुमन – 'अग्निसम्भव' के संगहीं आपके एगो किताब 'संदेश रासक' भी पढ़े के मिलल। आखिर ग्यारहवीं सदी के एह महत्वपूर्ण कवि 'अद्दहमाण' के काव्य में अइसन का पवलीं कि एके भोजपुरी में अनूदित करे क मन करे लगल, उहो बिरहा शैली में ?

आनंद संधिदूत जी – देखीं, 'संदेश रासक' आधुनिक भोजपुरी लोकसाहित्य का बहुत नजदीक लागल, इहे कारण रहे कि एके भोजपुरी में उतारे के हम साहस कइलीं। प्राकृत त हम जनबे ना करीं, अपभ्रंशों का व्याकरण से हम परिचित नइखीं जवन भावनुगायन भइल ऊ आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी जी का भूमिका आ डॉ. विश्वनाथ त्रिपाठी का हिंदी अनुवाद का सहारे भइल। 'रासक' के बिरहा के पूर्वज कहल जा सकेला, इहे सोच के हम देह (फॉर्म) बिरहा के रखलीं।

सुमन – हमहन के बचपन में सुनी जा कि गहमर नियन बड़का गाँव देस भर में ना हऽ। हमरे आजी क त कहनाम ई रहल कि आनो के मन्ने केहू ढूंढें जाईं त गहमर क बेटी लगभग हर-गाँव में बियहल मिल जइहन। ओही गहमर गाँव में आपके पैदाइश ह, कुछ बताईं अपने गाँव-समाज के बारे में। आपके बालमन के संवरे -गढ़े में का भूमिका निभवलस गाँव-जवार ?

आनंद संधिदूत जी – गहमर खातिर हमरा मन में उहे आदर बा जवन कवनों मुसलमान का मन में मक्का तीर्थ खातिर होला। हालांकि जीविका का अभाव में गहमर के हम स्थाई निवास ना बना सकलीं बाकिर हमार आत्मा गहमर पर ओइसहीं मँडरात रहेले जइसे चिल्होर बस्ती पर लपछियात गिरेले। गहमर का गणमान्य लोगन से हमार अबहियों संपर्क बा। हम एह माने में अपना के खुशकिस्मत मानीला कि हमके एह गाँव से हरेक समस्या पर सोचे के एगो नया आयाम मिलल, एगो नई दृष्टि मिलल। हमके कवनों विश्वविद्यालय में पढ़े के मौका ना मिलल बाकिर हम सगर्व कहीला हम गहमर इनवरसीटी के स्कॉलर हईं।

सुमन – कुछ लिखे -रचे क प्रेरणा कब आ केसे मिलल ?

आनंद संधिदूत जी – हमरा कविता के स्वर अक्सर सवेरे आ गद्य के लहर साँझ के विकसित होले। दिन भर जवन हम देखीला ऊ साँझ के डायरी में लिखे क कोशिश करीला, ऊ रात भर जुड़ा के कविता नियर टाँठ हो जाले। ओइसे हम नियमित ना लिखीं।

सुमन – अपने पिता जी क रचल कवनों नाटक के बारे में बतावल चाहब? ओकरे बारे में, जवने क चर्चा वर्तमान में कइल जरूरी होखे ?

आनंद संधिदूत जी – हमरा पिताजी (स्व0 प्रसिद्ध नारायण वर्मा) के कवनों रचना अब उपलब्ध नइखे। उनका मुँहे सुनले बानी कि कवनों जमाना में 'आर्य महिला' नाम के पत्रिका निकले ओम्मे उनकर रचना जब–तब छपे। लेकिन ऊ पत्रिका हम नइखीं देखले। हमके सन् 1955 से सन् 1966 तक उनके देखे के मौका मिलल जब ऊ कलकत्ता के नौकरी छोड़ के गहमर रहे लगलन। हम देखले बानी ऊ रात के बहुत देर तक लिखत रहसु आ सवेरे ओही लिखलका के जरा के चाय के पानी गरम करसु। उनकर लिखल एगो नाटक दर्प–खर्व बहुत दिन घरे रहल लेकिन जब गाँव के मकान गिरल त उहो नष्ट हो गइल ।

सुमन - अपने प्रेरक स्व. भोलानाथ गहमरी जी के बारे में कुछ बताईं ...कुछ अइसन संस्मरण साझा कइल चाहब जवने के बारे में हमहन क जानल जरूरी ह ?

आनंद संधिदूत जी - भोला भइया (स्व. भोलानाथ गहमरी) रिश्ता में हमार भाई रहलन बाकिर बेवहार में पिता का समान रहलन गीत–संगीत उनका प्राण का साथ एकाकार रहे। उनका गीतन में दर्द के सुरीलापन मिलल बा, जवन भोजपुरी में बेजोड़ बा। भोजपुरी में गीतन के तीन गो संग्रह उनकर छपल—'बयार पुरवइया', 'अँजुरी भर मोती' आ 'लोकरागिनी'। एह में अँजुरी भर मोती के उनकर मास्टरपीस कहि सकीला जवना के भूमिका फिराक गोरखपुरी जी लिखले बानी। हम देखले बानी कि इलाहाबाद से अक्सर ऊ साज–समान—स्टेज माइक, गायक, कलाकार लेके गहमर पहुँचसु आ हमार पिताजी, रामसूरत सिंह, राममूर्ति तिवारी, रामनारायण उपाध्याय आदि का साथ कवनो नाटक के मंचन गाँव में हो जाय भोजपुरी में अब एतना ललित कला का रस में रचल–बसल व्यक्तित्व दूसर नइखे।

सुमन - आपके लेखे 'सृजन' का ह ? कइसे परिभाषित करब ?

आनंद संधिदूत जी - हमार एगो मित्र रहलन स्व0 मुरलीधर सिंह 'अंश' जे कहसु कि ''हमार सृजन एगो कमजोर आदमी के मानसिक ऊर्जा विस्फोट ह।'' एह कथन में दम बा। हमरा समझ से कविता आंतरिक अनुभूतियन के एगो ढील–ढाल संगठन होले एकरा के बहुत बेरहमी से तर्क का कसौटी पर ना कसल जा सके। लेकिन गद्य का साथ ई बात नइखे। गद्य के तर्क संगत भइल आवश्यक बा अगर प्रकृति अनुमति दे तऽ सृजन से समाज के बदलल जा सकत ह। भा विघटित होत समाज के रोकल जा सकत बा। सृजन में आपन स्वामित्व आ स्थायित्व के लालसा समष्टि कल्याण से रोकेले। सृजन 'पुरी के समुद्र' के बालू के प्रतिदिन बनावल मूर्ति नियर होले जवन एगो पटनायक जी रोजे बनावेलन आ ऊ हवा आ पानी के लहर से बहि जात रहेले। तवनो पर न कलाकार मूर्ति बनावल छोड़ेला, न दर्शक देखल बंद करेलन।

सुमन - गद्य-पद्य में कवन विधा आपके आत्मा के अधिक निकट हऽ ?

आनंद संधिदूत जी - जब मन आत्मविश्वास से भरल रहेला त गद्य के सृजन नीक लगेला लेकिन एकरा विपरीत अगर आर्द्र रहेला त अदरा के बदरा नियर बरिस पड़ेला आ कविता के उरेह लउके लागेला।

सुमन - भोजपुरी के वर्तमान साहित्य-समाज पर कवनों टिप्पणी कइल चाहब ?

आनंद संधिदूत जी - भोजपुरी क भविष्य–पथ अँजोर से भरल बा। भोजपुरी में अनेक यशस्वी साहित्यकार बाड़न जे साहित्य के सेवा बहुत बढ़िया ढंग से कइ रहल बाड़न। रचनाकरन में अब रचना का प्रति जिम्मेदारी आ रहल बा, ई बढ़िया बात बा।

सुमन - अनुवाद कार्य के ओर कइसे अइनी ?

आनंद संधिदूत जी - मन में एगो ललक रहे कि भोजपुरी में अउर भाषा के नीक आ श्रेष्ठ साहित्य के परोसल जाय। एही सिलसिला में अंग्रेजी का तीन सौ पैसठ गो सूत्र (एफोरसिज्म) के अनुवाद कइलीं बाकिर ऊ छप ना पावल। लेकिन तमिल संत तिरुवल्लुवर का प्रसिद्ध पुस्तक 'कुरल' के भावानुवाद भोजपुरी में छपल जवना के बहुत प्रशंसा मिलल आ ओकर दुसरका संस्करण प्रेस में बा। सन्देश रासक भी एही ललक के परिणाम रहे।

सुमन - भोजपुरी के साथे-साथ आप हिंदी भाषा में भी समान रूप से सृजनरत हईं, आत्मतुष्टि आ प्रसिद्धि कवने भाषा में रच के मिलल ?

आनंद संधिदूत जी - हिंदी में हम बहुत कम लिखले बानीं, नहीं का बराबर। गीत त एहर चलिसन साल से नइखीं लिखले। कुछ मुक्त छंद के कविता आ दू–चार गो गजल एतने देखावे भर बा। भोजपुरी में प्रसिद्धि मिलो भा जिन मिलो लेकिन एतना त बा कि आत्मतुष्टि अनघा मिलल बा आ हम संतुष्ट बानी कि भोजपुरी जइसन मनगर आ सनगर भाषा में लिखलीं।

सुमन - भोजपुरी के आठवीं अनुसूची में सम्मिलित करे में होवे वाला विलम्ब आ अड़चन पर आपके का टिप्पणी ह ?

आनंद संधिदूत जी - राउर सवाल बहुत समयोचित बा। हमार व्यक्तिगत राय बा कि भोजपुरिहा समाज के

संविधान का आठवीं अनुसूची में शामिल होखे के आंदोलन ना करे के चाहीं। एकरा से भोजपुरी के बहुत नुकसान होई। कम से कम सद्साहित्य के रचना त एकदमे बंद हो जाई। खाली सरकार का इशारा पर प्रचार साहित्य के रचना होई। जइसे हिंदी आम जनता से कट गइल आ आजादी का बाद कवनों लेखन लोकप्रिय ना भइल उहे दशा भोजपुरियो क हो जाई। सबसे बड़ी बात ई बा कि ई माँग कुछ साहित्यकारन के माँग बा। साठ साल से ई माँग उठावल जा रहलि बा बाकिर जनता एसे जुड़ल नइखे।

सुमन - भोजपुरी के युवा-वर्ग से का अपेक्षा करीला ? उनके सहभागिता भा उदासीनता पर कुछ कहल चाहब ?

आनंद संधिदूत जी - भोजपुरिहा युवावर्ग के भविष्य बहुत उज्ज्वल बा। ऊ हरेक क्षेत्र में उन्नति कइ रहल बाड़न आ नाम–पइसा बटोर रहल बाड़न। जहाँ तक साहित्य क सवाल बा हम युवा वर्ग से अपेक्षा करब कि पुराना साहित्य जवन भोजपुरी के बा ओकरा अध्ययन पुनरोदय पर ध्यान दें ताकि आज के साहित्यकार जान सके कि अतीत में कहाँ तक काम भइल बा आ ओकरा आगे हमरा कहाँ से आरंभ करे के बा। एह काम के ना भइला से साहित्य खासकर के भोजपुरी के व्याकरण हर पीढ़ी ककहरा से शुरू करऽ तिया आ ओकर सर्वमान्य आधार नइखे बन पावत।

आज का संपादक लोग के ई दायित्व बा कि पुराना संपादक आ लेखक जइसे पांडेय नर्मदेश्वर सहाय, आचार्य विश्वनाथ सिंह, पं. हवलदार त्रिपाठी 'सहृदय', पं. गणेश चौबे आ पांडेय कपिल आदि का द्वारा व्याकरण क चर्चा भइल आ कुछ सर्वमान्य नियम के स्थापना भी भइल, ऊ नई पीढ़ी का कवि–लेखक के सोझा रखल जाय ताकि एके जगह घुमरी परउआ खेले का बजाय आगे गोड़ बढ़ावल जाय।

सुमन - आजकाल का व्यस्तता हऽ ?

आनंद संधिदूत - आगे प्रकृति जवन करे के अनुमति दे। फिलहाल एगो अइसन काव्य–संग्रह छपावल चाहत बानी जवना में हमार पसंद के हर विधा के कविता हो आ एगो गद्य संग्रह भी अइसने छपवावे के इच्छा बा। ••

❑ आनंद संधिदूत, पदारथ लाल की गली, वासलीगंज, मिर्जापुर, उत्तर प्रदेश

भाषा खातिर तमाशा

✍ **जयशंकर प्रसाद द्विवेदी**

इ भाषा बदे ही तमाशा चलत हौ
बिना बात के बेतहासा चलत हौ
इहाँ गोलबंदी, उहाँ गोलबंदी
बढ़न्ती कहाँ बा, इहाँ बाय मंदी ।

कटाता चिकोटी सहाता न बतिया
बतावा भला बा इ उजियार रतिया
कहाँ रीत बाँचल हँसी आ ठिठोली
इहो तीत बोली, उहो तीत बोली ।

मचल होड़ बाटे छुवे के किनारा
बचल बा इहाँ बस अरारे सहारा
बहत बा दुलाई सरत बा रजाई
न इनके रहाई, न उनके सहाई।

भगेलू क इहवाँ बनल गोल बाटे
सुमेरू क उहवाँ बनल गोल बाटे
दुनों के दुनों ना भगीरथ कहालें
सभहरे क दुख देख गंगा नहालें ।

घरे मे इहाँ पे उठल बाय हल्ला
इहाँ हउवन जूटल लखेरा निठल्ला
कबों बुनत बाना,कबों मार ताना
कहीं निगहबानी कहीं बा निशाना ।

करीं काम भाषा क होवे बड़ाई
शुरू होय जमके लिखाई पढ़ाई
इ भाषा बनै सिरजना के निशानी
सँवारे सही से सभे के जवानी । ••

❑ सी–39, सेक्टर–3, चिरंजीव बिहार,
गाजियाबाद (उ०प्र०)

अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन में दिहल गइल एगो पुरान भाषन

✍ डॉ0 विद्यानिवास मिश्र

हमरे खातिर ई एगो अजगुते ह। सम्मेलन के लोग कौने गुन पर रीझल आ कौने अवगुन पर रीझल, ई त उहे लोग जानेला। हम अपनी ओर से कहि सकीलाँ कि भोजपुरी में हम लगभग नाहिए का बराबर लिखले बानी। भोजपुरी के पसारा में जनम भइल, लालन पालन भइल, भोजपुरी के ऑचर में बहुत दुलार मिलल, प्यार मिलल, ई सब बात त ह, लेकिन आजु ले हम सिवा अपने निबन्धन में ओह धरती के कही–कही चोरा के चन्दन जइसे छिड़काव कइले हई। कुछ अउर कही त भोजपुरी साहित्य के छपववले में आ एह भाषा में प्रचार–प्रसार में कवनो उद्यम ना कइली। ब्रज मे रहली, ब्रजभाषा खातिर उतजोग कइली। भोजपुरी खातिर त एतने कइले होब कि सज्जी लोकभाषन के संग्रह तइयार करवली त भोजपुरी के श्रेय त मिलही के रहे, हमहूँ लिहली। एतनो पर अइसन ढूँढ़ली उ सम्मेलन के ई कहबे करब कि सम्मेलन के लोग रामजी के नीयर बा कि 'बिनु सेवा जु द्रवै दीन पर'। भोजपुरी सम्मेलन के जब हम पहिलका अध्यक्ष लोगन के अभिभाषण पढ़ली त मन में बड़ा भयो लागल, डरो लागल, मन में बड़ा संकोच लागल कि ओ पाँति में हम कइसे खड़ा होईं? स्वर्गीय पंडित हजारी प्रसाद द्विवेदी, स्व. पं. उदयनारायण तिवारी, डॉ. भगवत शरण उपाध्याय जइसन लोगन के साथे भाई देवेन्द्रनाथ शर्मा, गणेश चौबे जी, विवेकी राय जी, कृष्णदेव उपाध्याय, रामविचार पाण्डेय जइसन लोगन के साथे हमरो नॉव गिनती में आवे, एमें हम अपना के धन्य जरूर मानब, लेकिन ओ लायक अपना के समझब ना। काहे कि ई सब बड़ा तपस्या कइले बाड़न आ बड़े लगन से भोजपुरी के सेवा कइले बाड़न। एह लोगन के हमरे ऊपर बहुत परेम रहल बा, बहुत किरपा रहल बा, आ जे एह समय बा ओकर आजुओ किरपा बा। हम समझत हई कि ओह किरपे का बदौलत हम इहाँ खड़ा बाटी। त कुछ कहही के परी। कहे के लूर चाहे हो, चाहे ना।

राहुलजी के साथ हम काम कइली हिन्दी भाषा के कोश के ऊपर लेकिन जब केहू तीसर आदमी ना रहे त राहुलजी भोजपुरी में बतिआवें। जे केहू जानदार आदमी हमके मिलल, बड़गर आदमी मिलल ते भोजपुरिये में बात करें, चाहे स्वर्गीय राजेन्द्र बाबू होखें, चाहें पंडित हजारी प्रसाद द्विवेदी होखें, डॉ. उदयनारायण तिवारी होखें, डॉ. सच्चिदानन्द सिन्हा, जस्टिस हरिश्चन्द्र पति त्रिपाठी होखें, जस्टिस शंकरशरण होखें। ई सब आपस के बातचीत भोजपुरी में करें आ करे में गर्व क अनुभव करें। हमरे गुरुजन लोग कबो–कबो अनखाय जायँ आ कबो–कबो मजाक करें कि ई दूइ भोजपुरिया मिल गइलन त ई भुला जइहें दूसरो के बाति। अपने बोली खातिर एतना मोह–छोह कवनो दूसरी जगह मिलल नाही, एकर कारन का ह? जेतना हिन्दी साहित्य भोजपुरी बोलेवाला लोग लिखले बा हिन्दी भाषा आ हिन्दी भाषा के रूप जतना रचले बा ओतना दूसरे भाषा आ बोली के लोग नइखे कइले। तबो भोजपुरी बोलेवाला लोग भोजपुरी के ना छोड़ले बा, ना छोड़ी। एह समय सउँसे संसार में गनल जाय त बारह करोड़ के ऊपर लोग भोजपुरी बोलत होई। एतना में त जाने केतना देस के मनई

समा जइहें। भोजपुरी बोलेवाला आदमी देस–परदेस कही भी जाव, अपने सांस्कृतिक धरोहर के साथ जाला, अपने क्षेत्र के वाचिक साहित्य के, सुभाव के, चाल–ढाल के धरोहर अपने साथ रखेला, आ कवनो कीमत पर कवनो चमक–दमक में हेराला नाहीं। वेश–भूषा कवनो अपनावे, ओकर मन ओइसने बिहरत रहेला जइसे आवाँ में रखल बरतन। लोग एके समझेला कि ई त बितले क बिसूरल भइल। अइसन आदमी आगे कइसे जाई? ई ना सब समझेला कि जवन चीज आगे ले जाले ऊ ऊर्जा होले, भीतर के तेज होला, आ ऊ तेज एक मनई में ना होला। ऊ तेज सगरो जाति के होला, बल्कि ई कही कि सगरो महाजाति के होला। तेज ना रही त आदमी ना दूसरे के चलवले चली, ना अपने चली। भोजपुरी क्षेत्र के आदमी केतना आगे बढ़ि सकेला एकर सबूत चाहीं त इहे देखीं कि मारीशस, फिजी, ट्रिनीडाड, गयाना, बर्मा, थाइलैण्ड, सिंगापुर के दलदल आ जंगल के नन्दन बनावल भोजपुरिये लोग न,? किसानन–मजदूरन के आगे बढ़वले में के झंडा उठावल, भोजपुरिये जयप्रकाश बाबू, सहजानन्द सरस्वती, राहुल जी न?

जे ई समझेला कि भोजपुरी त गँवईपन क इजहार ह ओके ई जनावल चाहत बाटीं कि एक त जेके ऊ लोग गँवईपन कहेला उहे एह देस के सच्चाई ह आ दूसरे जेके लोग बड़ा सौखियाना कहेला ऊ ओकर पहिचान ह आ ई पहिचान जेतना भोजपुरी भाषा में मिली ओतना कही ना मिली। हम हिन्दी के शब्द–सम्पदा लिखत रहलीं त हर परिवेश के जतना शब्द जीवन्त रूप में भोजपुरी में प्रयुक्त मिललें ओतना दूसरे जगह ना मिलल। दूसरे जगह लोग नवगढ़ल शब्द के इस्तेमाल करेलन। नवका पढ़वइया लोग त सोझ–टेढ़ अंगरेजिये जानेला। अंगरेजिये बुकेला। ऊ त अंगरेजिये में नाँव राखी, भलहीं बढ़िया सटीक नाम अपने भाषा में होखे। 'सुगा पंखी' के जगहे अंगरेजी के कवन शब्द बा? जेके चित्रात्मक भाषा कहल जाला ओकर छटा भोजपुरी में केतना बा ई जाने के हो त दुइ घंटा आदमी गणेश चौबे के पास बइठ जाव। कहीं से पुरान फाइल मिले त चतुरी चाचा क चिट्ठी पढ़ो, विवेकी राय क निबन्ध पढ़ो, भोजपुरी लोकगीत पढ़ो, भोजपुरी इलाका क कहनी सुनो आ कुछ ना करे त दूइ मेहरारुन में जब बाजि जाव तब उनुकर एक दूसरे के कोसले–सरपले के भाषा सुने, त अन्दाज मिलि जाई कि भाषा कइसे आगे नाचे लागेले। जब दुलहिन घरे आवे लागेले तब पनवा नीयर बतावल जाला। पाने मतिन सहेज के रखे के सिखावल जाला। सोपारी नीयर ओके गाछि लचकत रहेले, टूटैले ना। ओकरे भीतर अपने आप शक्ति होला लेकिन ओकरा साथ चलेवाला भाव भी होला। पान के पानी चाही, लेकिर देर तक नाही। धूप चाही लेकिन सामने से नाही। पाने के पत्ता नीयर फेरे के चाहीं। एक के ऊपर दूसर गाँछ के रख द त सट जाई। भोजपुरी भाषा भी कुछ–कुछ ओह बहुअर मतिन ह। जो भीतर से बड़ा ओज होले, बाहर से बड़ा नवल होले। बड़ा सम्हार माँगेले। सब कुछ बिलकुल नपल–तुलल ह। आ सबसे बड़ बात ई ह कि समूह में रहेले जरूरत पर एक–एक बेकति के अलग–अलग पहिचान बनाके रहेले। सबके ऊपर एके रंग चढ़ा के नाही। एही से भोजपुरी मे एके रंग नाही बा, कई ठो रंग बा। एमें त गली क 'बदमास दरपन' के अइसन भाषा मिली कि 'हम त खरमेटाव करीले रहिला चबाई के भेंवल धरल बा दूध मे खाजा तोरे बदे।' दूसरी ओर अइसन असीसे वाली भाषा मिली कि 'अमवाँ क नाई बाबू मऊर त महुववा कि महुववा कुच लागे।' पुरइन पात अस पसरल कमल दल बिसरल!'

एक ओर भोजपुरी में गुड़ के कड़ाही नीयर ताव होला, दूसरी ओर लएनू नीयर कोमलता। भोजपुरी के ई विचित्र सुभाव एह देस के साधारण मनई के ह। ग्रियर्सन लिखले कि भोजपुरी मनई कवनो लड़ाई–झगड़ा देखे जायँ त कवनो ना कवनो पच्छ लीहे, खाली तमासबीन ना रहिहें। भरसक उहे पच्छ लीहें जवन कमजोर पड़त होखे। ई एके आजु बहुत समझदारी के बात ना कहल जाई। काहे कि किनाराकसिये के आज के समझदार समझदारी कहेलन। लेकिन भोजपुरी 'मोहि काह परा रे भाई' के कायरता समझेले। अइसन भाव, दूसरे से लड़ाई अपने ऊपर लिहले के भाव तबेले अइबो करेला जब मनई दूसरे में अपने के देखेला। दूसरे के अपनिये से जाँचेला। अपने सुख दुख से जाँचेला।

भोजपुरी इलाका के लोग दूसरे प्रदेश मे गइल, दूसरे देश में गइल, अपने से निर्मोही बनिके। एह देश के लाखन मजूर इलाका से बाहर जा ताटन, आ जहाँ जा ताटन खून–पसीना एक करऽ ताटन। ओह धरती से सोना उपजावताटन, आ जहाँ जेतना सम्भावना बा ओह सम्भावना के उजागिर करत बाटन। पर उनके जवन मिलत बा ओके अपने धरती में लगावे खातिर बराबर सोचत रहत बाटन। कबो आपन धरती, जड़ छोड़ल नइखन चाहऽ ताटन। ई मोह–छोह उनके खाली कजरी–बिरहा से ना जोड़ले बा बल्कि ओह भावना से जोड़ले बा जेवन भाव सभकर भाव हो सकेला। खाली भोजपुरिये के ना। ऊ भाव खाली मनई के ना ह। सउँसे जीवन के ह। सगरो जीवन के ह। जहाँ के गीत में परदेसिया के लौटावे खातिर ई ओरहन दीहल जाव कि 'ओहि देसवा में अमवा ना बउरेला कि ओहि देसवा

कोइलिया ना बोलेले।' उहाँ अपनवले के नेवता गाछि, चिरई, चुरुंग सभ देले बा। पेड़–गाछ, चिरई–चुरुंग इहो सभे देला, खाली मनई ना। जवने साहित्य में दुखवा क गठरी गंगा माई सम्हारेली मंगई माई सम्हारेली। चाहे केतनो अपनइत ना होखे, ओह साहित्य से जे अपना के जेतना जोड़ले रही ओतने ऊ भीतर से पोढ़ होई। ओतने मोह–माया भी होई ओकरा। उहे मोह–माया के पसार ह कि छोटा नागपुर के आदिवासी भाई नागपुरिया भोजपुरी अपनाइ लिहलन, सरगुजिया भोजपुरी अपनाइ लिहलन। नेपाल के थारू आ धांगड़, जेकर मूलभाषा जाने का कोई, भोजपुरी भाषा अपनाइ लिहलन। मारीशस में चीनी, तमिल जरी के लोग रहलन त तेऊ लोग बोलचाल में भोजपुरी भाषा के अपनाइ लिहलन। अपने देश में सिनेमा मे, जहाँ अपनवले क नाटक ज्यादा होला, उहो भोजपुरी गीतन के टुकड़ा, भोजपुरी कड़ी, भोजपुरी शब्द अपनावल जाता। भोजपुरी कोमल जरूर ह लेकिन पोसुआ नाही। केहू ओके पोसुआ ना बना सकल। ना विदेशी, ना अपने देश में। विदेशी संस्कृति के नाम पर फइलल कचराखाऊ अपसंस्कृति। एह खाऊ अपसंस्कृति के मार्ग अइसन बा कि सगरो लोकभाषा विदा होत चलि जा ताटे। एक अजीब चटक रंग में ढरल चलि जा ताटे। आँखि के चोभे वाला चटकारा रंग में रँगल चलि जा ताटे। कही–कही ओकर असर जरूर नवकी भोजपुरी कविता पर दिखाई पड़ रहल बा, जहाँ सपने के संसार रचल जाता। लेकिन अबहीं ले भोजपुरी के जरि बाँचल बा। अबहीं ले, एक्के, दुक्का सही, भोजपुर के असली रंग ओइसने बा। साँवर सलोन आ पनिगर।

भोजपुरी के प्रशंसा कवनो एह भाव से नाही कर ताटी कि दूसरे के महत्त्व कम करऽ ताटी। दूसरो भाषावाला लोग अपने जरी–सोरी क मान करे, ओमें पानी दे, अपने मेहनत आ पसीना के पानी दे, आ ओकर पानी पहिचाने, रंग पहिचाने, एकरे खातिर हम उकसावऽ ताटी। जब हम देखी ले कि अवधी ब्रजी बोले वाला लोग अवधी–ब्रजी घरे बोलत खान लजाला त ओह लोगन पर हमरा दया आवेले कि अइसन लोग हवन कि अपने जर–सोर से अलग रहिके आपन पहिचान बनावल चाहल ताटन। आ दूसरो कारण एक ठो ह कि हम ई जान ताटी कि भोजपुरी इलाका उहे ना बा जेवन बीस बरिस पहिले रहे, आ उहे ना रही जेवन बीस बरिस बाद होई। 'का खाई का पकाई का लेके परदेस जाई' बोले वाली चिरई भोजपुरियो इलाका मे मुँड़ेरी–मुँड़ेरी उचरतिया। इहो जान ताटी कि गाँव, गाँव ना रहि गइल बाटे, सहरो से बदतर, बेगाना आ अनचीन्ह हो गइल बा। अब गाँव परिवार ना रहि गइल बा। आ गाँव के लोग काका–भतीजा नाइ रहि गइल बाड़न। अब सभे जयहिन्द छाप नेताजी हो गइल बा। 'को बड़ छोट कहत अपराधू।'

इहो जानऽ ताटीं कि कवनो–कवनो घर होइहें जहाँ कहनी कहल जात होखी आ पुरान गीत गावल जात होखी। कम्मे गाँव होइहे जहाँ कमे के गाँछी तर झूला पड़त होखी। बिरले लोग होइहें जेके दस–पाँच कोस में बूढ़ी–बूढ़ा मिल जइहे जेके पुरान गीत, कहनी, रीति–रिवाज मालूम होखी। ओहूसे कम लोग होखिहें, जे ओके सीखल चाहत होखे। बटोरे वाला लोग बाटे आ बटोरि के डिगरी लेबे वाला बाड़न, बाकिर ओके सीखे वाला आ सीख के ओकरा ओर होखेवाला लोग अँगुरियो भर गनती पर नाहीं होइहें। ई सब त सही, इहे मानिके चुपचाप बइठल ई कवनो कम पाप नाही ह। आ ई पाप हमसे नाही सहात ह। ईहे एक ठो कारन ह कि हम अपने के अयोग्य जानिके भी ए काम, एह भोजपुरी साहित्य सम्मेलन के अध्यक्ष पद स्वीकार कइली। एह सम्मेलन के जरिए खाली भोजपुरी भाषा के आंदोलन चलो आ भोजपुरी साहित्य के पहिचान बनो, एतने हम नाही चाहत बानी। ई सब काम होत आइल बा, आगे इहो बढ़ी, लेकिन एकरे साथ–साथ ई सम्मेलन अखिल भारतीय ह त एगो बड़हर पैमाने पर भाव जगवले के काम करो जेवने भाव क चस्पा हम कइली हँ। ऊ भाव हमन से कुछ माँगता काहे से कि हमन के ऊ भाव कब से पूजत आइल बाटी। आ अब जो नाहियो पूजताटीं त ओकर कहीं–कहीं हूक मन में बा। ऊ हूक खाली मनई के मनई खातिर ना ह, चाहे एक ठाँव–गाँव, गाय–गोरू, पशु–पंछी गाछि खातिर नाइ ह। ऊ सगरो जीवन खातिर ह। अउर दिना कोइली दिन–दुपहरिये बोलेले, आजु अध रतिये काहे बोले ले, एह सवाल क कवनो मतलब दूसर ह ना। एह के जवन साहित्य उठावेला ओकर ध्यान खाली कोइली पर नाही बा आ ना ओकर बोली पर बा। जब आदमी कोइली के आ कोइली के बोली के कवनो सुधि ना रखले बा, जब आदमी एक दूसरे से अनचीन्ह हो गइल बा, एक दूसरे के बीच में एक ठो अन्हार हो गइल बा कि केहू आमना–सामना ना होत बा। सब आड़े देके बतियावत बा। कि केहू आपन कहीं लउकते ना बा। कवनो जोन्हीं ना लउक ताटी ना कवनो जुगनू कही एह अन्हार के चुनौती देबे खातिर कही जुगजुगाता। आँखी में पानी ना रहि गइल बा कि ओहू जा कवनो चमक आवे। एह अन्हारे में अगर कही कोइली बोलल, पुकार उठल कि हम जहाँ बाटी उहाँ से कही अउर चली त बड़ा फिकिर के ऊपर एक ठो नसा के परदा डालि देले रहल अ। आ कहाँ ई बोध कि कही अउर चली। बेगानोपन के एक ठो नसा होला आ ओ नसा में आजु के आदमी

डूबि गइल बा। ओके इहे बड़ा अनस लागता कि आपन कहे। केतनो अनस लागो, आदमी केतनो एपर झोझियाय कि काहे हमके सुख–सेजिया से उठवलऽ! जिन्दगी सेजिया पर त कटै के नाही ह। जिन्दगी त जगले के आ खटले के नाँव ह। आ जे जागी आ खटी तेके कही केहू अपनइत नाही लउकी। कहीं केहू आठ–नौ घंटा का पसीना पोंछेवाला ना लउकी, त खटल बोझ हो जाई आ केहू होई चाहे एके छन खातिर मिले, त खटल–जागल, उमंग आ उछाह बनि जाई। एसे ई सवाल आजु जइसन बेधेवाला बा ओइसन शायद मनई के इतिहास में ना रहे। काहे से कि मनई के एतना कबो भाग ना होई अपनवले से, एह जोखिम से कि अपनवले के मतलब होला अपने के दूसरे के हाथ सौप देहल, आपन बहुत कुछ लुटा दिहल। बिना लुटवले ई मिलेला ना। अब जब सज्जी रिश्ता–नाता, नेह–छोह, गीत–नाच, कविता–कहानी सब जिनिस हो गइल होखे त आदमी भी जिनिस हो जाला। आ ऊ फेर तब सोची नाई सकेला कि जिनिस त कुछ नाही ह। सब अपने कवनो–ना–कवनो परछाईं ह, आ सभकर परछाईं आदमी ह। पुरान कहनी के जिनिस बनावे वाला मन राच्छस नीयर खाली खाये–खाये करेला आ ओकर भूखि बढ़ते जाला, लेकिन जे बाँटि के खाइल चाहेला, अपने में सभकर हिस्सा समझेला, ते खइले से ज्यादा खियवले में आकुल रहेला। एक जगह हम गइली। जनेव रहे। उहाँ के कर्त्ता एके गोड़े दू बजे राति ले खड़ा रहे। पंगत पर पंगत चलि गइल, उनुका मुँह में पानी तक ना गइल, लेकिन उनुकर चेहरा अइसन खिलल रहे आ जे खइलस तेकरे खातिर एतना गदगद रहलन कि आजु सगरो लोग हमार घर कृतारथ कइलन, हमार जग पूरा भइल। ई पूरा भइले के भाव छोट–छोट घरौंदा बनाके जे रहऽता ओकरा ना बुझाई। काहे से कि ऊ त ना कबे आन्ही–पानी सहले होई, आ ना कबे टहकार अँजोरिया में बाँसुरी के पीछे दउरल होई, ना चइत के भोर में महुआ बीने महुआरी में भागल होई। ऊ का जानी कि सम्पूरन का होला। लेकिन हम कहऽ ताटी कि ओ सम्पूरन क जरूरत आजु आ गइल बा। खाली जब हो जाला तबे सम्पूरन के चाह जागेले। जवने ओर नजर डाली, गगरी छूँछे लउकत बिया। केहू ओ छूँछ गगरिया के बहरवा से रँगि दिहले बा। आ ओपर केहू सयान बा त फूलो–पत्ती बना देले बा लेकिन बा ऊ गगरिया छूँछे। थोड़े देर ले छूँछे राखी, त छूँछ सहाई ना। आ छूँछे लगल बा। केहू का केहू के ऊपर बिसवास नाही ह। ई जाति ऊ जाति पर बिसवावस नाहीं करत बा। अपने पार्टी के आदमी अपने पर बिसवास ना करत बा। अपने घरही में आदमी अपने सँगे महतारी–बापे पर ना बिसवास करत बा। एह अविसवास के खाई के ऊ भरल चाहत बा। तरह–तरह के बिजली के कचना से, गाता से, सिनेमा से, वीडियो से, पंखा से, ठंढा करेवाला मसीन से, गरमावे वाला मसीन से। जाने कइसे–कइसे कचरा से खाई पटात बा। खइया चौड़े होत जाले आ ओही के ई परिणाम देखे में आवता कि एक–से–एक कोमल, सुन्नर पढ़ल–लिखल, सुशील धियरिया ससुरे जा ताटी त ओकरा पर माटी के तेल छिड़का जाता। काहे नाही अपने रूप–गुण के साथे–साथ ऊ दहेज ले अइली। जइसे बिना अपने कमइले अन–धन–सोना घरे चलि आवे। अइसन लगऽता जइसे लइका आ लइकी अलग–अलग किसिम के कवनो सृष्टि होखे। आ जे लइकावाला के लइकी ना होखे आ जेकर भइलो बा उनुके ई नाही मन में रहि गइल बा कि दूसरो के लइकी भी लइकी ह। एके बाँस के दू करेली फूटेली–एक बँसुरी बनेले आ दूसर बाँस। जवन बाँस बनेला तवनो मारे खातिर नाही घाव रोके खातिर बनेला, लेकिन ऊ बँसवा के पोर–पोर में अब खाली एक ठो भूख समा गइल बा। केतना भरी, केतना खाईं, केतना चबाई। हम ई बात बढ़ा–चढ़ा के नाही कहऽ ताटी। जेवन सामने होत बा आ सब जेकर चर्चो कर ता आ ओह चरचा के बड़ा चटखारा लोग लेता। अखबार में अगर खबर न छपे कि नई बहुरिया के केहू जरा दिहलस, काट दिहलस, त अखबरवा पढ़ले के कवनो सुखे ना मिली। एक सीता के अग्नि परीक्षा भइल त सगरो देवता लोग आ गइलें। निर्वासन भइल त बालमीकि जेवन रामायण लिखले खुदे आ गइले आ कहले कि हम अपने तप के बल पर कह ताटी कि सीता पवित्र ह। आ आजु एतना जगह–जगह कांड होता, एतना जगह–जगह बहुरियन के होम होता आ केहू के मन में देवता ना आवत बाटे। एकर कारण बिचारीं त कारन ईहे ह कि जवने साहित्य के एके रूमानी मोह जानि के सभ खाली मनोरंजन के वस्तु मानता आ जेवन संस्कार एक तमासा मानऽ ता आ अजायबघर के चीज मान ता। कवनो जमाना में ई गीत मटकोर के धुनि पर गावल जात रहे। गाँव में गीत माटी गोढ़ले कै रहे। कवनो जमाना में हल्दी चढ़ावल जात रहे। बर–कन्या के हल्दी लागत रहल। कवनो जमाना में एगो कार होखे चुमावन। "साठी के चउरा लहालहि दूबि रे, चूमे ही चलेली कवने राम धीय रे। जस–जस चूमेली तस–तस देली असीस रे, जीयहु दुलहे राम लाख बरीस रे।" आ कवनो जमाना में जनेव के गीत गावल जात रहे– "ऊसर खेत जोताइब त मोतिया बोवाइब, कंचन थार भराइब त मोतिया लुटाइब।" कइसन–कइसन उजबकपना होत रहे, खाली सपना क संपती। हम ओह लोगन से एतना ना घबड़ाई ले जे एकदम सहर में बा जे एकदम

नवा हो गइल कि ओके जरी से कवनो मतलबे ना रहि गइल। लेकिन जे सहर मे रह ता आ गाँव के बाति कबो–कबो कवनो–कवनो बानगी अपने लगे रख ता। ई देखी खाँटी देहाती चीज ह, जेइसे देहाती चीज ओकरे खातिर एक जिनिस ह। ओकरे से हम घबराई ले। काहे कि ई आदमी हमके बड़ा भयावन लागेला। लोक साहित्य लोक कविता के बाति करेवाला ढेर लोग अइसने बा। कमे लोग अइसन बा जेकरा खातिर ना गाँव तमासा बा ना लोक साहित्य तमासा बा। ई सज्जी साँस–साँस में, रोवाँ–रोवाँ में भरल बा। ओही से हम आसो करऽ ताटी कि ओकर काने तक हमार बात पहुंची। ऊ भोजपुरिहा हो चाहे बुन्देलखण्डी हो। चाहे मगही हो, मैथिल हो, छत्तीसगढ़ी हो, कही के, अपने के माने, अगर ई समझे कि हम जवन पवली अपने धरती से, ऊ सभकर ह। आ ई धरती जइसन हमार महतारी ह ओइसन सभकर महतारी ह। एकरे ऊपर हमार इजारा नाहीं ह। ई जरूर चाही कि हम हीरा पवले बाटीं त गदिया के ना राखी। जहाँ जहाँ अन्हार होखे हीरवा कही ऊँच ताखे पर रख दी। सभकर चेहरा पर ओकर अँजोर आ जाव। आ जेकरे चेहरा पर कवनो मुखौटा लागल होखे, मुखौटवा चिन्हा जाव। असली आ नकली फरिया जाव।

ई लक्ष्य अगर आप लोगन के रुचे त एके उजागिर करे खातिर एक ओर त अपने 'वाचिक परम्परा' के अइसन संग्रह तइयार कराई जवने में सगरो जीवन के ए देखेवाली बात सभके एक दूसरे से मिलावे वाली बात हो, आ जिन्दगी के हर एक घड़ी के कवनो–कवनो अर्थ देबेवाली बात हो ओकर व्याख्या करीं। ओकर तुलना दूसरे लोग साहित्यन के अइसने सनातन मूल्य वाला पाँतिन से करी आ अपने के जाँची कि हम एह मूल्यन के जिय ताटीं कि ना। ई काम बहुत बड़ संकल्प के काम बा। काहे से कि एह काम में जे लागी ते अपने के मिटा दी। डॉ० उदय नारायण तिवारी चउदह बरिस ले खटले त भोजपुरी पर आपन बड़का प्रबन्ध लिखलन। पं० गणेश चौबे जी अबही ले खटते जा ताड़े। राहुल जी गाँव–गाँव आजमगढ़ मे घूमि के नाँव से थाह लगावे के कोसिस कइले कि खाली नाँव के रेख के सहारे कइसे ओकर इतिहास बाँचल जा सकेला। ई सभ काम तपस्या से भइल। गीत लिखे वाला हमरो बीच मे बा। आ चटकार गीत लिखेवाला बा। कहानियो लिखेवाला एक–से–एक समर्थ बा। बड़ी जानदार कहानी लिखेवाला बा। लेकिन हम चारूँ ओर देख ताटी, अइसन आदमी कम बा जे अपने के खपा के ई कुल्हि काम करे। भोजपुरी सम्मेलन के लोग–ई लोग बिना सुविधा–सहायता के भोजपुरी के ई सभ कइले खातिर धुनियाइल बा। एक तरह से सयान लोग त इहे कहिहे कि ई कइसन बउरहपन ह कि ई भोजपुरी के एगो अलगे झण्डा ई लोग खड़ा कइले बा। लेकिन ई कहे के जरूरत आ गइल बा कि ई भोजपुरी के झंडा ना ह। ई हिन्दुस्तान के खाँटी मिजाज के झण्डा ह। जेके भुलवले के कारन आज अइसन लउकता कि आज केहू केहू के ना ह। भोजपुरिये के कारन, पूर्वी उत्तर–प्रदेश आ बिहार मे हिन्दु–मुसलमान, बाम्हन–चमार कही मिल सकेले। आ एही से बिरहा, चैती के नाते, केहू कवनो जाति के होखे, कवनो ईमान के होखे, दुइ घड़ी जुट सकेला। लोरिकायन, चनइनी, कजरी, आल्हा गावेवाला जेतना हिन्दू होइहें ओतने मुसलमान होइहें। आ पूरबी धुन जवने में अधिकार भोजपुरिये के होई, कवनो एक जाति के लगे धरोहर नाही बा।

हमरे कहले क ई मतलब नाहीं ह कि भोजपुरी के जवन साहित्य लिखल जाता ओकर कम महत्त्व होखे। लेकिन हम वाचिक परम्परा के फेर से दोहरा–दोहरा के एसे गोहरावल चाह ताटीं कि बिना ओकरा जवन कुछ लिखल जाई, डर ह कि नकली न हो जाव। केहू बुरा ना मानो, केहू एक कवि आ लेखक के ऊपर हमार टीका–टिप्पणी नाहीं ह। कबे–कबे हमें लागेला कि जवन खड़ी बोली मे दस–बीस साल पहिले लिखल गइल बा आ ऊ बेरि–बेरि पीटल गइल बा, ओही के अनुवाद कइके भोजपुरी मे फिट कइल गइल बा; जबकि ओमें ना भोजपुरी मुहावरा होला ना भोजपुरी माटी के कवनो सुगन्ध। माटियो मे गन्ध कब निकलेला जबकि ओके खूब जोतल जाला आ हराई झँवाये खातिर छोड़ि दिहल जाला। आ वैसाख आ जेठ में जब झँवा जाला त पहिला असाढ़ बरिसला पर माटी गमक उठेले। ओही के कालिदास– 'सद्यः सीरोत्कषण सुरभिक्षेत्रमारुह्यमालम्' कहले बाटन। कइले क मतलब ई कि जवन मटिया पहले जोतब जा मटिया के साथे–साथ अपने के झँवाइब तबे ओकर सुगन्ध पाइब। भोजपुरी अइसन होखे जवन भोजपुरी लागे आ ओही के भोजपुरी, भोजपुरी लागी जे भोजपुरी के भरपूर जीही। खाली ओकर फूल ना सूँघी, पर काँठ–कूस से आपन हाथ–पैर, अपने लोहू से चभचभाई। आ ओकरे आगी में अपने के तपाई, ओकरे पानी में अपने के सेरवाई। आ ओकरे एकदम जगजगात खुलल अकास के नीचे छँहाई। भोजपुरी शब्द–संसार के जादू तबे ओके जाहिर होई। आ ई कवनो मामूली संसार नाही बा। एमें एतना तरह के रंग बा आ तरह–के–तरह अर्थ बा कि आजु एकर संग्रह के पहिले चिन्ता करेके चाहीं कि ई संसरवा कहीं आँखि से ओझल ना होइ जाव। एसे भोजपुरी के सम्मेलन के सामने दूसरा काम हम भोजपुरी–प्रयोग–कोश के रखऽ ताटीं

जवने मे खाली भोजपुरी शब्द आ अर्थ ना होखे, ओकर प्रयोग होखे। जरूरत पड़े त उहाँ तसवीर से समझवले कइसे समझ में आई। आ ई कोश बनि जाई त हिन्दीओ के बहुत बड़ उपकार होई। काहे कि ऊ सबदवा हिन्दी के भी कामे आई। भारतेन्दु, स्व. बदरीनारायण चौधरी 'प्रेमघन', स्व. पं. हजारी प्रसाद द्विवेदी, स्व. रुद्र काशिकेय, स्व. पं. बलदेव प्रसाद मिश्र और आजु के लेखकन में शिवप्रसाद सिंह, विवेकी राय, कुबेरनाथ राय के साहित्य में अगर लोकतत्व के विलक्षण प्राण–प्रतिष्ठा भइल बा त ओकर मन्त्रवा भोजपुरिये से आइल बा। ओइसन बाँकपन खातिर दुसर लोग ललचात बा।

अन्त में, तीसर काम हम जब अपने लोगन के अवढर कृपा से विकरमाजीत के सिंहासन पर एक अनगइयाँ मनई के बइठाइ देले बाटीं त एह सिंहासन के परताप से कवनो अवरो अधिकार से नाहीं– ई सौंपब कि चाहे साहित्य अकादमी हो, चाहे सरकार के अऊर संस्था होखे, सभ इहे पूछेला कि भोजपुरी साहित्य के कवनो इतिहासो बा? एम.ए. में पढ़ावे के होखी त का पढ़ाई? त कम–से–कम कबीर से लेके आजु तक एतना लमवार साहित्य बा ओकर कवनो परिचय हमनी के तइयार करेके चाहीं। खाली जस गावे खातिर ना हो। कइसे भोजपुरी अपने के एक सगरो राष्ट्र के भाषा के निर्माण मे सहायक बनलि ह। कइसे आपन दावा खाली घर के भीतर रखलसि। आ जइसन हम शुरू में कहलीं, एतना समर्थ होइके भी बराबर अपना के नवा के रखलसि। एह पृष्ठभूमि में इतिहास लिखे के चाहीं। आ आगे खातिर ई संकेतो देबे के चाही कि जे बहुत सहेला आ जे बहुत चुप रहेला ऊ कमजोर नाहीं होला। ओकरा भीतर एक ही बिसवास होला कि जहिया चाहब तहिया 'कंदुक इव ब्रह्मांड उठाऊँ' के करतब देखा देइब। उत्तर प्रदेश के दक्षिणांचल में जंगल आ औद्योगिक संस्कृति के दुपचट मे ई सम्मेलन हो ता त उत्तर–प्रदेश के, मध्य प्रदेश के आ बिहार के सरकार– इहाँ तीनों राज के सीवान बा– के काने तब ई पहुंचाईं कि एतना बड़ा जनशक्ति आ श्रमशक्ति के निरादर कइल ठीक ना होई। एक ठो ओस चटावे खातिर भोजपुरी अकादमी बिहार सरकार खोलले बा। ओकरे लगे अपना मनइन के दरमाहो देबे खातिर मुसकिल से पइसा मिलऽ ता। उत्तर प्रदेश आ मध्य प्रदेश में ऊहो ना बा। साहित्य अकादमी ई कहेले कि हँ, लोक साहित्य एगो सोता ह, ओसे कबो–कबो पानी लिहल जाला। ओकरे ऊपर कबो–कबो गोष्ठी हो जाए के चाहीं। आजु ले हमरे जानकारी में उहो ना भइल। लोक–साहित्य के नाम पर भी कवनो जियतार संस्था अखिल भारतीय स्तर के नाहीं बा। आ ना कवनो एगो शोध–संस्था अइसन बा जवन एतना बड़वर धरोहर आ एतना जियतार समकालीन रचना–संवार के सम्हारे। कुछ बयारियें अइसन बहता कि जे नाचऽता, गावऽता आ तान तूरऽता ओही क दुनिया मान रखता। साठे हजार जेकरे बोलेवाले क संख्या बा इहाँ तक कि चार सौ, आठ सौ संख्या वाला गनती भी सुरक्षा के अधिकार पाव तारें आ बारह करोड़ के कोई पूछेवाला ना बा। ई कवनो नीमन चीज नाहीं ह। अन्याय त इहे ह। जे करता तेकरे खातिर शुभो नाहीं ह। जे केहू देश के बड़की रक्त के धमनी के चिन्ता नाहीं करी ऊ जानो कि फेरु ऊ सूखी त दूसरन मे खून रहबे करे त देह ना चली। भोजपुरी ऊ धमनी ह जवने से ए देश के श्रम के बड़वर–से–बड़वर काम हो ताटे। पंजाब मे फसिल सोना उगिलता, इस्पात ढलाता, कोइला निकालल जाता। बड़का–बड़का कारखाना चल ताटे। एह भट्ठी के आगि जे जराव ता आ जे जरता ओकरा प्राण हुलसावे वाला अगर कुछ ह त भोजपुरी के चइता, कजरी, फगुआ, बिरहा, लोरिकायन। ई खाली शोधे के विषय रखले से काम चली ना। सउँसे जिन्दगी से एकर का रिश्ता बा एके जब तक चीन्ही ना आ चिन्हाई ना तब तक जइसे पहिले कहलीं ह कि अजायब घर के जन्तु होके रहि जाई। भोजपुरी में रचना बड़वार तब होई जब ई चीन्हल–चिन्हावल शुरू होई। काहे कि रचना त भाषा के प्रतिष्ठा से जुड़ल होई। भोजपुरी के प्रतिष्ठा मिली त भोजपुरी रचना के शक्ति जरूर जागी।

एह अधिवेशन में हम एकरो माँगि उठाईं। आ अपने लगे बल–बूता होखे त एके गाँव–गाँव जगवले के अभियान करीं, त शायद जे देश के, प्रदेश के भार सम्हरले बा ते कुछ चेती।

बाति त ओराए के बा नाहीं, राति चाहे ओरा जाय। लेकिन कहीं–न–कहीं आपन बाति समेटे के चाहीं। अब हम आपन बात समेटब। आ फेरु एक बेर सबके आगे हाथ जोड़ब। अगर हमरे नीयर अदमी के ई आसा न दिहलीं त ओकर मान राखीं आ अगर कवनो भूल–चूक हो त क्षमा करीं।

जय भोजपुरी! जय हिन्दी!! ••

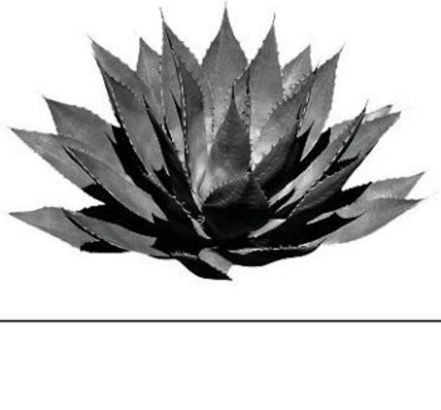

रजाई

रामदेव शुक्ल

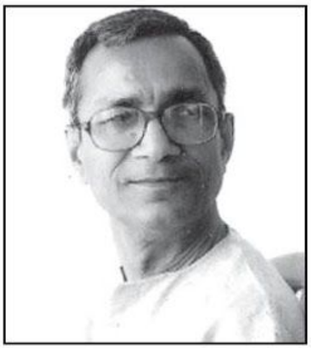

('रजाई' डा० रामदेव शुक्ल जी के ऊ लोकप्रिय कहानी हऽ, जवना के गोरखपुर रेडियो से प्रसारन त भइले रहे, ''पाती'' अंक-3, 1980 में छपल रहे। आज फेरू ई कहानी पाठकन का अनुरोध पर दुबारा दिहल जातिया।)

आजु कँगाली के दुआरे पर गाँव के लोग टूटि परल बा। एइसन तमासा कब्बो नाहीं भइल रहल ह। बाति ई बा कि आजु कँगाली के सराध हउवे। बड़ मनई लोग क घरे कवनो जगि-परोजन में गाँव-जवार के लोग आवेला, नात-हीत आवेलें, पौनी-पसारी आवेलें, करत्र आवेलें, त बाति के थाह मिलेला कि लोग काहें जुटल बा, बाकी एह जनम दलिद्दर के सराध के देखे खातिर गाँव फाटि रहल बा, एकर कारन बिना ओहिजा पहुँचले केहू जानि नाहीं पावऽता। मरद, मेहरारू, लइका, सेयान, एक-पर-एक भहरात बाड़े। मेहरारू आँखी से अँचरा लगवले बाड़ी स। दू एक ठो सुसुकत बाड़ी स। मरद लोग अकिलि दउरावत बाटे। केहू कुच्छू कहत बा, केहू कुच्छू कहत बा, केहू कुच्छू। उपरोहित छुन्नू मिसिर मोछिये में बिहसत बाड़ें। हजाम घरभरना उनुका ओर देखि-देख डहुरत बा। पिण्डा परात बा। कँगाली के बड़का लइका मुसवा बापे के सराध करावत बा। ई जवन किछु होत बा ओह में कुछ देखे लाएक नइखे, दूगो बाति के छोड़ि के। एगो बाति त ई बा कि सराध खातिर जवन सामान जुटावल बा ओह में एगो बड़ी सुन्नर रजाई धइल बाटे। अउरी कुलि समान दसो रूपया के नाहीं होखी, बाकी रजइया साठि-सत्तर रूपया से कम के नाहीं होखी। गाँव के लोग ईहे नइखे बूझि पावत कि जवन कँगाली जीयत जिनगी पुअरा ओढ़ि के पूस-माघ बितवलें, उनकी सराध में अइसन रजाई दियाति बा जेइसन राजा बाबू लोग ओढ़ेला। एतने नाहीं, निम्मन रजाइ तरई पर धइलि बा, एगो बँसही खटिया ले नइखे सूध। ईहे अजगुत खातिर गाँव के लोग जुटल बा। कँगाली के घर दुआर एह लाएक नइखे कि दसो अदिमी खाड़ हो पावें। बूधन मिसिर के घुरवे के लोग कँगाली के दुआर मानिके जुटि गइल बा। कँगाली के झोपड़ी के कुल्हि कराइनि सरि गइल बा। एगो मजिगर आन्ही आवे त रावा-रावा उधिया जाई। ओकर चेडन-मेङ काहाँ जइहें, कवनो ठेकान नइखे। बाकी एइसन झोपड़ी आ घूरा के बीच में एइसन रजाई। अजगुत बाति।

कँगाली की रजाई के एगो लमहर खिस्सा बा। ओह खिस्सा के सुनि लिहले पर आजु के अजगुत फरिया जाई। का जानी कवनी साइति में उनुके माई-बाप उनुके नाँव कँगाली धइले रहे कि जिनिगी भरि ऊ कँगाले रहि गइलें। कहाउति ह कि बारह बरिस पर घुरवो के दिन बहुरेला, बाकी कँगाली के जिनिगी में ई कहाउति कब्बो साँच नाहीं भइल। तनि रेंगराए लगलें, तब्बे उनुके महतारी-बाप दूनू जने आँखि मुनि लिहल लोग। एह दुआरे, ओह कोल्हुआड़े जूठ काँठ खाके कँगाली सेयान भइलें। जब होसगर भइलें त उनुके मजूरी मिले लागल। मजूरी कइले से खाए भरि के पावें त ई फिकिर भइल कि राती के मूँड़ी कहाँ लुंकवाईं। छोट रहलें त केहू के दुआर पर सूति रहे। अब का करें? उनुके बाप के पलानी जहवाँ रहे ऊ जगहि बूधन मिसिर के बपसी ले लिहलें। ओहिजा उनुके घूरा लागे लागल। कँगाली सेयान भइलें त बूधन बाबा राजी हो गइलें। कँगाली के पलानी परि गइल।

कँगाली के एगो घर हो गइल। अब ऊ अउरी जोर लागके खटे लगलें। दू चारि पइसा बचा के टेटे में खोंसे लगलें। जब तनी चिकना गइले त एगो अरधी से बियाह हो गइल। एगो लरिकनी

ओकरी कोरा में पहिलहीं से रहलि। कँगाली से हरि सलिए एगो लइका होखे लागल। कँगाली आ कँगाली बो दूनो परानी मजूरी करे लागल लोग। वोट के जबाना आइल त कँगाली के एगो कमरा मिलि गइल। अब ऊहो दुख छुटि गइल। बाकी कुल्हि जने के जाड़ एगो कमरा से कइसे जाव? कँगाली दुआरे पर कउड़ा क के ओही के अलम्मे राति काटे लगलें। उनुके लइका रेंगराए लगले स। दूनू परानी इहे देखिके तीहा धरे लोग की लइकवा सेयान हो जइहें स आ कुल्ही मिलि मिलि के मजूरी करिहें स तब सगरी दुख छूटि जाई।

कँगाली के बड़का लइकवा एगारहे बरिस के भइल ओही सालि उनुकी गाँवे के लगे ईंटा के चिमनी चले लागल। दूनू परानी ईंटा ढोवे लागल लोग। एहू लोगन से अधिक ऊ लरिकवा ढोवे। छोटकी लरिकनियों कुलि एकहक ईंटा उठावें सो। पहिलकी लरिकनिया के बियाह पहिलहीं क दिहले रहलें। असों बड़ा सुतार आइल। हफ्ता में कबो कबो आठ रूपया मिले लागल। कँगाली बो घूँची में कुछु पइसा बचावे लगली। जेठ में जब चिमनी में ईंटा के पथाई ढोआई बन्न भइल त कँगाली के झोपड़ी में कुछ भूसी आ कुछु मालमत्ता बचि गइल। तबे से आगे सालि कातिक के जोहाई करे लगले कँगाली। जब अगिला कातिक में चिमनी चालू भइल त पहिलहीं दिन से कँगाली के घर भरि जुटि गइल। कातिक, अगहन, पूस तीनि महीना खटले के बादि माघा चढ़ते कँगाली मलिकाइनि से कहलें कि- 'हो, सुनऽ ताड़ू, कहतू त एगो बाति कहती।' कँगाली बो एइसन नरम आ मीठ बाति कँगाली से कब्बो नाहीं सुनले रहली। उनुके जियरा जुड़ा गइल। हुलसि के कहली- 'कहीं न, कवन बाति ह।' कँगाली उनुके काने में कहलें कि बहुत दिन से ऊ एगो चीजु के सपना देखत रहले हँ। एगो रजाई बनवावे के। असों भगवान हाथे पर दस पइसा दिहले बाड़े। माघ आ गइल। कहतू त एगो रजाई बनवा लेतीं। कँगाली बो का बाति बहुत नीक लागलि, बाकी मने-मने ऊ खरचा के हिसाब लगावे लगली आ डेराए लगली। कई दिन के गनले गुथले के बादि दूनू परानी रजाई बनवावे खातिर तइयार हो गइल लोग।

कँगाली बजारे गइलें। छीटि कीनि के सियववलें। रूई किनलें। धुनवा के भरववलें। तागे खातिर पूछलसि मसीनि वाला, त कहलें - 'नाहीं हो, हमरा तागे वाला लोग घरहीं बा।' धुनाई-भराई देके रजाई के चपोति के अंगोछा में रसरी जोरि के बन्हले आ घरे ले अइलें। ओह राति कुल्हि लइकवा रजाई के छू के देखलें। हाथे से सुहरा-सुहरा के जीउ समुझवलें कुलि। परोसिया किहाँ से जाँता माँगि के ओही से दाबि के रजाई धरा गइलि। दुसरे दिन कँगाली बो चिमनी पर नाहीं गइली। दिन्न भरि में ओह रजाई के तगली। डोरा घटि गइल त जाके कीनि के ले अइली। साँझि ले रजाई तइयार हो गइलि।

राति भइलि त कँगाली का ई बुझाइल कि आजुए उनुके गवना भइल ह। मने-मने दूनू परानी रजाई में गरमाए लागल लोग। ओहर कुल्हि लइका आपन दाव लगवले रहले। जब सूते के भइल त कँगाली बो कुलि लइकन के पुअरा पर सुता के उप्पर से रजाई ओढ़ा दिहली। अपने दूनू जने कमरा ओढ़ि के सूति रहल लोग। कँगाली के जाड़ त चलि गइल बाकी रजइया के फिकिर लागल रहल। का जने लइकवा रजइया के कवन गति करिहें स। आधी राति के कँगाली उठले। उठि के लइकन के ओर जाके देखलें। उनुका ई बुझाइल कि कुल्हि लइकवा रजइया के अपनी ओर खींचि के तनले बाड़ें। पुअरा पर रजइया अलगे मइल होति रहे। कँगाली रजइया खींचि लिहलें। लइकवा कोंकियाए लगलें स। ऊ बहरा से एक पाँजा पुअरा ले आके हो कुल्हिनि के ओढ़ा दिहलें आ रजइया के चपोति के कोने में ध दिहलें। छन भरि खड़ा होके रजइया के निहरलें आ एक बेरि त अँकवारी में चाँति के कुछु देरी ले गरमइलें। ओकरा बादि रजाई के ध दिहलें। जँतवा से फेरू दाबि दिहलें कि रुइया ठीक से बइठि जाई त लइकन की खिंचले से गुल्टियाई नाहीं। दाबि के झोंपड़ी के बहरे निकसलें। मलिकाइनि कमरा में गरमा के सूतल रहली। उनुके नाहीं जगवलें। दुआरे पर रोज कउड़ा करत रहलें। ओहि दिन सँझवे से रजाई के फेर में परल रहलें, एसे कउड़वो नाहीं कइले रहले। पछिली राति के राखी रहे। ओही के खोर खार कइलें आ ओही कउड़ा के लगे एक मुठी पुअरा डारि के अँगोछा ओढ़ि के सुति रहलें।

ओह राति कँगाली बो अइसन निनिअइली कि एक्के बेर भिनसहरे आँखि खुललि। उठली त लइकन के पुअरा ओढ़ले देखली। परान धक् से हो गइल। तबले रजाई पर नजरि परलि। देखली की जाँते से चाँतलि बा। जीव में जीव परल। बहरा निकसली त देखलीं कि कँगाली कउड़ा तर घट्टी-मुट्ठी मरले पुअरा ओढ़ि के सुतल बाड़े। भीत्तर से कमरा ले आके ओढ़ावे गइली त देखली कि कँगाली हलहल काँपऽ ताड़े। छुअली त देंहि जरत रहे। कवनो तरे उठवली आ भित्तर ले गइली। लइकन के जगवली। कँगाली के देंहि अँइठाए लागल। जवले एहर-ओहर से दू एक जने आवें तबले कँगाली के देहि कण्डा अस हो गइल। बिहान होत-होत कँगाली मरि गइलें। ओहि दिन से कँगाली बो रजाई की ओर तकबो ना कइली। लइकनों के ना ताके दिहली। कहली, रजाई हमरा नइखे सहति। आजु कँगाली के कामे में ऊहे रजाई सेजिया पर दे दिहले बाड़ी। उपरोहित मगन बाड़ें। गाँव के लोग तमासा देखत बा। कँगाली बो रजाई की ओर तकतो नइखी। ●●

❑ राप्ती चौराहा, पो० आरोग्य निकेतन, गोरखपुर

धुआँ छँटल

डा0 आशारानी लाल

अबहियें तऽ तनी देर खातिर बहरवाँ के जँगलवा पर आके ठाढ़ भइले रहीं कि का देखतानी कि दूगो रिक्शा हमरे दुअरवा आइल आ रूक गइल। 'अरे! ई– तऽ लीली अपना बाल–बच्चन सँगे आइल बाड़ी का ?' हम ठीक से लीली आ उनका दुलहा के अबे चिन्हते रहीं कि ऊ झटसे भिरी आके हमरा से लपिटा गइली– ई कहते कि कई बरीस पर हमके तूँ भेंटाइलू हऽ ए–दीदी आ लगली सुसके। हम उनके चुप्प करवलीं आ अँकवारी में धऽके लगही बइठा लिहलीं। ऊ अब्बो एके बतिया दोहरावत रही कि दिदिया–रे! केतना दिन बाद आज तोके हम देखतानी। हम तऽ अपना ननद किहाँ उनका बेटा क बियाह में लखनऊ आइल रहीं, तब ई जान के कि इलाहाबाद नजदीके बा, इनसे बहुते निहोरा कइलीं कि हम इलाहाबाद उतरब आ अपना दिदिया से भेंट जरूर करब। इहो मान गइलन। दूनू बेटियों लोग अपना मउसी लगे आइल चाहत रहे, एहिसे सबके लेके हम इहाँ आ गइलीं हँऽ। एक ब एक आवे के सबकर मन बनल तब हम तोहके खबरो ना कऽ पवलीं।

चाय–पानी पियते पियते लीली अपना दीदी से लगली बतियावे। उनकर पेटवा बहुते देर से हँवड़ेरत रहे। कुल बतिया बाहर आवे खातिर छटपटात रहिसऽ। एहिसे ऊ अपना के रोक ना पवली आ लगली कहे कि तूँ–तऽ जानते बाड़ू ए–दीदी कि हमरा ननद के दूगो बेटे बानऽ लोग आ उनकर माली हालत सबका नोकरी चाकरी में रहे से बहुते मजबूत बा ।हम अपना रूपिया–पइसा के लाचारी के चलते ओह बियाह में नाहीं जइतीं तब उनकरा साथे–साथे हमरो बड़ा नाँव हँसाइ होइत। उहो कहती कि एगो तऽ भउजाई रही, उहो पूछत नइखी। बहुते सोच–विचार कइके ई बात बबुनिया के बतवलें। बबुनिये एह बियाह में जाये खातिर सब कपड़ा–लत्ता, मर–मिठाई आ खर्चा क कुल सरजाम जुटा देलस, तब हमरो इज्जत रह गइल आ उनकरों। ऊहाँ बियाह में बहुते लोग आइल रहे। सबसे खूब बात–बिचार भइल। बड़ा नीक लागल।

ए–दीदी आज तूँ चउका में मत जा। अस्थिरे बइठ के हमार ऊ कुल बतिया तू सुनऽ जवन रहि–रहि के हमरा पेटवा में हलकोरा मारऽतारी सऽ। हम जल्दिए रात के लौटियो जाइब। दू–तीन गो बेटी लोग बटुराइल बाड़ी। इहे लोग चउका में जाई आ खयका बनाई। हम तोहसे अपना मन क कुल कुफुत बतियावल चाहतानी। छोट रहीं आ कुआँर रहीं तबो तऽ तोहरे से कुल बतिया पूछत आ कहत रहीं, तऽ आजो पूछब आ अपना मन के हलुक करब।

''हम का बताईं ए दीदी, हमरा तऽ दूगो बेटिए न भगवान देले बानऽ। अब एह नया समाज क रेवाजे बन गइल बा कि दूगो बच्चा से अधिक ना होखे के चाँहीं। हमहूँ एही रंग में रँगा गइलीं। हमरो दूइए जानी भइली, तब सोचलीं कि इहे लोग बहुत बा। एही

लोगिन के इनका छोटहन नोकरी में सम्हार लेइब तब बहुते बड़ बात होई। दीदी! तोके तऽ हम बतवलहीं रहीं कि हमार बड़की पढ़े लिखे में बहुते तेज आ चलविद्धर बा। बड़की अपन पढ़ाइए पढ़त में इहे बात बूझ गइल रहे कि हमरा माई–बा पके लगे ढ़ेर पइसा–रूपिया नइखे, काहेंकि हम ओकरा स्कूल के पिकनिक में जाए खातिर ओके मना क देत रहीं आ समझावतो रहीं कि – बेटा हो तोरा पापा लगे एतना रूपिया नइखे कि हम तोहके पार्टी या पिकनिक में जाए खातिर दे दीं। हमार बेटी मानियो जात रहे, बाकिर ओकरा मन में कहीं न कहीं ई बात बइठ गइल रहे कि माँ–पापा के ऊ गरीब कबो ना कही, तऽ धनियो ना कह सकेले।''

''दीदी, बबुनिया आपन कालेज के पढ़ाई करे खातिर लरिकन के घरे बोला के सबेरे साँझ पढ़ावतो रहे, फेरू कुछ दिन बाद एगो प्राइवेट बच्चन के स्कूल में नोकरियो करे लागल। हमहूँ ओकर साथ दिहलीं। घर–बाहर के सब काम हम अपने देख लेत रहीं आ बबुनियन के पढ़े–पढ़ावे खातिर छोड़ देले रहीं। एहतरे अब हमरो हाथ गोड़ तनी हिले डोले लागल रहे, काहेकि घर में पइसा आवे लागल। सबकर मन खुश रहे लागल। कबो–कबो बेटी लोग सँगे बजारो–हाट जाके अपना आ ओह लो के मन मुताबिक सामान किनत रहत रहीं। बाकी ए–दिदिया ओह दिने त हमार मन ओसहीं मरूआ गइल, जइसे मोरनिया कुल नाचत–नाचत अपना गोड़वा ओरी ताकते मुरझा जालीसन।''

''एक दिने अपना गँउवाँ वाली नयकी चाची हमसे भेंटाइल रही। ऊ कहत रही कि फलाना के माई उनसे बतियवली कि जानत नइखू–लीली बबुनी तऽ बेटी क कमाई खातारी। उनकरा मरद के नोकरी में तऽ खाहू भरके ना भेंटाला, बाकी देखिह तऽ केतना ठाट से रहेली। अरे उनकर बड़को बेटिया बहुते कमाले। पढ़ेले–पढावेले आ का जाने का–का करेले। ना सुनलु हऽ कि छोटकी बेटियो के अब ऊ लीली इन्जीनियर बनावे के सोचतारी। एतना पइसा ऊ कहाँ से पावेली कि अपना सोच के पसारत रहतारी। ई कुल बेटिए के कमाई से न करतारी।''

अबे लीली अपना दिदिया से अपन दुखड़ा रोवते गावत रही कि सचहूँ उनका आँखी से लोर धार नियर बहे लागल। लगली कहे कि ई समाज दूमुँहाँ साँप हऽ–ए दिदिया। सबका मुँह पर सबका नियर बतियावेला। एक मुँहे लोगवा कहेला कि दूगो बेटिए बा तऽ का भइल। बेटी कवना बेटा से कम होले, फेरू दुसरा मुँहे कहेला कि फलाना लाल क बंश अब नाहीं चली। उनका तऽ एकहूँ पूत ना भइलन। दूगो बेटी बाडी सऽ तऽ ऊ अपना–अपना घरे जइहन सन। इनकर नउवाँ तऽ डुबबे न करी।

''दिदिया हो जाये दऽ नउवाँ डूबी तऽ का भइल, बाकी ऊ बतिया कि ''उनकर बेटिया का जाने का–का करेले कि एतना कमाले आ ऊ बेटिये क कमाई खा तारी–हमके बहुते रोवावेला। जानतारे ओह दिने तऽ अवरी कुफुत बढ़ गइल जब हम सुनलीं कि हमरा ननिअउरा आ ददिअउरा सब जगह इहे खबर फइल गइल बा कि हम बेटिए के कमाई खाके जीयतानी एहिसे उन्हनी के बियाहो के बात नइखीं करत। अब हमरा मन में एके बात आवता ए दीदी कि कहीं जाके नदी–पोखरा में डूबि धँस के परिजाई। दीदी–रे हमार बेटी पढ़ि के आ लइकन के पढ़ाके अगर दस रूपिया कमातिया तऽ लोग के आँखी काहे लागता ? ई काम कवनो नीच–काम तऽ कहाई ना। ओकर ना तऽ कवनो लड़िका इयार–दोस्त आज लेबा, नऽ कवनो बाउर काम ऊ करेलें। ओकरा एने–ओने ताके–झाँके के फुरसते कहाँ बा ? ई समाज अब हमके देखिए नइखे सकत। जेकेहम अपन बुझत रहीं उहो अब हमरा ओरी तिरछे ताकता। का खाली बेटे लायक बनेला बेटी ना?

''देख नऽ दिदिया एक बेर हम आ ओकर पापा ओकरा बियाहो के बिचार करत रहीं जा, तब जुरते ऊ कहलस कि हमनी के ई कुल सोचे के ना चाँहीं। जबले ऊ अपना बहिन के इन्जिनियर ना बना ली तबले बियाह क बात ना करी। ए–दिदिया आजकाल के बेटी सही में बेटी ना बेटा बन गइल बाड़िसऽ, हमरा ओही दिने ई बात बुझाइ गइल। छोटकियो तोहन लोगिन के आशीर्वाद से अब एक साल बाद कहीं न कहीं इन्जिनियर बनके कमइबे करी। हमरा त कवनो दुःख रहिए ना जाई। बाकी हमार सुख अब ई समाज देखिए नइखे सकत। सबका आँखि में हम गड़ रहल बानी काहे कि हमरा दुःख क अन्हरिया अब खतम हो रहल बा । हम अब अपना मन के एह पीड़ा से कइसे उबरीं रे–दिदिया। ई बात हम जानतानी कि दुनू के बियाहो नीके आ उन्हनी के मनचाहा घर में अपने हो जाई, काहे कि देखे–सुने में तऽ अच्छे बाड़ी स। कवनो खोट उन्हनी के देंह में केहू ना पाई। बेटी आ बेटा दूगो होला ई हम कबो ना बुझलीं।''

''लीली अपना दिदिया से बतियावत रही कि उनकर बबुनिया आइल का कहलस कि – ''ए माँ–मौसी चलऽ

लोग लंच कर लऽ।" देखुनाऽ दिदिया ई कुल हरदम अँगरेजिए बोलेलीसऽ, जइसे आपन बोली इन्हनी के अइबे ना करेला। खाना खाइल ना कहिके–लंच आ डीनर कहिहें सऽ। इहे कुल हमरा समाज के न पीरा पहुँचावता। लागता कि ई समाज रहि–रहि के हमके आपन डंक मारत रही आ हमार कुफुत बढ़ावत रहत रहीं। नीको बतिया खातिर आ बाउरो बतिया खातिर लोगवा हरदम, हमके घूरत रहऽता।"

हमसे ना रहाइल कहलीं 'लोगवा तऽ हरदम असहीं तिकवत रहेला। इहो बात सही बा कि बेटियन ओरी तनी ढेर घूरेला। एके तूँ चाहे हम मेटा नइखी सकत। जानते बाडू कि दूबर कुकुर के किलनी ढेर लागेला। तोहके लोगवा कमजोर आ गरीब बुझेला। तूँ रोवत काहे बाडू ? एकर जबाब लोगिन के तोहार बेटिए दिहन सन। हम त इहे कहब कि हमनी के मेहरारू बानी जाँ। सबकर सब बात सुने का सहे के लकम बा। जानऽतारू लीली मेहरारून क पेट पातर होला। कवनो बात ई पेट पचा ना पावेला, बाकी मेहरारू जेतना सहेली ओतना दूसर केहू सहियो ना पावेला। समाज तऽ चहबे ना करी कि बेटी बेटा से आगे निकलो, तबो अब बेटियन क जमाना आ गइल बा। तूँ तऽ शुरूए से बेटियन क हिमायती रहल बाडू, तबे न दूगो बेटी पाके संतोष क लिहलू। अब तोहार बेटी जब बेटन क कान काटे लगली सन् आ अपन जिम्मेवारी बूझ लेलीसऽ, तब तऽ ई कुल देखि–देखि के दूसर लोगवा तोहरा पर इल्जाम लगइबे नऽ करी। चुपचाप सब सुनत रहऽ आ अपना संतान क रक्षा में लागल रहऽ। उहे तोहरा कामे अइहन सन्।

साथे–साथ इहे कहब कि तूँ अपने मन में हरदम झाँकत रहऽ ओही के लीपऽ पोतऽ आ चिक्कन बनावऽ, दूसरा ओरी तकला आ सुनला से कवनो फायदा ना होई। तोहरे बिगड़ी। ई जिनगी एगो झुरमुट हउवे। एके जेतने सझुँरइबू ओतने ई अझुरात जाई। चलऽ खा–लऽ।"

लीली का चेहरा पर एगो चमक उभरल। ऊ अब, बुझला हलुका गइल रहली। हमार बाँहि धरत हुलसल कहली, 'चलऽ दीदी!' ●●

❑ डी II, 147, काकानगर, नई दिल्ली-23

बरखा-गीत

✍ आलोक पाण्डेय

हमरी नइहर ओरि उठल बिया बदरी
इयाद परे कजरी ना!

आन्ही बूनी गावत होइहें/लइका लँगटे धावत होइहें
गली-गली-कूँचा गंउवाँ टोला हमरी/इयाद परे कजरी ना!

भींजत होइहें अँगनइया/बोलत होइहें गोरू-गइया
भउजी नाचत होइहें भीतर, भइया बहरी/इयाद आवे कजरी ना।

झर-झर झरे झीर-झीर/असमानवाँ के चीर!
बूनी भरत होइहें भूइँ गंगा-गगरी/इयाद परे कजरी ना।

सगरी लागल होइहें लेव/अइले अइले इंद्रदेव
बीया उखरत-रोपात होई सगरी/इयाद परे कजरी ना।

चुवत होइहें ओरियानी/होइहें बिसुरत पलानी
सखिया खेलत होइहें तलवा में झिझिरी/इयाद परे कजरी ना।

धनिया दिहली ओढ़ाइ/पिया चलले पराइ
गोरिया आंखि मुनले घूमऽ ताड़ी नगरी/
इयाद परे कजरी ना। ●●

❑ ग्रा० - पो०, रतसर, बलिया-277123

सुसाइड नोट

डा0 आद्याप्रसाद द्विवेदी

कर्नल साहब मेहरारू के सिरहाना बइठल उनके माथ सुहलावत हवें। उनके पत्नी कई महीना से बीमार हई। किड़नी खराब हो चुकल बा। किडनी बदलले के बादो उनकर हालत ठीक नाही हो पावल। एसे हालत गंभीर बनल बा। कवनो समय अइसनो रहे जब आर्मी से छुट्टी पवले के बाद कर्नल साहब अपने पत्नी के संगे कहीं घूमे खातिर पैदले जायँ तऽ राह चलत लोग ओ लोगन के ओर टिकवे लागे। कर्नल साहब के लम्बाई 6 फीट से कमतर नाही रहे, मेहरारूओ उनका क लम्बाई उनसे थोरे कमतर रहे। रंग में उज्जर धपधप। ए जोड़ी के रूप देखे लायक रहे। उहे कर्नल साहब एह समय असहाय बनल बाटें। घर में एगो नौकर के अलावा केहू और नाही बा।

कर्नल साहब के दुगो बेटवा रहें। दूनो बेटा के कर्नल साहब ऊँची शिक्षा दिअवलें। एगो के इंजीनियर बनवले और एक के डाक्टरी पढ़वलें। संयोग कुछ अइसन बनल कि दूनो लइका अमेरिका के अलग–अलग शहरन में चल गइलें। बड़का लइका प्रवीण जवन इजीनियरिंग पढ़ले रहे, अमेरिका के नामी गरामी कम्पनी में बहुत ऊँची पगार पर नौकरी पवले। ऊ अपने पत्नी के संगे उहवें एक तरह से हमेशा खातिर बस गइल रहे। अपने माता–पिता से मिले बदे कभी अपने देश में अइले के इच्छो नाही राखें। दुसका लइका निखिल अमेरिका मे ही डाक्टरी के प्रेक्टिस शुरू क दिहले रहे। उनकर बीबी अमेरिकन रहे, जवन डाक्टरी पेशा से जुड़ल रहे। इन लोगन के उहवाँ एगो बड़वर नर्सिग होम चलत रहे। निखिल एक दुइ साल बितले के बाद कबों–कबो महतारी–बाप से भेंट करे खातिर अपने देश चलि आवें।

कर्नल साहब अपने बीबी के डाक्टर के डिसपेन्सरी से डिस्चार्ज कराके घर पर दवा चला रहल हवें। पत्नी सुभद्रा बुखार में लिपटाइल बिस्तर पर कराह रहल हईं। कराहत–कराहत साहब के हाथ पकरि के कहे लगली– 'प्रवीण के पापा! अब हम बचब नाहीं। अब हमरे चला चली के बेरा आ गइल बा। तूँ फोन क के दूनो बेटवन के बुलवा दऽ। हम अपने आखिरी बेरा में दूनो लइकन के अपने आँखि के सोझा देखल चाहत हईं।

अपने औरत के दर्द भरल इच्छा सुनि के कर्नल साहब के दिल पसीज उठल। अपने लइकन के फोन करा खातिर हाथ फोन करें चोंगा पर पहुँचि गइल। असल में अपने कड़क मिजाज खातिर कर्नल साहब दूनो बेटवन से नाराज रहत रहले। नाराजगी के कारण ई रहे कि ऊ अपने दूनो लाड़ला लोगन से अमेरिका छोड़ि के भारत में आके आपन कारोबार शुरू कइले के आदेश दिहले रहलें लेकिन दूनो लइकन में से केहू उनके बात नाही मानल अवर अमेरिका छोड़े के तइयार नाही भइल। अपने हुकुम के ए तरह से नाफरमानी उनके पसन्द नाही पड़ल अवर ऊ लइकन से अपना ओर से बातचीत कइल छोड़ दिहले रहें। लइका लोग छठै–छमासे अपने महतारी से समाचार पूछ लें। अपने नराज बाप से संवाद कइले के ऊ लोग कबो कोशिस नाही कइलें।

लेकिन आज अपने औरत के निहोरा पर कर्नल साहब के अभिमान टूट गइल। अपने अंदर के खीस के अलग रख के ऊ अपने बड़ लइका प्रवीण के फोन कके कहलें– 'बेटा प्रवीण! तुहरे मम्मी के तबियत बेहद खराब बा। किडनी खराब हो चुकल बा। डायलिसिस पर चल रहल बानी। ऊ तोहकें देखे खातिर काफी बेचैन बाटी। समय निकारि के तूँ जल्दी चलि आव। हम तुहरे संगे निखिल के भी फोन से समाचार बतावत बानी।'

बाप के बात सुनि के ऊधर से प्रवीन के अवाज आइल– 'पापा ए मोका पर हम जरूर अइती बाकिर जवना कम्पनी में हम काम करत हईं, ओ कम्पनी में काम करे वाले एक लेबर के मशीन में फँस के मौत हो गइल बा। कम्पनी के सभ लेबर ओकरे मौत के जिम्मेदार हम ही के बता के हंगामा खड़ा कइले बारे! अइसन स्थिति में हमार आइल संभव नाही बा। हम अम्मा के बेहतर इलाज खातिर तोहरे खाता में रूपया डाल देत हईं। तूँ निखिल के एह मौका पर बुला लऽ। अगली बार हम जरूर आइब। जेठ बेटा के मुँह से येतना बात सुनते कर्नल साहब के हाथ से टेलीफोन के चोंगा छुटि गइल। मारे खीसि के उनके नथुना फड़फड़ाये लागल और चेहरा एक दम लाल हो उठल।

कर्नल साहब मन में सोचे लगले कि अपने महतारी के आखिरी समय में बेटा अपने कम्पनी के कर्मचारी के दुर्घटना मे मौत के बहाना बना के अइले मे आपन मजबूरी बतावत बा, उल्टे इहो कहत बा कि ये बार में हम नाही आ पाइब, तू छोट भाई के महतारी के आखिरी वक्त में बुला लऽ और जब आखिरी समय के बारी आई तब ऊ आपन भाँजा पूरा करी। येही सोच में खीसि के आवेश में डूबे उतराये लगले तबले फिर सुभद्रा के करहले के अवाज उनके कान में पड़ल।

सुभद्रा के कातर स्वर मे कराह सुनि के कर्नल साहब घबड़ा उठलें आ छोट बेटवा निखिल के फोन कइल शुरू कइले। निखिल के मोबाइल पर लगातार घंटी बजत रहल, बाकिर लइका फोन के उठवले नाही। कर्नल साहब हार मानि के जल्दी–जल्दी में दुबारा तिबारा फोन कइले लेकिन बेटवा के अवाज सुने के नाही मिलल।

राति के दस बज चुकल। नौकर खाना लगा दिहले। कर्नल साहब सुभद्रा के दवा पिला के कुछ पीये वाला भोजन खिलावल चहले लेकिन सुभद्रा बरज दिहली। कहली आजु हमार तबियत ज्यादा खराब बा, कुछ पीये–खाये के मन नाही करत बा। रउवाँ कुछ खाली। कर्नल साहब बेमन से कुछ खाना खइले अवर हाथ–मुँह धोवे उठि गइले। अबहिन हाथ धोवते रहले कि उनके फोन के घंटी बाजल। कर्नल साहब दउरि के फोन उठवले। उधर से उनके छोट बेटवा निखिल के आवाज तेज स्वर में सुनाई पड़ल ''पापा। अइसन कवन आफत आ गइल रहल कि आप हमके लगातार कई बार फोन कइल गइल हऽ। हम ओ समय आपरेशन थियेटर में एक मरीज के गंभीर बिमारी के आपरेशन करत रहली हईं। ये परिस्थिति में फोन पर बात कइल हमसे संभव नाही रहल।

बेटवा के बात सुनि के कर्नल साहब कहल शुरू कइलें– 'बेटा, तोहार अम्मा के तबियत बहुत ज्यादा खराब बा। ई मान लऽ उनके आखिरी समय आ गइलें बा। उनके दवा–दारू में कवनो कसर नाही छोड़ली। हम खुद बहुत निराश हो गइल हईं। अब तू दूनो भाईन के बार–बार इयाद करत हईं। उनके इच्छा बा कि आखिरी बेरा में बेटवा लोगन के देख लीं। जेतना जल्दी हो सके तूँ चल आवऽ।'

बाप के अवाज सुनिके बेटा जबाब दिहलें– 'पापा! हमरे क्लीनिक में कुछ कैंसरग्रस्त मरीजन के आपरेशन के डेट पहिले से लागल बा। ओ सभ मरीजन के निदान आपरेशन से ही हो पाई। अइसने हाल में उनके आपरेशन के डेट के आगे टसकावल मुमकिन नाही बा। तूँ बड़का भइया के ए बेर फोन क के बुला लऽ। हम अगली बेर तुहरे खातिर आ जाइब।'

बेटा के अवाज सुनि के कर्नल साहब के जइसे लकवा मार दिहले होखे। एकदम सुन्न हो गइलें बाकिर थोरके देर बाद चैतन्य हो गइले। दुश्मन के दहाड़े वाला उनके बुलन्द हौसला आज पस्त हो गइल। आज उनके ई कहावत सच मालूम भइल कि जे केहु से ना हारेला ऊ अपना से हारेला। उनके आँखिन से अपमान अवर कोध से आँसू चूवेलागल। आँखिन से नीद कोसन दूर भाग गइल। ये अवस्था में उनके सहभागी बनल, उनके पालतू कुत्ता टाइगर अपने सोवे–बइठे वाले जगह से उठिके अपने मालिक के ईर्द–गिर्द घूमत रहे। ऊ अपने मालिक के उदासी देखि के उनके चेहरा बार–बार तिकवे लागे। ऊ समझ नाही पावे कि आज मालिक काहें एतना देर तक चुप चाप बइठल हवें।

एही बीच में सुभद्रा के करहले के फेर आवाज सुनाई दिहले। कर्नल साहब टेलीफोन वाले जगह से उठि के सुभद्रा के सिरहाने वाली कुर्सी पर बइठ गइले अवर उनके माथ सहलावे लगले। करहते सुभद्रा पूछ बइठली कि रउवाँ लइकन के लगे फोनवा क दिहली नऽ। लइके आवे के कहले ह नऽ।

कर्नल साहब पत्नी के दिलासा देत कहले कि हम फोन क दिहले बाटी। ऊ लोग आवे खातिर हामी भरले बा। हमके पता चलल हवे कि दक्षिण भारत के कवनो

मिशनरी हास्पीटल के एक अंग्रेज डाक्टर ए शहर में आ रहल बा। हम उनके बुलाके तुँहके देखाइब। हमके विश्वास होत बा कि ओकरे देखले के बाद तोहार तबियत जरूर ठीक हो जाई। तूँ आँखि मूनि के सुतले के कोशिस करऽ। सबेर होत हम ओ डागडर से मिले के प्रयास करब। तूँ तनिको घबड़ा मत।

दुसरका दिन शुरू होत–होत सुभद्रा के तबियत ज्यादा खराब हो गइल। साँस लिहले में भी कठिनाई होखे लागल। उनके गटई से घर्र–घर्र के अवाज होखे लागल। सुभद्रा कइसों हिम्मत क के कर्नल साहब के हाथ थाम लिहली। उनके मुख से एतने अवाज धीमे स्वर से निकरल। सुनत हई, हमके उमेद बा कि हमार बेटवा लोग जरूर आवत होइहें। बिना उन्हन लोगन के देखले हमार चोला नाही उठी। एतना कहत उनके हाथ कर्नल साहब के हाथ से छुटि के नीचे लटक गइल। गला से घर्र–घर्र के निकरल अवाज बन्द हो गइल। कर्नल साहब के आँखि के सोझा देखते–देखते उनके प्रान–पखेरू उड़ि गइल। कर्नल साहब के आँख से आँसू गिरे लागला। नौकर से जमीन पर एक चादर बिछअवले आ नौकरे के सहायता से पत्नी के शरीर के बेड पर से उतारि के जमीन पर सुला दिहले। पत्नी के देह के कपड़ा से ओढा दिहले। नौकर से सनेस भिजवा के अपने पड़ोसी लोगन के पत्नी के गुजरले के जानकारी दिहले।

तनिक भर में सुभद्रा के मुअले के खबर सगरे मुहल्ला में चहुँपि कइल। मुहल्ला भर के औरत सभ कर्नल साहब के बइठका में पहुँच गइली। औरत पुक्का फारि के रोअत–धोअल भी शुरू क दिहली। पड़ोसी लोग जुटते लास के घर के अंदर से निकरवा के बहरे कम्पाउन्ड में रखवा दिहलें। कर्नल साहब अपने पत्नी के मुअले के सनेस फोन से अपने ससुराल दे दिहलें।

जुटल औरत सभ खुसुर–फुसुर बतिआवल शुरू क दिहली। कवनो औरत कहे लागल कि साहब के बीबी केतना भागवान हई कि इनके दूनो लइका अमरीका में बड़–बड़ ओहदा पर बाटें उन लोगन के खबर दिया गइल होई। ऊ लोग आवत होइहें बिना उन लोगन के अइले लास मुक्तिधाम नाही जाई।

दुसरकी औरत बात काटत कहलस कि अइसन भागमान कवने काम के कि दूनो बेटवा में से केहू इनके जीअते नाही आ पवले मुअला के बाद अइबो करिहें त का आइब भइल। जब जीअत महतारी लइकन के अइले के राह तिकवत रहि गइल, सुरधाम चल गइल त अब अइबो करिहें त केवल अर्थी पर कंधा दिहले के भागीदार बनि पड़हें।

थोरके देर के बाद कर्नल साहब के हुकुम से अर्थी बनावे खातिर लोहार आ गइल। केहू बाँस मँगवा दिहलस। पंडित जी भी कर्मकाण्ड करावे बदे चहुँपि अइले। दुआरे पर कम्पाउण्ड के बाहर लास ले जाये बदे गाड़ी भी आ के खड़ी हो गइल। येतने देर के बीच में कर्नल साहब के हित–नात आ नजदीकी लोग अवर मुहल्ला के ढेर लोगन के जमावड़ा हो गइल।

कर्नल साहब अपने अवर अपने नौकर के संगे साथ में अपने दू नजदीकी के लेके अर्थी पर कान्हा देके गाड़ी पर रखअवले। जब उनके अर्थी गाड़ी पर रखा गइल त सगरे साथ आइल लोग मुक्तिधाम चले खातिर अपने–अपने साधन से आगे बढ़ल। ई बरात के आगे बढ़त सभ हित–नात अवर टोल पड़ोसिया लोगन के निगाह कर्नल साहब के लइकन के खोजत रहे। लेकिन उन दूनो लोगन के अमेरिका से न आ पवले से सबके आँख निराश हो जाय। केहू ये बात के जानत ना रहे कि काहें कर्नल साहब के दूनो लइका में से केहू ए मोका पर पहुँचि नाही पवलस।

मुक्तिधाम पर चिता के आग लगावत कर्नल साहब के आँखि से लगातार आँसू गिरत रहे। सब लोग इहे समझत रहे कि पत्नी के मुअला से अकेला भइले के दुख से कर्नल साहब एतना दुखी बाटें। अस कारन केहू समझत ना रहे काहे से कि कर्नल साहब केहू से लइकन के न अइले के असली कारन नाही बतवले रहले। चिता के आग देत कर्नल साहब अपने मन में कुछ निर्णय ले लिहले।

घर चहुँपले के बाद कर्नल साहब एक सुसाइड नोट तैयार कइले। ओ नोट में जिला के पुलिस कप्तान के संबोधित करत लिखले हम अपने इच्छा से आत्महत्या क रहल बानी। अगर हमरे मौत खातिर केहू जिम्मेवार बा त हमार बेटवा लोग बाटें। दूनो लइका लोग हमार और अपने महतारी के मौत के इन्तजार करत रहले। दूनो अपने–अपने जबाब में बारी–बारी से हमरा में से एक–एक आदमी के गुजरले के बाद उहाँ से अइले के वादा कइलें। अइसन संतान से नीक हम ई मानत हईं कि हम बिना संतान के रहली। हमार घर–दुआर सब संपत्ति के सरकार अपने काम में लगावे। पालतू कुत्ता के जे चाहे लेके पाल ले। सुसाइड नोट लिखला के बाद अपने सिरहाना रख दिहले अवर अपने लाइसेंसी रिवाल्वर से कनपटी में साटि के गोली दागि दिहले। कर्नल साहब के शरीर बेड पर से लुढकि के जमीन पर गिर गइल रहे। ●●

❑ **मालती निवास कुंज, सिद्धार्थ इन्क्लेव विस्तार,**
एच० आई० जी०–II 32, तारामण्डल, गोरखपुर

मां खातिर तीन गो छोटहन कविता

संजीव कुमार श्रीवास्तव

(एक) मां से नाता

रतिया के एकबैक
जइसहीं नींद खुलेला
बत्ती जला के निश्चिंत होखे के चाहीले
सही सलामत त बिया
जीवन के तिसरका पहर में
दाखिल हो रहल माँ

×× ××

आपन जिनगी के लेके
बेफिकिर होखीले
उहे मां के अँचरा तरे
बिहने पहर नींद खुलला पर।

(दू) पकड़

अनाज दाल मसाला
चाहे केतनहूँ महीन पिसाइल होखे
ओकरा में कइसनो मिलावट
चुटकी बजावते पकड़ लेत रहे माँ
काश ! रिश्तेदारियों में मिलावट के झूठ-साँच
ओइसहीं बुझले रहित ऊ ठोक-ठठा के।

(तीन) मां

सृष्टि के एकलौता
कालजयी कविता बिया माँ
जेकर एक-एक लबज में
ब्रह्मांड जइसन विस्तार बा
साथहीं बाटे महासागर के गहराइयो
जेकर वर्णमाला बनल बा

ममता स्नेह सेवा त्याग तपस्या से
वात्सल्य रस में आपन समूचा अस्तित्व डुबा के
विपदा आउरि दुख के
जाने केतना विराम चिन्ह से गुजर के
एगो पूरा वाक्य के रूप लेवेले माँ
तब कहीं जाके सामने आवेला
कविता के सोगहग संसार
जे साँचो
एकही कालजयी कविता से फूट के निकलेला ••

❑ संजीव कुमार श्रीवास्तव, जक्कनपुर, पटना

अमराई

✍ अजित कुमार राय

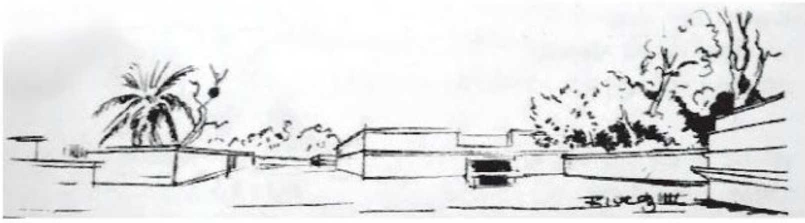

चलीं हम रउवा के गँउवाँ देखाईं !
तनिका बिलमि के लवटि फिर आईं।

खूँटा तोराइ के बरधा परइले,
वधशाला से फेरु जूता बनि अइले।
आपे क नाप क हऽ, आईं पहिनाईं !

जहवाँ बगइचा रहे, उहाँ अब खेत बा,
जहाँ जलधार रहे, उहाँ उड़त रेत बा।
चलीं अब एहीं में गंगा नहाईं।

बड़की हवेली भइल खण्डहर बा,
केहू नइखे रहत एमा, भूतन क घर बा।
चलीं, अब बचवा के बहरे पढ़ाईं!

दँवरी, ओसावन में खइतीं टिकोरा।
समहुत कराइ कसवाईं खूब बोरा।
चलीं हार्वेस्टर से खेत कटवाईं !

गुल्ली - डंडा होत नइखे, ओके मार गोली।
लट्टू नियर नाचि गइल, नवकन क टोली।
चलीं ना चुनाव में मोबाइल किनाईं।

चुवऽताटे मड़ई, मिलत ना मजूर बा,
आई मनिआडर ई मन में सबूर बा।
चलीं परधान नियर पक्का पिटवाईं।

आल्हर गादा क घुघुनी खिअइतऽ,
गरम-गरम गूर कल्हूआड़ा ले अइतऽ।
छोड़ीं चलीं, रउवा के मैगी खिआईं।

गाई का गोबर से आँगन लिपात बा।
धाँगि देहलस घुरहू, जवन कि कुजात बा।
साँझि के चलीं सभे कथा बइठाईं।

घड़ी, साइकिल, रेडियो क बीतल जमाना।
चार चक्का मिलऽताटे कैश का बहाना।
चलीं ना बबुआ कऽ तिलक चढ़ाईं।

आम सेनुरियवा ई पाकल ह डाल कऽ,
रोज कार्बाइड वाला खात बानी पाल कऽ।
चली हम सतुआ आ पन्ना पियाईं।

होरहा आ जामुन क दिन अब गइले,
बीस गो रुपैया में अँजुरी भरइले।
अररह डाल, तनि गँवहीं हिलाईं।

रहिला क साग संग्रहालय में गइल,
बाजरा - जनेरा त सपने में भइल।
अपना मचान चढि, चलीं गोहराईं !

आल्हा आ लोरकी आ बिरहा भेंटइले ?
कजरी आ चइता सिवाने परइले।
चलीं ना सलीमा क गाना सुनाईं।

धरती क नस हउवे निलकी सड़किया।
रोज एक्सीडेंट होला, पंचर बा पहिया।
राम जाने कहँवा ई रस्ता ले जाई ! ••

विष्णु पुरम कॉलोनी, न्यू कचहरी रोड,
सरायमीरा, कन्नौज (उ.प्र.), 209727

गुरूविन्द्र सिंह के दू गो गीत

(एक)

मत पूछऽ नोकरिहन के हाल बाबू
अइलीं गउवाँ त कतना बवाल बाबू।

कुछ दिन क आछो-आछो/इहे इहाँ रीत बा
मतलब निकाले भर/सबकर पिरीत बा
होखे जइसे खँसिउवा हलाल बाबू।

अपनाइत के तनिको/लउकत न भाव बा
लोगे बा बदलल कि/बदलल ई गाँव बा
इहाँ झुठहीं के बाजत सुर ताल बाबू।

नीको बेमरिया के/भूत उपटि जाला
झूठ-मूँठ धुरिये में/जेंवर बराला
रोज अझुरा में अझुरल सवाल बाबू।

अवते गउवाँ में कतना बवाल बाबू।

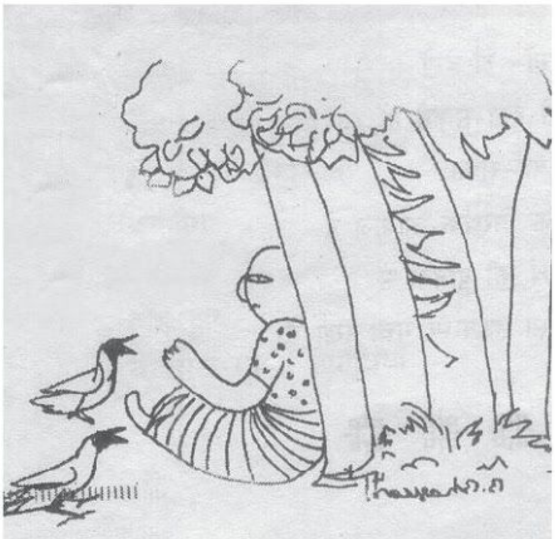

(दू)

पनिया का लाइन में चलि भइली बबुनी
आवते शहरिया बदलि गइली बबुनी।

पानी बिन गरमी में/हाय दुसवारी
उधियाला आँचर/सरकि जाय सारी
भउजी महल्ला के बनि गइली बबुनी।

दुधिया, बनियवाँ से/कइली इयारी
भीरी-सकेता जे/फँसि जाय गाड़ी
गरदो में मरदा निकलि गइली बबुनी।

हुकमिन क रुकमिन/बनत इठलइली
धइलस शहर फेरु/गाँवे ना अइली
शहरे के रँगवा रँगाइ गइली बबुनी। ●●

अइलैं कबीर कासी

शिवमूर्ति सिंह

जनमभूम-सुधिआइल एक दिन, धइके भेस उदासी
संग में एक सँघाती लेहले अइलैं कबीर कासी।

खोजलैं बहुत लहरतारा में आपन घर ना पवलैं
रूई धुनत जुलाहा देख के आपन बिथा सुनवलैं।

नाँव कबीर सुनत खिसिआयल, थुड़ी-थुड़ी कय देहलस
तू त ज्ञान बघारत सगरों इहाँ बिरादर बेबस।

टाटा-बिरला मील खोलवलैं, रोजी गइल पताले
गान्धी मुअलैं, चरखा लेके, लंदन भगल मेकाले।

घर-दुआर सरकारी बुलडोजर के मुँहवाँ गइलैं
धेलो नाहीं मिलल मवाजा, सुनत कबीर परइलैं।

जोलहन के बस्ती में देखलैं सतमंजिला तनल हौ
आधा पाट लहरतारा के पारक नया बनल हौ।

रंग-रंग कै फूल, फूल पर भँवरा डालैं डोरा
कलियन के उठाय कान्हीं पर भागै लम्पट छोरा।

कसमसात बढ़ गइलैं आगे बक्सा टिन कै पवलैं
एहर-ओहर ताक, चीन्ह के ओके तुरत उठवलैं।

पेड़े तर ले जा के खोललैं, देखलैं अपन चदरिया
जवन जतन से धइले रहलैं, मीलल चिक्कट करिया।

चादर करिया, पानी मड़िया, जुगुत एक ना सूझै
आँख मूँद के 'भितराँ' झाँकैं, मरम न केहू बूझै।

ज्ञान क साबुन मिलल मगर ऊ माया में लपटाइल
'मइल से कइसे मइल धोवाई'-सारी अकिल भुलाइल।

पीटत-पीटत फटल चदरिया, लगलैं करम के कूटै
लुत्ती छटकै लगल आँख से, दाग न तनिको छूटै।

डाल के पत्री में चल देहलैं, गंगा जी में धोवै
अइलत बहत देख अमरित में पुक्का फार के रोवैं।

समझ के उनके परदेसी घेरलैं ठग, पंडा, केवट
सुँघनी साह क सुँघनी सुँघा के बेहोसे कइलै झटपट।

मूस-मास के रुपया-पैसा, 'चौकाघाट' धरवलन
झंखत-झंखत लगल आँख, फेर सपना देखै लगलन।

गल्लामंडी-हिक्का के बल मानुस खींचत गाड़ी
मुसकियात गद्दी पर सेठवन कचरत पान-सोपाड़ी।

बरधा बनल आदमी देख के जीभ सट गइल तारू
कब तक देस में जोतल जइहैं 'पंचू' अउर 'पेबारू'।

बिरला घंटाघर मँगतन कै जत्था बड़ा देखायल
जइसे दुनियाँ भर कै भुक्खड़ इहवैं हउवैं आयल।

साठ साल क भइल अजादी तब्बौं एतना भुक्खड़
गाड़ के चहबच्चा नेतवा देसवा के डललैं भक्खड़।

बेनियाँबाग में भीड़ खचाखच मचल बा ठेलम ठेला
उतरल जैसे हौ कासी में महाकुम्भ कै मेला।

लकदक खादी पहिर मंच पर कासी के गुंडन के
देखलैं लेहले मोटकी माला, जमल हवैं बन-ठन के।

छपल रहल पोस्टर पर बस एकै परिवार क गाथा
मंच के बड़की फोटो पर छुटभइये नावैं माथा।

करिया झंडा ले दउरल पढ़वइयन कै एक जत्था
लाठी चार्ज भयल भारी फूटल केतनन क मत्था।

भगदड़ में कबीर रौंदइलैं, प्रान कंठ में अटकल
'मुक्तीभवन ले चला एनके'-सुनतै तारू चटकल।

मुक्तीभवन कान में पड़तै जोर-जोर चिल्लइलैं
तुरतै चार सिपाही लेहले जेलर साहब अइलैं

टी.वी. वाले पता लगाके अइलैं जेहलखाने
अड़बी-तड़बी सुनके उनकर, भगलैं कबीर पाखाने।

बाहर अवतै ऊ सब एतना सवाल उनसे कइलैं
माथा ठनकै लगल, बोल ना निकलल, उहैं सोपइलैं।

भेस बदल टी.वी. वालन-संग कैसों अइलैं बाहर
बन्द न तब्बौं होय धुकधुकी, मन से भागै ना डर।

होतै भोर चदरिया फेकलैं मगहर तुरत परइलैं
फेर पलट कब्बो ना कासी देखै कबीर अइलैं। ●●

डी-11, पी० डब्लू० डी० फ्लैट, अलोपीबाग, इलाहाबाद-6

तीन गो कविता

गुलरेज शहजाद

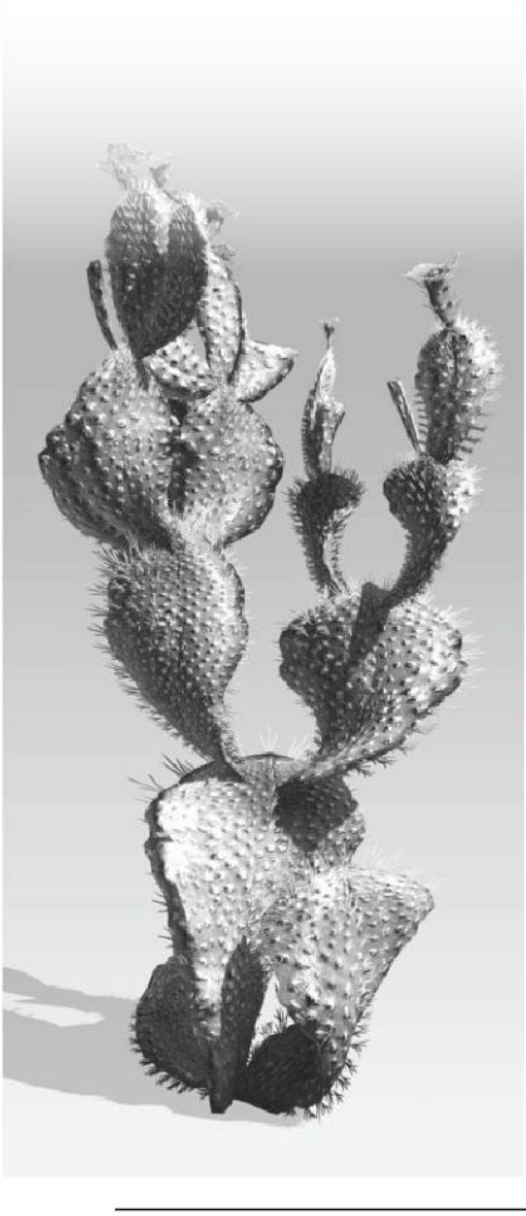

सनेस

सूखल झूर डाढ़ी पर बइठल
लाल चिरइया
बन्हले पाँखि में सनेस उड़ान के आपन
नापे खातिर ओर छोर
आकाश के लमहर
नील गगन के नापे खातिर जाइले
थाकल हारल आईले
जब देखीले आकाश नया
उड़ जाइले ।

बूनी–1

देखीं
सगरो
देखीं

खूबे
दुनिया
बूझीं

रहीं
अँखियाँ
खोल

बाटे
सगरो
झोल

बाटे
बिछल
जाल

चलीं
आपन
चाल !

बूनी–2

केहू
बोलल
बोल

रहे
बतिया
गोल

रहे
घूमत
मन

बात
भइल
घात

आँख
झरल
रात ! ••

नकछेद टोला,
मोतिहारी-845401, पूर्वीचंपारन

"लूटल निमन ना हऽ , लुटाइल निमन हऽ "

✍ आनन्द दुबे

ई ओह जमाना के बात हऽ जवना घरी एगो गाँव से दोसर गाँव आदमी दस दस कोस खाली खाए खाती चल जात रहे, चाहे उ बिआह तिलक के भोज होखे, कउनो जनेऊ सतइसा होखे, जगी के भोज होखे, चाहे केहू के मुअला के किरिया बरखी के होखे, लोग सवख से हँसत–बतियावत चल जात रहे। अ एकरा पीछे चाहे कवनो कारन होखे हमरा त लागेला की सबसे खास जवन कारन रहे, ऊ गरीबी रहे काहे से की गरीबी ना रहित त आदमी अपने त जइबे करित जवान बा साथे पुरनिया अउरु लइकन के लेके कबो ना जाइत अउरु उहो नंगे पैर। ना कउनो ढंग से जूता चप्पल रहे, ना कपड़ा, चाहे कवनो महिना होखे जरत जेठ के दुपहरिया होखे चाहे भादो के नधिआयिल बरखा होखे, आदमी काहे के माने, जाई एगो अलगे भोज के नासा रहे। ई सब गरीबी में ही इंसान कर सकऽता। कबो कबो त बाबूजी बतावस की बिना कवनो नेवता बोलहटा के आदमी जात रहे, एह से की भर पेट खाएके मिल जात रहे। ई हाल रहे।

एहि सब के बीच मे रहलन एक जाना, जे गरीबी के मारल त रहबे कइले, ऊपर से उ नोच खसोट अउरु लूटो पाट में खूब आगे रहलन। उनकर कहनाम रहे कि कहीं से भी घरे आवे त कुछो हाथ मे जरुरे ले आवे चाहे उ सुखल ढाठा, कहीं पाथल गोइँठा अ फेड़ पर लागल आम, कटहल, महुआ, आँवरा आ इमिली काहे ना होखे। एगो रात त हदे हो गइल, जब उ अउरु गाँव के कुछ लोग कउनो दूर के गाँव से बारात कइके राते में चल दिहल लोग अ रास्ता में कटहल के बगइचा देख के ओकरा पऽ कटहल तूरे लागल लोग, अ ओहि में ई फेड़ से गिर के आपन गोड़ तुरवा लिहले अ पूरा जिनिगी लँगड़त रहि गइले।

इनिका देहीं से तीन लइका अ तीनो एकदमे अपना बापे पऽ गइल बा लोग। दु जाना त गाँवही खेती बारी में बा लोग अ एक जाना पुलिस में बाड़े। पुलिस में जे बा उ त आपन बाप से दु हाथ आगही बाड़े। जब बात आई छीने झपटे अउरु लूटे के त। हमनी के त पते बा की हमनी देस में त पुलिस वाला अइसहीं बदनाम बाड़े ऊपर से अगर अइसन आदमी पुलिस में होखे त उ बदनामी के एगो अलगे उँचाई पर पहुँचावेला, जहाँ से पुलिस के ईमानदारी पे बिस्वास कइल मतलब, बरफ में आगी लगवला के बराबर बा। इनिका के देखी के कबो कबो लागेला कि इनकर लाइफ के एगही लक्ष बा 'लूटल', चाहे जइसे लूटीं। इनिका घरे गइला पे आ देखला पे लागेला की पूरा प्रदेश के अइसन कवनो जिला ना होई जहाँ इनकर तबादला भइल होखे अ ऊ जिला के सामान इनिका घरे ना होखे। पूरा घर राज्य के हरेक जिला के सामान से भरल पड़ल बा, चाहे उ लकड़ी के सामान होखे, अनाज होखे, कपड़ा होखे, हाथ के सामान होखे, सब के सब पुरहर मात्रा में मिली। एक दिन त हद तब हो गइल जब हम होली के दिन उनुका घरे गइनी आ उनका बिस्तर पर देखनी की ऊ0रे0 (उत्तर रेलवे) के चादर बिछावल बा, हम त माने एकदमे हकबका गइनी अ साथे साथे हँसियो छूटल।

लूटे के त सब लूटेला अगर तनिको मौका मिले त लूटी लेकिन लुटलो भाँति भाँति के बा। केहू प्यार से लूटेला अउरु केहू बरियारी लूटेला। हमरा पहिला वाला लूट ठीक

लागेला, दूसरो वाला भी लोगन के ठीक लागत होई जइसे कि इनिका लागेला। लेकिन ऊ ठीक बा ना।

अगर केहू कहे कि अउरु कहबो करेला की जे जतने लूटऽता उ ओतने खुश बा, लेकिन ई बात सइ फीसदी गलत बा। ई बात हम अपना आसपास आँखि देखी के कहत लिखत बानी ना कि सुनल सुनावल। ऊपर हम बतवनी की कइसे उ कटहल पे से गिर के पैर तूरि के उहे पैर लेले दुनिया छोड़ देले अ उहे हाल उनकर बेटा के भी दिखत बा, उनकर लूटल त हमरा गाँव जवार में बहुते फेमस हऽ! अ औरु त औरु लोग उनका के बड़ा सान से देखेला, कबो कबो त हम सोच में पड़ जानी की ई लोग अइसन आँख कहवाँ से ले आइल बा की उनुका के अइसे देखत बा जइसे लूटल कवनो बढ़िया गुण होखे!

उ रेल से गाजियाबाद से मुर्गा लूट के गाजीपुर ले आवेले अउरु उहो जियत मुर्गा। सोचीं उ कइसन लुटेरा बाड़े। जतना के कमाई नइखे ओकरा से कई गुना जादा सम्पत्ति कइले बाड़े, तिन तिन गो किता कइले बाड़े, दू चार बिगहा कबाला लिखवले बाड़े! गांव जवार में चर्चा होला की देखे कमाई होखे त फलने निहन ना त ना होखे। लेकिन उहे बा कि ऊपर वाला के सामने केकर चलेला, पोता के अइसन दिमागी बीमारी भइल कि पूरा घर परेशान हो गइल अउरु उ निमनो ना भइल। हरदम खाती एगो पागल घर मे हो गइल, आपन उठल बइठल बन हो गइल। रिटायर भइला के बाद पैर उठल मुश्किल हो गइल जइसे कि इनिका बाप के कटहल पर से गिरला से पैर टूटल रहे अ उ टुटलें पैर लेके दुनिया छोड़ दिहले ओसहीं दसा इनिको लउकत बा।

जतना कमाई रहे अब धीमे धीमे झोरा भर भर के दवाई में लागे लागल। अब घर के कवनो दियरखा नइखे जहाँ दवाई नइखे राखल, कवनो कोना नइखे जहाँ दवाई के खाली पत्ता गिरल नइखे। कबो कबो त उनका घर मे घुसते खैराती अस्पताल जइसन महकेला जहवाँ खाली मरीजे बाड़े एगहूँ डाकटर अउरु नर्स नइखे।

हमरा दुख ए बात के नइखे कि उनकर घर अस्पताल हो गइल बा, दुख ए बात के बा कि ऊ अमियो ना समझे ले कि लूटल ठीक नइखे, इनिकर बाप लूट खसोट के मर गइले, इनिकर हाल इहे बा पूरा नौकरी भर लुटले आ अभी उनका जरी बइठला पे लूटे खसोट के बात होई की कहाँ से लूटीं की अउरु राजा हो जाईं।

इहे सब देख के हमके आपन बाबूजी के एगो बात हमेशा याद आवेला की 'लूटल निमन ना हऽ, लुटाइल निमन हऽ'। अउरु रहल बात प्यार से लूटे के त ऊ कहेले की प्यार के माने इहे होला की अपना के एकदमे लुटा दे, प्यार में त आदमी अउरु लुटावेला, लूटे के त बाते ना सोचेला! ••

■ 15 ए, 63 योगी कृपा, मनीष नगर शापिंग सेन्टर के पीछे, चारबँगला, अँधेरी पश्चिम, मुम्बई-53

मिथिलेश गहमरी के रूबाई

(एक)
तिरशूल प, तलवार प जे नाज करी
कइसे इंसानियत के लेहाज करी
दिल प्यार-मुहब्बत से भरल बा जेकर
इंसान के दुनिया मे उहे राज करी।

(दू)
मन नइखे तबो लाग में पड़हीं के पड़ी
दुनिया के ई दलदल में त गड़हीं के पड़ी
रिश्तन के तू अब केतनो दोहाई देलऽ
जिनगी के कुरुक्षेत्र में लड़हीं के पड़ी ।

(तीन)
धरती लगे, असमान के रुतबा ना मिली
हर केहू के, इंसान के रुतबा ना मिली
तरतीब से हर चीज रखल बा एहिजा
जुगनू के, कबो चान के रुतबा ना मिली ।

(चार)
आपन दुखा, गैर के लगे जनि उझिलऽ
पत्थर नइखे त वकत पर तूँ पघिलऽ
एह दौर के बाड़े जो महादेव बनल
मिथिलेश जहर पीयऽ,जहर जनि उगिलऽ ।

(पाँच)
ईमान के हीरा जदी टूटी मिथिलेश
इंसान के धूमिल होई 'ब्यूटी' मिथिलेश
छाती पर हाथ रखिके कहली 'ईया'
घर फूटी तऽ, गँवार लूटी मिथिलेश ।

■ मिथिलेश गहमरी, गहमर गाजीपुर (उ०प्र०)

''पाती'' रचना-मंच आ विश्व भोजपुरी सम्मेलन, बलिया के सालाना-आयोजन
(27 मई 2018)
स्थान-बापूभवन,
टाउनहाल बलिया (उ0प्र0)

''पाती'' अक्षर-सम्मान
विचार गोष्ठी, सांस्कृतिक
कार्यक्रम, कवि गोष्ठी

मुख्य अतिथि आचार्य नन्दकिशोर तिवारी एव विशिष्ट अतिथि लोग द्वारा सरस्वती चित्र पर माल्यार्पण के बाद दीप प्रज्वलन

आचार्य नन्दकिशोर तिवारी के सम्मान

डा0 अर्जुन तिवारी के सम्मानित करत संपादक

डा0 जयकान्त सिंह आ डा0 ब्रजभूषण मिश्र के सम्मान करत डा0 अशोक द्विवेदी

बायें से - डा० नीरज सिंह, डा० अर्जुन तिवारी, डा० नन्दकिशोर तिवारी, डा० जयकान्त सिंह, डा० ब्रजभूषण मिश्र आ कृष्ण कुमार

श्री अनिल ओझा 'नीरद' के अक्षर-सम्मान देत अतिथिगण का साथ संपादक

डा० प्रेमशीला शुक्ल के अक्षर-सम्मान देत अतिथिगण का साथ संपादक

श्री विजयशंकर पाण्डेय अउर डा० शत्रुघ्न पाण्डेय के ''अक्षर-सम्मान''

'अक्षर-सम्मान'' से सम्मानित भोजपुरी साहित्यकारन के साथ

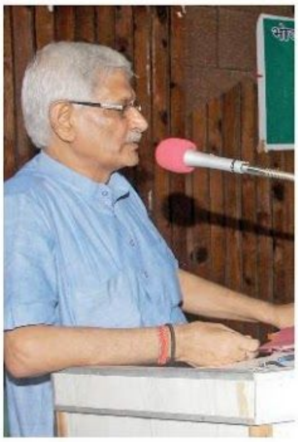

वक्ता गण क्रमश : अनिल ओझा 'नीरद', प्रेमशीला शुक्ल आ डा० नीरज सिंह

वक्ता गण डा० जयकान्त सिंह आ भगवती प्रसाद द्विवेदी

कुरता–कविलास

डॉ0 गदाधर सिंह

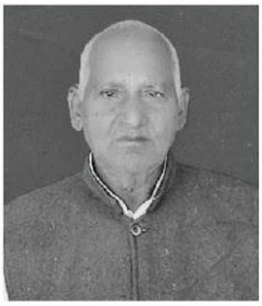

जब हम 'रामायण' सिरियल में श्रीरामजी आ लछुमन जी के बिना कुरता के देखनी त हमरा कवनो अचरज ना भइल, काहे कि उहाँ के साथ शर्त इहे रहे कि– 'तापस बेस बिसेस उदासी, चउदह बरिस राम बनबासी' बाकी 'महाभारत' सिरियल में पितामह भीष्म, आचार्य द्रोण, राजा धृतराष्ट्र आदि के बिना कुरता के देखि के हमरा भकभउँजा लागि गइल, मगज घिरनी लेखा नाचे लागल आ लगनी सोंचे कि इहाँ सभे बेसकीमती धोती पेन्हले बानीं, चमकत रेशमी चादर कान्हा पर धइले बानी आ कपार पर जड़ाऊँ पगरी बा, बाकी कुरता काहे नइखे? एगो पंडितजी से शंका–समाधान करावल चहनीं, त उहाँ के कहनी कि राजसभा कवनो यज्ञ–स्थली त ह ना। जब एहिजा जुआ खेलल जा सकता, एकवस्त्रा नारी के चीर–हरण हो सकता, त कुरता काहे ना पेन्हल जा सके? पंडितजी के ज्ञान त पोथिए तक रहे, राजसभा के मुँह त उहाँ के देखले ना रहीं, बस चारों खाने चित्त हो गइनीं।

हमरा बुझात बा कि भारत में खुलल छाती पौरूष के चिह्न माने के परम्परा चलि आवता। 'छाती खोलि के खड़ा भइल' सेंत–मेत के मुहावरा नइखे बनल। आजादी के जब लड़ाई छिड़ल रहे, तब सिर पर कफन बान्हिके आ छाती खोलि के जब शहीद चलसु, त सभ के सिर श्रद्धा से झुकि जात रहे। वीर पुरूष छाती खोलि के आमने–सामने लड़ेला आ कुटिल धोखाधड़ी से। कवनो आतंकी सोझा–सोझी खड़ा होके लड़ले होखे, ई केहू सुनते ना होई। सड़क पर डाइनामाइट बिछा के, गाड़ी में आर.डी.एक्स. भरि के रिमोट कन्ट्रोल से रास्ता चलत निहत्था मुसाफिर के मारेवाला, रेल, जहाज, बस के उड़ावे वाला आतंकी के रण बाँकुड़ा ना कहल जा सके।

कुरता आवरण के प्रतीक ह। साधु–सन्यासी, बनवासी–ई वर्ग एही से उघारे रहेला कि उनका आवरण के कवनों आवश्यकता ना रहें। गाँधीजी एही से उघारे रहत रहीं कि उहाँ के राजनीति में गोपनीय कुछ रहले ना रहे। बाकी उहाँ के चेला लोग जब गद्दी पर बइठल, त उहाँ सभ के खादी के कुरता में कई–कई गो जेब होखे लागल आ जे जतने बड़ रहे, ओकर जेब ओतने बड़ भइल। जबतक दिल्ली दूर रहेला, तबतक पारदर्शिता के नारा खूब लागेला आ जसहीं तख्ते ताउस पर बइठे के मौका मिलेला, जनता के सेवा के वादा भुला जाला। सैकड़े नब्बे फाइलन पर 'गोपनीय' लिखल रहेला आ विशेषत: ओह फाइलन पर त जरूर, जवना में मंत्रीजी–अधिकारीजी के करिखा लेखा करिया करतूत रहेला।

आजु–काल्हु पयजामा पर ठेहुना के नीचे तक कुरता पेन्हें के चलन नवही नेता लोग मे भइल बा। ई नेता के गणवेश हो गइल बा आ एकरा के देखते जनता के हिया से आवाज निकले लागेला कि–

'नेता रे नेता
कुंद–धार छुरे से गरदन को रेता रे रेता।'

एक बेर हिन्दू विश्वविद्यालय के कवनों जयन्ती–समारोह रहे। राजा–रजवाड़न

के भारी जुटान रहे। इहाँ सभे एक–से–एक जड़ाऊ कुरता–शेरवानी पेन्हि के आइल रहीं। उहाँ सभ के आभरण देखि के आँखि चउँधिया जात रहे। गाँधियो बाबा चहुँपल रहीं। उघारे–निघारे गाँधीजी जब भाषण देवे खड़ा भइनी, तब पब्लिक श्रद्धावश मुड़ी झुका लेलसि आ 'महात्मा गाँधीजी की जय' के नारा से आकाश फाटे लागल। गाँधीजी रजवाड़ा लोग से कहनी कि जतना कपड़ा अपने सभ अपना देही पर डलले बानी, ऊ सभ जनता के खून–पसीना के परिणाम ह। ओकरा में से यदि दू–चारियो गो सूत कम क देबि, त कतना गरीबन के तन ढ़ँका जाई। गाँधी बाबा के बात सुनते राजा–महाराजा लोग लाज से पानी–पानी हो गइलन, बाकी आजु के नेता लोग त लाज–सरम के घोरि के पी गइल बाड़न। ई लोग स्थितप्रज्ञ ह, कवनो हवा–बतास के असर ई लोग पर ना परे।

आदमी अपना शरीर के ढाँके खातिर भा सुन्दर देखावे खातिर किसिम–किसिम के कपड़ा पेन्हेला, बाकी सभन में कुरते अइसन विशिष्ट बा, जेकरा हाड़े हरदी लागल बा। हिन्दू धर्म में मान्यता बा कि जेकर बिआह ना होखे, ऊ नरक में जाला। एही से भोजपुरी क्षेत्र में परम्परा बा कि बिना बिअहले जे मुएला, ओकरा देही में हरदी मलाला। कुरते महाराज अइसन सौभाग्यशाली भइले, जेकरा जोरू जाँता बा। कुरता के मेहरारू कुरती हई। पगरी, टोपी, चादर, रूमाल, धोती, मोजा–केहू के जोड़ा–जोड़ी ना भेंटल। 'पगरी' स्त्रीलिंग ह, एकर पुल्लिंग 'पगरा' ना होखे। व्यंग्य से कहल जाला कि ऊ पगरा बन्हले बाड़ी।

बड़ा धोता, बाड़ा पोथा। पंडिता पगरा बड़ा।।

भोजपुरी में 'हाथी' स्त्रीलिंग हऽ आ 'हाथा' आ 'हथं' पुल्लिंग ह। बाकी एह तर्ज पर 'धोती' में 'धोता' या 'टोपा' ना होला। धोती त बेचारी अइसन अभागिन बिआ कि एकरा बिआह के जोगाड़े ना जुटल। बेचारी के अपना प्रिय के लक्ष्य क के गावे के मोके ना मिलल–

'तहरा खातिर बनल बाटे पुआ पकवान बा, खइबऽ कि करबऽ जिआन।

तहरा खातिर बनल बाटे लाली रे पलंगिया, राजा सुतबऽ कि करब हरान।।'

अब त धोती अतना बूढ़ि हो गइली कि अब कवनो नवही इनका पंजरो नइखन जात। नवयुवक वर्ग अब त बिआहो में धोती नइखन पेन्हत, पेन्हे के लुरिये नइखन जानत, करसु का। पगरी, टोपी–सभ के एके गति बा। अवश्य 'चदर' के 'चदरा' से निकाह करावे के कुछ लोग सोचल, बाकी चदरिये राजी ना भइल। चदरा राम बिछवने तक रहि गइलें– शरीर के आभरण बने के सोहागभाग उनका ना मिलल।

कुरता के तलाक देबे के प्रयास ना जाने कबसे हो रहल बा, बाकी कवनो वस्त्र में हूबि ना भइल कि एकरा के अपदस्थ कर सको। कुरता हर विरोधी के सामने 'न दैत्यं, न पलायनम्' के मुद्रा में डटल रहेले। कवि, पंडित, अँगरेज सभ के वक्र दृष्टि एकरा पर रहल बा। कवि लोग जोड़–जामा, साया, साड़ी, चोली, रूमाल–सभ पर गीत लिखलें, बाकी धोती–कुरता पर लिखे के बेरा ई लोग के सरस्वती मंद परि गइली। जनकपुर में रामजी के बिआह में सभे के जोड़ी–जामा पेन्हा दीहल गइल बाकी पियरी धोती आ कुरता इन्हनी लोग के ना लउकल।

'सखि परिछसु दुलहा अबबेला हो
दुलहा के देखे खातिर लागल बा झमेला हो
सुन्दर जोड़ा–जामा बाटे, टोपी अलबेला हो।।'

एगो कवि जी बजारे गइलें त धनिया के ब्लाउजे खरीदे में अँटकि गइले, प्रेम–रोग में अपना के कुरता खरीदे के उहाँ के सुधिए ना रहे–

'तोहरा के लाइबि धनिया कसमस चोलिया हो
अपना के सुन्नर बंगालिनि रावल मुनिया!'

एगो कविजी धोती आ अँगवछी के इआदो कइनीं, बाकी उहाँ के धोती अतना मइल रहेकि धनिया भिरी जाये के हिम्मत ना जुटा सकनीं। जेकर धोतिये मइल बा, ऊ कुरता कहाँ से ले आई–

'मइल धोतिया, धूमिल अँगवछिया।
तोहरा लाजें ना अइनी, आहो धनिया।।'

पंडित लोग हर प्रगतिशीलता के विरोधी ह। ई लोग घोषित क दीहल कि कुरता भारत के चीज ना ह, विदेशी संस्कृति के आयातित माल ह। ई लोग भुला गइल कि भारतीय–संस्कृति के निर्माण यक्ष–किन्नर–द्रविण या ना जाने कतना संस्कृतियन के मेल से भइल बा। महर्षि व्यास 'भागवत महापुराण' में गर्वपूर्वक स्वीकार कइले बानीं कि किरात, हूण, पुलिन्द, खस, आभीर, यवन–सभे भगवान विष्णु के नाम लेके पवित्र हो गइल आ भारतीय संस्कृति के महासमुद्र में मिल के एकाकार हो गइल। पंडित लोग के जीविका के आधार जवन ज्योतिषशास्त्र बा, ओकरा निर्माण में यवन विद्वानन के योगदान के सभे आदरपूर्वक स्वीकार कइले बा। कुरता के नकारे खातिर पंडितजी लोग एगो मिरजई चला देल। मिरजई डाँड़े तक होत रहे आ बटम के जगहा कपड़ा के बान्ह लगावल जात रहे, बाकी मिरजई के प्रचलन पंडित–वर्ग तक सिमटि के रहि गइल। इंग्लैंड में वर्मिंघम पैलेस

से जवन फैशन निकलेला, ओकरा के अपनावे खातिर जनता में होड़ लागि जाला। अफगानिस्तान–पाकिस्तान में लादेन के ड्रेस अपनावल गौरव के बात लोग समुझे लागल, बाकिर भारत के हवा–पानी अलगे किसिम के ह। एहिजा राम–कृष्ण–बुद्ध के पहनावा अपनावे के केहू सपनो में ना सोचल। वोट खातिर दिल्ली के जामा मसजिद् के इमाम के फतवा अपना पक्ष में करावे खातिर धर्मनिरपेक्ष नेता लोग इमाम साहेब के कदम–बोशी करे में तनिको लजाये–शरमाये ना, बाकी यदि छछात (साक्षात्) कृष्णो भगवान आइके चुनाव में वोट मांगसु, त लोग कहीं कि भगवान! हम रउआ के पूजबि, उठि–सूति के 'त्वमेव माता च पिता त्वमेव' गाइबि, बाकी वोट जातिए के देबि। रोटी आ बेटी जातिए के देबे के चीज ह। पंडित वर्ग सोचत रहे कि जब हम मिरजई डटा लेनी, त सभे हमार पिछलगुआ बनि जाई, बाकी केहू मिरजई के घासियो ना डालल।

अँग्रेजी राज्य के लक्ष्य खाली राजनीतिक विजय ना रहे, बल्कि सांस्कृतिक–विजयो रहे। अँग्रेजी शिक्षा, कोट–पैंट, क्लब, डांस आदि एकरे माध्यम रहलें। सभ्य परिवार के लइका–लइकी धोती–सलवार छोड़ि के पैंट–कमीज पर उतरि आइल बाड़ी जा। ई लोग के होटल–क्लब सिनेमा में अर्धनग्न अवस्था में डांस करत देखि के एह सांस्कृतिक आक्रमण के सफलता के रहस्य समुझ में आ जाता। एह सांस्कृतिक–अभियान के शिकार कुरतो भइल बा, बाकी जइँसे रावण के मुष्टिका–प्रहार से हनुमानजी के तनी–मनी चोट लागल, बाकी हनुमान जी झट से धुरि झारि के खड़ा हो गइनी, ओसहीं कुरता–धोती खाड़ हो गइल। भारतीय प्रजातंत्र में पैंट–कमीज, कोट, टाई पेन्हेवाला लोग हाकिम–हुक्काम हो सकतारे, बाकी प्रधानमंत्री होखे के सौभाग्य आजु तक कुरतेधारी के प्रापत भइल बा। जवाहरलाल जी, शास्त्रीजी, मोरारजी, राजीवजी, पी0 बी0 नरसिंह राव, देवगौड़ा, बी0 पी0 सिंह, चन्द्रशेखर, अटल जी– सभे कुरता वाला भइल। हिन्दी के प्रख्यात लेखक आ कवि लोग के शरीर के सौंदर्य बढ़ावे के सौभाग्य कुरते के मिलल। एकाध गो के छोड़ि के समूचे राज्य के मुख्यमंत्री लोग कुरतेधारी बा। नीचे भले धोती, चुड़ीदार, चुस्त आ ढीला पाजामा होखे, बाकी कुरता जरूर रही। अब त पूरब–पच्छिम के मेल के रूप में पैंट के ऊपर कुरता पेन्हल फैशन में आ गइल बा। जइँसे भगवान के कछुआ, सुअर, सिंह से लेके आदमी तक किसिम–किसिम के अवतार भइल बा, ओइसहीं कुरता अपना स्वरूप के विस्तार कइगो रूप में कइले बा। नृसिंह रूप में भगवान जहाँ कठोर बानीं, उहँवे मुरलीधर रूप में उहाँ के नयनाभिराम मोहक रूप बा। तीर–धनुष लटकवले, लमहर दाढ़ी पर पंजाबी कुरता डलले, घोड़ा पर चढ़ल गुरू गोविन्द सिंह जी के चित्र देखते औरंगजेब के दिने में जोन्हीं लउके लागत रहे। गेरूआ कुरता में स्वामी दयानन्द आ विवेकानन्द के चित्र देखके हर भारतीय के हृदय में उहाँ सभ के प्रति श्रद्धा भाव उमड़ि आवेला। लखनउआ कुरता पर लखनउआ टोपी पेन्हला पर रईसी संस्कृति प्रतिमा मूर्तिमान हो जाला। अइसहीं बंगाली कुरता आ मद्रासी कुरता विद्वता आ शालीनता के प्रत्यक्ष प्रमाण बनि जाला। कुरता के स्थिति इहे बा कि 'जाकी रही भावना जैसी, प्रभु मूरति देखी तिन तैसी'। जे जवना भाव से कुरता के अपनाई, कुरता ओही भाव के साकार प्रतिमान बनि जाला।

कुरता भारतीय संस्कृति के मूर्तिमान प्रतीक ह। बरियात में कलप दीहल कुरते–धोती या कुरता–पायजामा सोभेला। असहीं होली में कुरते के राज रहेला। पैंट पर रंग परि गइला पर पैन्टवाला के मुँह के रंग फटनासी आम लेखा हो जाला। जब धोती–कुरता या पायजामा–कुरता पर ससुरारि में साली–सरहज लोग रंग डालेली, त करियो चेहरा गुलाब लेखा लिखि जाला। होली में सार लोग आनन्द के खास आलम्बन बनि जालें। एक बेर होली में हमार दू जाना सार अइलें। गाँव के नवहिन के कहला में परि के दूनों जाना शिवजी के बूटी छनले। उनकर बहिनि दूनों जाना के कुरता–पयजामा सिया देले रहलीं। नहा–धोके जब ऊ लोग कुरता–पायजामा पेन्हें लगले, त एक जना के कुरता घोघर हो गइल आ पायजामा धूरि में सोहरे लागल आ दोसर जाना के कुरता अँटबे ना करे आ पायजामा ठेहुने तक भइल। दूनों जना के दशा देखि के नवही कूटि करे लगले। सार लोग सोचल कि दरजिया गड़बड़ क देले बा। ऊ लोग ना आव देखल ना ताव देखल पहुँच गइलनि दरजी भिरी आ लगलन गावे आ गरिआवे कि 'छोट कइलस कुरूतवा, दरजिये बा चोर'। दर्जी पहिले घबड़ाइल, बाकी माजरा समुझते लागल मुसुकाये। सार लोग के अकिल पर चुटुकी लेलसि, तनी गरिअइबो कइलसि। बात ई भइल रहे कि भाँग के नशा में बड़कू के कपड़ा, छोटकू आ छोटकू के कपड़ा बड़कू धारण कर लेले रहे लोग। अइसने घटना से होली के हुड़दंग मनोरंजक हो जाला आ सभे मनावेला कि होली बार–बार आओ। ●●

❑ वीर कुँवर सिंह विश्वविद्यालय परिसर, आरा (बिहार)

फेरू बैतलवा डाढ़ी-डाढ़ी

कृष्ण कुमार

'गाँव आ गंवई संस्कृति' पर केन्द्रित भोजपुरी दिशाबोध के पत्रिका 'पाती' के विशेष अंक 81–82 में 'हमार गाँव' स्तम्भ के तहत हमार लेख 'हमार गाँव लहुरी दिल्ली' सितम्बर 2016 में छपल रहे। ओह आलेख के पांडुलिपि के तइआरी के बेरा हमरा प नियति के बहुते बरिआर झोंका आइल। ओहि घरी धरनी गुजरि गइली। तब हम उनका श्राद्ध–करमठ में जी–जान से भीरल रहीं। उनका मुअला अबहीं जरिये तीन दिन भइल रहे कि अचके में 'पाती' के यशस्वी सम्पादक डॉ0 अशोक द्विवेदी जी के फोन आइल, ''तब, का समाचार...! सभ ठीक–ठाक बा नू... ? 'पाती' खातिर लेख लिखा रहल बा...?''

''ना सर...! हम त बड़ा अफदरा में घेरा गइनी। परसों घरनी गुजरि गइली। एह अंक में हमरा के छोड़ि दीं। बाद में कबो....!''

''ओ... हो.... हो। ई का सुनवनी। ई त रउआ साथे बहुते अन्याय हो गइल बाकिर का कइल जा सकऽता? ई दुनिआदारी हऽ। सभका साथे ई सभ होला। संसार के इहे साँच हऽ। एह संसार में केहु, केहु के ना हऽ। रउआ स्वयं में अकेले रहीं, अबहियों बानी आ भविष्य में भी अकेलहीं रहे के बा। राउर अस्तित्व केहु के साथे संबंध बनल आ खतम हो जाये के अधीन नइखे। आदमी के पारिवारिक संबंध जेवना के अति आत्मीय आ खून के संबंध कहल जाला, जेकरा से आदमी अति स्नेह करेला, जेकरा के आपन कहत–कहत ओकर जीभ कबो ना थाके आ जबन सांसारिक दृष्टि में बहुत महत्वपूर्ण आ मजबूत माल जाला, ऊ संबंध कबो स्थाई ना हऽ। ऊ जब एह संसार मे विदा हो जाला तब आदमी के दिमाग के जोरदार झटका लागेला आ सच्चाई प्रकट हो जाला कि एह जगत में केहु, केहु के ना हऽ। सभ केहु रास्ता में सफर करत जात्री मात्र हऽ। लोग बदलेला, समाज बदलेला, दुनिआ बदलेला, आदमी के समय आ अमिर भी बदलेला बाकिर सत्य स्वरूप आदमी स्वयं के स्वयं रहेला। आदमी के ई स्वरूप कबो ना बदलेला। जब रावा एह सांच के गहनता से अनुभव करबि तब रउआ एह वियोग पर दुख तनिको ना होई। एह सांच में ही जीवन के वास्तविक सार छिपल बा। एह से अपना मन के पोढ़ क के अपना जिमवारी आ रचनात्मक कर्म में रावा जुटि जाये के बा। समय के साथे सभ समा जाई...।''

कवि, कथाकार डॉ0 अशोक द्विवेदी जी के रचनात्मक दबाव आ घरनी खातिर मातमपुर्सी के ऊहां के सुघर–सुन्नर देशना सुनिमन थिराइल। धरनी के बिछोह के घाव गंवे–गंवे भराये के शुरू भइल। लग्गी–बरछी कोना ओठघवनी, आ पूरा जोश–जुनून के साथे अपना गांव के दस्तान लिखे में मशगुल हो गइनी। ब्राम्हण–भोज के ठीक एक दिन पहिले रफ पांडुलिपि हमार पूरा हो गइल। जब ओकरा के प्रेस–कॉपी बनावे खातिर पेटपोंछनी बेटी जया के सउँपनी तब ऊ आलेख एकतीस पृष्ठ के

हो गइल। फेरा में परनी। छूरा–कइंची चला के ओह आलेख के छोट कइनी। छव पृष्ठ के आलेख 'हमार गाँव लहुरी दिल्ली' बना के 'पाती' में प्रकाशन खातिर भेजनी। प्रकाशित भइल। बाकिर...

मन के मोह रही हो उधो, मन के मोह रहीं। ओह आलेख के छँटनी कइल दू गो बतकही आजु ले हमरा मन के सालऽता। पहिला पटकन–लठकन के 'झटकाय नमः' के दू गो कथूली आ दोसर हमरा गांव के 'आरती'। एह आलेख के लिखे के मुख्य उद्धेश्य इहे बा। काहे कि एह दूनो दस्तान के छोड़ला के बाद हमरा गांव के बखान अधूरा रहि जाई। एह से आई आ ओकरो के सुनलीं...।

हँ, त हमरा गांव के पटकन आ लठकन दूनों जाना जंउआँ भाई रहन। अइसे एह घरी पछिम के शहरन में लोग कमाये–धमाये खातिर पालाएन करि रहल बाड़ें, ओसहीं ओह घरी हमरा गाँव के ढेर लोग कलकात्ता जा रहल। ओइजा चटकल में असानी से काम मिल जात रहे। हमरा गांव के स्व0 गांधी जी मिश्र बंगाल चम्पिअन ठकइचा रहीं। ऊहाँ के ढ़ेर लोग के हिन्द मोटर आ चटकल में नोकरी दिअवले रहीं। पटकन आ लठकन के मन मे आइल कि हमनिओ के दूनों भाई कलकात्ता घुमि आई जा। देखि आइल जाउ कि कलकात्ता कइसन जगहा बा। दूनों भाई अपना जातरा के तइआरी में लगलें। माघ के महीना रहे। दूनों भाई दू टीन घीव लेके बेचे खातिर कलकात्ता चललें। बड़का टीना में नीचे भर टीन डालडा भर लेलें आ ऊपर से अंगुरी डुबे भ भंइँसी के छाल्ही वाला घीव डालि के दूनों टीना के मोहड़ा टन्च क देले। कलकात्ता पहुंचते दूनों भाई कपार प टीना धइले फेरी लगावे के काम लगवलें, ''घीव ले लऽ । घीव ले लऽ। गांवे के भंइस के एक नम्बर के घीव...।''

एगो मारवाड़ी के कान में दूनों भाई के बोली पइकाल। ऊ केवाड़ी खोलि लाद सुहुरावत दूनों भाई के रोकलें, ''आवऽ लोग भाई, देखीं तोहार घीव कइसन बा....।

ऊ टीना में अंगुरी डूबा के घीव निकललें। सुंघलें। छाल्ही से निकालल नमरी घीव, डाँकट रहे। तजबीजे लगलें। मेन रोड के निअरे मरवाड़ी भाई के घर रहे। एहि बीचे एगो घटना घटि गइल। रोडवा प एगो बस आगा–आगा जात रहे आ ओकरा पीछा एगो कार। देखते–देखत बसवा के ओमरटेक कके करवा आगा निकल गइल। तब लठकन से ना रहाइल। गुमी तुरत पटकन से कहलें, ''ए भइया, देखऽ ना हई अचरज। ई त मतरिआ के तड़िआ के बचनिआ आगा निकल गइल....।''

पटकन कहलें, ''आरे ससुरा, चुपचाप रहु ना। हँसुआ के बिआह में लगले खुरपी के गीत गावे। ई कलकात्ता हऽ। अबहीं ई का देखले, एइजा एक से एक चीज देखवे...।''

दूनों भाई के बतकही सुनि ऊ मारवाड़ी भाई मुस्कइलें। उनकर विश्वास ओह घीव प पोखता भइल। तब ऊ तनिको देरी ना कइलें आ मोल–तोल कऽके झटकाहे दूनों टीना के घीव जोखवा लेलें। दाम देलें। पटकन रोपेया चेटिअवलें आ दूनों भाई घुमे–फिरे खातिर शहर में पेयान कइलें....।

कहाब हऽ–कबहूँ बिहार के सबसे बड़ जिला शाहाबाद रहे, जवन आजु चार जिला में बँटा गइल बा–भोजपुर, बक्सर, कैमूर आ रोहतास। जवना घरी शहाबाद जिला एकछ रहे, ओह घरी हमरा गांव– जवार के पुरनिआ लोग परतोख देत रहन, ''जग में जगदीशपुर, सहर में सासाराम, गंवई में दाउदनगर, चट्टी में डुमराँव...।'' ई चारों जगहा आजुओ कायम बा बाकिर जिला बंटा जाये से ई चारों जगहा अलगिआ गइल बा। बाकिर आज बे लेखा आजुओ चहल–पहल के माने में ओहु घरी से बीस भइल बा। हमरा गांव के लोग आजुओ डुमराँव बाजार करे जालें। बाजार के दिने तऽ अइसन थक्का–मुक्की मचेला कि ददरी मेला झूठ हो जाला। लइकाई में हमहूँ बाबुजी के साथे डुमराँव बाजार गइल बानी। किराना दोकानिन के मोहड़ा नीमक के बोरा आ धरती में गड़हा खोन माटी के बड़का नाद में करूआ तेल से लबलबात रहे। आजु लेखा पाउच–टीना में तेल ना बिकात रहे। कोल्हू में तेल पेरात आ नाद में ले आके उलाट दिहल जात रहे। तब रोपेया के भैलू अधिक रहे आ सर–समान के भैलू कम। ओह घरी गदहा जिलेबी खात रहे, आजु त आदमी के जिलेबी दुलम भइल बा। हमरा इयाद बा –'टके सेर खाझा, टके सेर तेल तब हमरा गाँव के कोइलरी अपना मीठ सुर में गावत रही, ''तीसी तेल, टके सेर, ले आउ पइसा, ले जो तेल...।'

गुलाम अली के गावल 'निकाह' सिनेमा के ऊ गीत, ''चुपके–चुपके रात–दिन आँसू बहाना याद है। हमको अब तक आशिकी का वो जमाना याद है...।''– लेखा हमरा इयाद आवऽता, हमरा गाँव के दक्खिन आरे कोनहरा बधारी में आहरा के किनारा डाँगर चिरात रहे आ ओकरा चमड़ा से हर के हरिस आ जुआठी जोड़े खातिर नाधा,

हर हाँके खातिर पैना के फीता आ चमरूआ जूता गाँवहीं में बिरधा, मुनेसर, जागा, नरेश आ देऊ भाई बनावत रहन। बाजार के दिने ऊ लोग एह चमड़ा के समानन के बेचे खातिर रघुनाथपुर, जगदीशपुर आ डुमराँव बाजार में जात रहे लोग।

समय करवट मरलस। जइसे कलिकाल के गाल में सदाचार समा गइल। कुछ ओसन्हि ट्रेक्टर जुग आइल। बैल–बाछा कसाई हथिअवलें। हर–हेंगा, जुआ–जुआठि पटनी पर टँगाइल। मजूरा भाई पेट के जोखम के जोगाड़ मे पच्छिम ओरे पेआन कइलें। गाई–भइँस बाँचल बाड़ी सऽ। डाँगर चीरे वाली चटकी चुपाइल। माल–मवेशी मुअला प दफना दिहल जा तारी सऽ ना त ओहनिन के बुढ़ाते औने–पौने के भावे कसाई ले उड़ऽ तारें। बाकिर चमरुआ जूता पेन्हे वाला रिवाज आजुओ कायम बा । तेल से तर कइके हमारा गाँव के बूढ़–पुरनिआ आजुओ पेन्हेलें...।

भाव के भूखा हम बहकि गइनी। माफ करीं, ढेर देरी भइल। चमरुआ जूता के जोगाड़ में दूनों भाई पटकन आ लठकन बाजार प पहुँचि गइल बाड़न। माघ के दुसार परऽता। हम बूझऽ तानी, रउआ जड़हि गइल बानी। रउआ चाह पीये के तलब महसूसऽतानी। एह से चलीं डुमराँव बाजार। ओइजे भुनेसर भुसकुलिआ के दोकानी प चाह पीये के आ ओइजे से दूनों भाई के जूता वाली वाकया देखि लेवे के....।

हं, त ई डुमराँव के जूता बाजार हऽ। खुँटियाखाप जूते जूता : चरमराये वाली अंगरेजी पनही से लेले चमरुआ जूता तक सभ एहिजा बिकाला। बाजार में ढुके से पहिलहीं राहे में दूनों भाई जूता हथिआवे के जोगाड़ के गोटी सेट कऽ रहन। पटकन कहलें, ''तें पहिले पनहीं के दोकान पर जाके अपना खातिर सुघर पनही पसन क के, अपना गोड़ में पहिर लिहे आ हमरा खातिर अपना से तन्नी बीस पसन क के अपना आगा धऽ के चुका–मुका बइठि जइहे। हाथ के इशारा मरिहे। हम गारी देत तोरा पँजरा जुमि आइबि। आपुस में हाँथा–बाँही करे के। एहि बीचे ते जूता पेन्हले आन्ही लेखा दोकानी प से रफ्फू–चक्कर हो जइहे। हम आपन वाला दूनों पवाई तोरा के मारे खातिर तड़ातड़ फेंकबि। पीछा–ताकत दूनों पवाई पनही लोकत तें परा जइहे। हमहूँ तोरा के लखेदत बाजार के धरम–धक्का में बैतरनी पार कऽ जाइबि। फेर हमनी के बाजार पार क के गोलिआ जाये के...।''

''आरे महराज....। खाली चाहे मत पीहीं। ऊ देखीं दक्खिन ओर के 'हॉरर–सीन'। कइसे लठकन आपन पनही पेन्हले आन्हीं के बतास भइल बाडें आ पटकन आपन पनही चला के फटाफट मारऽ तारें। देखीं अब दूनों भाई सोझ उत्तर ओरे स्टेशन रोड धइले लम्मी लेले। बुझाता, राज हाई स्कूल से एने, लोग रूकबे ना करिहें...।''

माघ के जाड़ा कठुआइल नया चमरूआ जूता लठकन के गोड खूने–खून हो गइल। दूनों भाई बाजार के बहरी होके गोलियाइलें। लठकन दूनो पावल पनही देले भइया के। पटकन नपलें। बड़ा साइज में पनही आँटल पनही से भाई के कटाइल गोड़ देखि कहलें पटकन, ''चलु...चलु...। एह से तनिको नइखे घबड़ाये के...। पनही से कटाइल घाव पनही पेन्हे से ही ठीक होला। पनही जब तेल से चभोराइ जाई त अपने आप मोलायम हो जाई....।''

''तेल के जोगाड़ कइसे होई, भइया...?''

''तें, त बड़ बुरबक आदमी बाड़े। तोरा इहे भुलाइल बा...! राजा होई त का खाई...? आरे, जब रजे हो गइल त ओकरा खाहीं के दुख होई। पनही के उपाइ हो गइल त तेलो–तासन के जोगाड़ हो जाई। तें चुपचाप रहु ना। चलु किराना बाजार ओरे....।''

''का कहऽ तानी! लेट होता। गाँवे जाये बा। आरे महराज! बलियें नू जाये के बा। ई कवन ओहटा बा का. ..? पान स तेरह पकड़े के बा....! आरे साहेब, छोडीं ई सभ परगन। कथा निअराइल बा। पटना साहिब गइल से चलि जाइब। तनिको मति घबड़ाई।। हम रउआ साथे बानी। दिक्कत बुझाई त हम रउआ के टीसन तक अरिआति के शटल में बइठा देबि। बक्सर से बलिया राते–दिने गाड़िन के रेलमरेल रहेला। तनि ए–सा सबुर धरीं ना होखे त एक बेर अवरू चाह पीलिं। हऊ देखीं, दूनों भाई फेरू बाजार ओरे आवऽ तारें...।''

''हँ जी, ठीके कहऽ तानी। हउका हो दे किराना दोकानिन के सोझा दूनों भाई खाड़ होके आँखिन से कुछ इशारा करऽ तारें....।''

''सुनल जाउ, आँखिन के कामे हऽ इशारा करे के। साँच कहीं तऽ आँखिन में कवनो खामी ना होला। खामी तबे शुरू होला, जब भीतर के इरादा गड़बड़ होखे लागेला। असली बात ई हऽ कि जब नीयत रही। मछरी के मटकी मल्लाह चीन्हेला। हमरा गाँव के ई दूनों जाना जंऊआँ भाई हवें। एह से हम एह लोग के खेलकटई से रउआ के पहिलहीं वाकिफ करा दे तानीं। ई दूनो भाई पनही में तेल डाले के फिराक में चलल बाड़ें। ओह

किराना दोकानी के अगवास में गाड़ल नाद के तेल में कूदिहें आ राहु बाबा के पूजा के पूर्णाहुति हो जाई...।''

हँ, त किराना दोकान के सोझा दूनो भाई धकिआवत जुमलें आ दवरे प' ले फाएट, दे फाएट मचा देलें। आपुस में लड़े खातिर अइसन धोकचा बन्हलें कि लोग बटोरा गइल। धरा–धरउअल मचि गइल। भइल धसोरा–धँसोरी। पलक मारते दूनों भाई एके साथे करूआ तेल वाला नाद में कूदि गइलें। दोकानदार माटी के माधो बनि गइलें। अपना दोकानि के दुर्दशा देखि सनाका खा गइलें। कपार के बार खझुलावत अहुत्था होके ऊ कहलें, ''कवना मुँह झंउँसा के मुँह देखि के आजु उठनी हाँ कि अइसन मूढ़न से पाला परि गइल। सभ गुर गोबर क देले सऽ। जलदी एइजा से भाग ना त अबम्हीं थाना में खबर करऽ तानी...।''

दोकानदार के बतकही सुनि दूनों भाई दनाक, से नाद के तेल से बहरी निकलले आ पनही कचकचावत अपना गाँव के राह धइलें....।

हम रउवा के जनाइ दे तानीं कि पटकन आ लठकन पेशेवर चालबाज ना रहे लोग। कबो–कबो 'झटकाय नमः' के सिद्धांत प आपन हाथ साफ क लेत रहन। पटकन त हमरा इयाद नइखन परत बाकिर लठकन के डंटा लेके ठेघत आजुओ तनि–तनि इआद आवऽता। हमरा गाँव के लोग आज तक एह दूनों भाई के कथा कहेलें। आजु ऊ दूनों भाई नइखन। कालपुरूष अपना निठोह पंजा में ओह लोग के दबोचि लेले बा। ओह लोग के करतब के बखान रउआ, आन गाँव के आदमी के सुनावत हमरा मन के बेकली बढ़ल जाता। हियरा हुनकि के भीतरे–भीतरे संउँसे देहिं में बीखि भर देले बा। मन अड़इल–हठी घोडा लेखा अलफ लेता आ अनेक प्रश्नचिन्ह हमरा मन में धुंआँ–धुंआँ लेखा उभरऽता– ''केहू रोटी फेंकऽता, केहू ओकरा खातिर चोरी करऽता, केहु गद्दी पर बइठल केहु के गरदन काटऽता आ केहु आधा–अधेला के दिकदारी के चलते पनही हड़पडता। समझीं, त एक लेखे सभे चोर बा। एह से एह पर ढेर माथा–पेच्ची नइखे करे के काम! आई, आगा डगरीं जा....।''

नयका कहाब हऽ–सढुआना नाता, आठ कमनिया छाता आ सत नाराएन बाबा के कथा। आजु के चलन में एह तीनों के बहुते लोग जीव–जान से निभा रहल बाड़े। बाकिर हमरा समझ से ई सढुआना नाता, कइसन नाता हऽ जी...? कोंहार किहाँ हाँड़ी बिकात रहे, एगो रउआ किननी, एगो हम किननी। तब ई कइसन नाता...? जहंवाँ तक छाता के सवाल बा, त ई ठीक बा। घाम–बरखा दूनों से बचावऽता चाहे ऊ आठ कमानी के होखे भा दस कमानी के। एह से कवनो बने–बिगड़े वाली बतकही नइखे। बाकी बाँचल सतनाराएन बाबा के कथा। त ई सवा सोरहो आना ठीक बा। कम खरच में फरिआ जाये वाली कथा। साँऊज होखे त फल, पचमेवा, ना त रोट, पनजीरी आ पंचामृत। रहल बात पंडित जी के दान–दक्षिना आ नेग–चार के। त एहू में ढेर तूल–तबालत नइखे। सपरे तवन दे दीं ना त आँखि गुंड़ेर दीं। हाँ...हाँ में सभ फरिआ जाई....।

रउआ गाँवे सतनाराएन बाबा के कथा के का हिसाब–किताब बा, ई त अपने के जानत होखबि, बाकिर हमरा गाँवे एह कथा के बहुते प्रचलन बा। बिआह–शादी के मोका प तिलक आ चउठारी के दिने एह कथा के त करारी बड़ले बा। साथे छोट–मोट भखवटी के पूरा भइला प एह कथा के लोग कहवावे ला। गहराई से सोचबि त रउआ बुझाई कि एकर दार्शनिकता आ वैज्ञानिकता बहुते अनोखा बा। कवनो धार्मिक संकल्प के साथे कई गो बतकही जुटल रहेला। ब्यष्टि के समष्टि से, छोट के बड़ से आ सीमित के विराट से संकल्प के माध्यमें से जोड़ल जा सकऽता। एह से एकर संबंध सृष्टि के शुरूआत से आजु तक रहल बा आ आजुओ ई आदमी के अभीष्ट में समाइल बा...।

जइसन कि रउआ जानऽ तानी सतनाराएन बाबा के कथा के बाद हवन होला आ पीठियाठोक आरती गवाला। छेरा नदी के किनारा बक्सर जिला के आखिरी प बसल हमार गाँव बराढ़ी आ हमरा गाँव के सटले पड़ोसी गाँव भदवर में जवन सुन्नर–सुघर आरती गवाला ओकर बखान कइल हमरा कलम से बाहर के बतकही बा, काहे कि हम ताल–सुर के मरम ना जानीला। हमरा गाँव के आरती अतीत के इयाद मत बनि जा, एह से हम ओकरा के रउआ सोझा प्रस्तुत कर रहल बानी। हमरा गाँव के आरती बसंत के सुर–ताल में होला। नाभी से जोर लगा के बसंत गवाला। साज–बाज त आजुओ सोरहो आना सही गिरेला बाकिर बढ़ती के बेरा, भीतरी हुलस पतरा जाये से आवाज छितरा जाला। कतना गवनिहार लोग के कंठ प ताला लटकि जाला। बाकिर एह खातिर का कइल जाई? गुर के लड्डू टेढ़ो भला। उपास से पतोहि के जूठ निम्मन। अपना जिनिगी के उनहतरवाँ बसंत देखे के आसरा लगवले, हमरा ई कहे में तनिको गुरेज नइखे कि लडकाई से लेले आजु तक हमरा गाँव के लोग ओही

सुर–ताल में सतनारायन बाबा के आरती गावेलें, जइसे पहिले के पुरनिआ लोग गावत रहन। गमछा में ढोलकी कमर में बान्हि के ठकइचा जब बसंत राग में आरती के ठेका ठोकेलें आ साथे झाल–झाँझ के मीठ सुर–ताल के मिलान से एगो अजबे समा बन्हा जाला। बुझाला, जइसे भादो–भदवारी फगुनहटि में बदलि गइल...।

पानी प धरती आ बिना पाया के आसमान बना के माया रूपी नगी रचे वाला ऊ इंजिनिअर बहुते अजूबा बानीं। एह से आईं आ ओह इंजिनिअर के खुश करे खातिर हमरा गाँव के सुर–ताल में 'आरती' सुनीं– ''आऽऽऽऽऽऽरऽऽऽती लागे हो, ए लाला, रउरी आरती लागे।।2।।

1. लाल के ऽऽऽथी, लाल केथिन के, दीयवा ए बारो केथी केरे बाती। आ...ह...हो लाल, केथी केरे बाती।। 2।।

केथी के तेल चुआई के हो, केथी के तेल चुआई के, बारो सारी राती हो। ए लाल रउरी आरती लागे। आरती लागे हो, ए लाल बारो सारी राती हो ए लाल रउरी आरती लागे।। 2।।

2. लाल ए तऽऽऽन, लाल ए तन के, दीअवा ए बारो मनसा के रे बाती। आ...हो....हो लाल मनसा के रे बाती ।। 2।।

प्रेम के तेल चुआई के हो, प्रेम के तेल चुआई के बारो सारी राती हो। ए लाल, बारो सारी राती हो। ए लाल रउरी आरती लागे, आरती...

3. लाल साऽऽऽ वऽऽऽन लाल, सावन–भादों, उमड़े बरखा रीतु आई। आ...ह... हो लाल बरखा रीतु आई ।। 2।।

श्याम घटा घनघेरी के हो, श्यामघटा घनघेरी के मेघवा झरी लाये हो ए लाल मेघवा झरी लाये हो। ए लाल रउरी आरती लागे, आरती...

4. लाल सेऽऽऽज, लाल सेज में डाँसो, श्याम के मोती माँग सँवारी। आ....ह.... हो लाल मोती माँग सँवारी ।। 2।।

पंथ मैं हेरों श्याम के हो, पंथ में हेरों श्याम के, अजहुँ नहीं आये हो।

ए लाल अजहुँ नहीं आये हो। ए लाल रउरी आरती लागे। आरती लागे हो...

5. लाल पाऽऽऽती, लाल 'पाती' में लिखो, श्याम के फुलवा छितराई। आ....ह....हो लाल फुलवा छितराई ।। 2।।

बिरा–बिरहिन श्याम के हो, बिरा–बिरहिन श्याम के, अपने कर लिन्हा हो।

ए लाल अपने कर लिन्हा हो। ए लाल रउरी आरती लागे आरती लागे हो, ए लाल...

एह आरती के गवला के बाद गवनिहार हाँफत–हाँफत पसेना जालें। खड़े–खडी पाँच ताल बसंत राग गावल बहुते टेढ़ खीर हऽ। उहो मात्र आधा भा एक मिनट के ठहराव पर, एह में लोग गरमी मुआवे खातिर ओहि ताल–सुर में झटकाहे एगो झूमर गावेलें। लीं, ठहरि गइनी त अब ओकरो के सुन लीं–

नाऽऽऽ चोऽऽऽगे, गुन गाओगे। आहे नाचोगे गुन गाओगे, रघुनन्दन आगे, नाचोगे, रघुनन्दन आगे। नाचोगे, रघुनन्दन आगे....

1. केऽऽऽथी के लहँगा, केथी रस चुनरी हो ।। 2।।

आहे केकरा आगे झमकाओगे ।। 2।। रघुनन्दन आगे, नाचोगे रघुनन्दन आगे...

2. भऽऽ कऽऽऽती के लहँगा, प्रेम रस चुनरी हो ।। 2।। आहे राम के आगे झमकाओगे।। 2।। रघुनन्दन आगे, नाचोगे रघुनन्दन आगे...

3. बाऽऽऽजू ए बन्द आनन्द पहिनि के हो ।। 2।। आहे उमकि–उमकि गुन गाओगे ।। 2।। रघुनन्दन आगे, नाचोगे रघुनन्दन आगे....

एह मीठरस आरती आ झूमर के साथे हम अपना गाँव के दास्तान के विराम दे तानी। आजु भारत के 'स्मार्ट गाँव–बिजली, चमचमात सड़क, सभ घरन में शौचालय, चौमुहानन प सी सी टी वी कैमरा, सभ सुविधान से भरल–पूरल स्कूल, सार्वजनिक वाटर प्यूरिफायर, वाटर कूलर, अंडरग्राउंड ड्रेनेज सिस्टम, सोलर लाइट, ई–प्रशासन, वाई–फाई सुविधा, पबिलक एड्रेस सिस्टम, सोसाइटी के आपन मोबाइल ऐप से लैश हो गइले सऽ, ओइजे हमार गाँव एह सभ सुविधन से दुअराइल बा। ऊ अपना पथराइल आँखिन से सेवाती के सितुहा लेखा आसमान के ओरे टकटकी लगवले बा कि कब हमरो तारनहार से भेंट होई...? ●●

❑ महावीर स्थान के निकट, करमन टोला, आरा-802301 (बिहार)

सम्मान समारोह

राजगुप्त

एक हाली के बाति ह। चुनाव के समय रहे। पार्टी प्रचार खातिर मंत्री जी के शहर के अवाई रहे। जोरदार तेयारी होत रहे। दू दिन पहिलहीं से मारे जे कहां–कहां से किसिम–किसिम के वर्दी वाला पुलिस डेरा–डन्डा डालि लेले रहले। करिया बादर अस घनघोर घेराबन्दी देखि सभे दांते अंगुरी काटि लिहल। एगो मामूली चिरई भी कवनो कोना–अंतरा चूं ना कऽ सकी? अइसन जबरदस्त पहरा? बाप रे बाप? सभा के शोभा खातिर कुछ मानल–जानल समाज के चुनिन्दा आदमियन के सम्मानित करेके के विचार बनल रहे। जेमे शहर के एगो नामीगिरामी पत्रकार, पुरस्कृत साहित्यकार, बूढ़ स्वतंत्रता संग्राम सेनानी, नामी बनिया–बेवपारी, एकरी बाद पार्टी के एगो आन्हर कार्यकर्ता। माने कुल्हि मिला के पाँच आदमी के बड़का–बड़का लिफाफा मिलल रहे। लिफाफा साथे में ले जाये के रहे। जेसे अगिला कतार में कुर्सी मिलित। भीड़ से बचे खातिर समय से आके अपना सीट पर बइठे के निहोरा कइल रहे।

जिला के अउव्वल साहित्यकार जगदीश बाबू नेवता पाके बड़ी गद्‌गद् रहले। मन खुशी से बाँसन उछरत रहे। कुर्ता में लप–लप कलप माड़ी लगा के झारि के सभास्थल पर चोहँपले। संगही आपन पांच गो किताब मंत्री जी के भेट करे खातिर ले गइल रहले। मंत्री जी के मंच पर मिले खातिर सुतार लहल रहे। चारू ओरि ताकत जगदीश बाबू आगा अपना कुर्सी पर बइठि गइले, जहाँ वरिष्ठ साहित्यकार के चिट लागल रहे। घन्टा भर बाद संचालक महोदय माइक पर अइले। आके मंत्री जी के बखान के पुल बन्हला के बाद सभा में समां बान्हे खातिर गीत गवइया रामसुन्दर के हाँक लगवले। साथे–साथे सभके हाल में आके बइठे के प्रार्थना कइले। काहें से कि बहुत आदमी झुन्ड के झुन्ड बहरी बतिआवत रहे।

कुछ देरी बाद हाल ठसाठस भरि गइल। पंखा चलत रहे बाकिर जगदीश बाबू के हवा ना लागत रहे। भीतरी पानी चलावे के बेवस्था ना रहे। हाल के हउलि से पियासन जगदीश बाबू छटपटाये लगले। मन में चोर समा गइल कि कहीं बहरी पानी पीये जाईं आ आके केहू सीटे छेका लेईं। दू बजे के आइल छव बजि गइल। जगदीश बाबू पसेना से नहा गइले। कलप कइल कुर्ता लेबरी लेखा हो गइल। भीजल कुर्ता दाह के चाम से चिपकि गइल। बेरि–बेरि संचालक जी माइक से कहें कि मंत्री जी अब आवले चाहतानी। कार से अवला के कारन, रस्ता में जनता रोकि–रोकि स्वागत करतिया एह से आवे में देरी होता। बस आइले चाहतानी।

बस! अब मंत्री जी शहर में आ गइल बानी। छन भर में आवले चाहतानी। एह बीच में रामसुन्दर जी से निहोरा बा कि एगो अउरी गीत सुनाईं। अबे गाना–गीत चलते रहे तबले जिन्दाबाद के नारा लागे लागल। मन फरहर भइल। देर अइलीं दुरुस्त अइलीं। आइल सवारथ भइल। सभे अपना सीट से उचकि–उचकि पाछा

तिकवे लागल। मंत्री जी बुझला आ गइली। मार बढ़नी रे? इ का भइल? रोवे के रहली कि अँखिये खोदा गइल। पता चलल कि बझनौली के विधायक जी हवे। अपना दल–बल के साथे अइले हँ, इ जानि सभके जोश ठंढा परि गइल। चिहुँकि–चिहुँकि के ताके वालो लोग मन मारि पटा गइले। हाल में एकहू कुर्सी खाली ना। हाल डमा डम के भरल रहे।

बेयारि बुझला बन्द हो गइल होखे। जगदीश बाबू अफना गइले। मुँह पियास का मारे चट–चट करे लागल। हारि पाछि जगदीश बाबू रूमाल आ चश्मा अपना सीट पर राखि के हाल का बहरी निकलि गइले। हाल से अधिका आदमी बहरी ठकचल रहे। हेतना आदिमी के सोझा हम सम्मानित होखब, बड़ी खुशी के बाति बा। जगदीश बाबू हेतना सांसति के बादो फूले ना समात रहले। गाना का बीच बीच में सुनवइया सइ दू सौ रुपया बकसीस रामसुन्दर बाबू के देबे लोग। तब जगदीश बाबू के मन में से बाति आइल कि एगो हम बानीं कि कविता पाठ करे में जनता थपरी पीटि पीटि वाह–वाह करे बाकिर कबो केहू एगो रुपया ना दिहल आ एइजा साज बाज गीत पर पइसा बरसत बा। गवइया के किस्मत पर डाह भइल। अपना कविताई पर क्षोभ?

छव से ऊपर होखे लागल। मंत्री जी ना अइले। संचालक जी खाली एतने कहताड़े कि मंत्री जी बस आवहीं वाला बाड़े। इहे कहत कहत राति के सात बजि गइल। जगदीश बाबू के छटपटइनी लेसले रहे। बेरि–बेरि मोबाइल में समय देखि देखि अफसोस करे। ना आइल चाहत रहे। बाकिर सम्मानित होखला के खुशी में कुल्हि दुःख भुला जास। हमरा त लालच बा। कार्यकर्तन आ समर्थकन के का सुख मिली कि बेचारा बारहे बजे से आके स्वाति का बून अस, अइसन मंत्री जी के अवाई अगोरले बाड़े? मंच पर सभापति के साथे–साथे अउरी बरिष्ठ लोग कुर्सी पर बइठल बा। उ सब उरूवा अस ताकि ताकि आपुस में बतिआवत रहे। खुसुर–फुसुर त पूरा हाल में होत रहे बाकिर माइक के हल्ला में सभका मुँह के बाति तोपा जाउ। जइसे चान सुरुज पर बादर घेरि ले ला। सभकर भूखि पियास बुझला मरा गइल होखे। एतना सबुरी लोगन के जुटान रहे।

एह पारी सचन्ता में नारा लागे लागल। सांचो के मंत्री जी आ गइले। आके अपना आसन पर मंच पर बइठले। माल्यार्पण के बाद सभा शुरू भइल। संचालक जी बक्तन से निहोरा कइले कि समय के कमी बा। सब अगुताइल घबड़ाइल बा, संक्षेपे में आपन कहब सभे। जे मंत्री जी के सोझा आपन पूरा पोथी–पतरा बाँचे के तेयारी क के आइल रहे ओकरा एक पन्ना पढ़े के कहल जाई त कइसन लागी? एक किलो खाये वाला के एक चम्मच? ऊँट का मुँह में जीरा। सब अनखुश होई। बाकिर एकर के परवाह करी? वादा कऽ के मुकरि जा, उहे अच्छा नेता होला। वक्ता लोग मुँह पिजवते रहि गइल लोग कि संचालक महोदय मंत्री के आदर के साथे माइक पर बोलइले। अउरी वक्ता लोगन से माफी मांगत बानी काहें से कि मंत्री जी एगो अउरी सभा में जाये के बाड़े।

जगदीश बाबू अउँजिया गइले। मरले बा, फेरू मारे के बोलवले बा। एगो सभा में छव घन्टा देरी से आइल बानी। दोसरा सभा के भगवाने मालिक बाड़े। जगदीश बाबू सोचले। मंत्री जी मंच से माइक पर आवतानी। अब सम्मान समारोह होई। बाकिर जगदीश बाबू के सोच पर पानी फिर गइल। मंत्री जी अइले। माइक पकड़ले। संक्षेपे में हँकले आ चलता बनि गइले।

मंत्री जी के गइला के बाद संचालक महोदय, सभा से निहोरा कइले, कहले कि सम्मान समारोह अबे बाकी बा, अध्यक्षीय भाषण के बाद वरिष्ठ लोगन के सम्मान होखी, सभे धीरज से बइठो। अध्यक्ष जी के भाषण के सुनेला कि हाल गँवे गँवे खाली होखे लागल। जगदीश बाबू क पेट में कलछुल घुमत रहे, बाकिर सम्मान का फेरा में सज्जी भूखि–पियास मरा गइल।

जगदीश बाबू आपन पाँच गो किताब पर मंत्री जी के नाँव लिखि के भेंट करे के लिआइल रहले। उहो ललसा सूली पर चढ़ि गइल। नाँव लिखल किताब केकरा के दीहें? सभी उरुवा अस एक दोसरा के मुँह मंच पर ताकते रहि गइल। सभके बोलती बन्न। एही बीचे संचालक जी आके सम्मानित लोगन के प्रशस्ति पत्र पकड़ा गइले। आनो के लड़िका के एहँगने केहू लेमनचूसो ना पकड़ावत होई जेगने संचालक जी कागज थमा गइले। जगदीश बाबू के सज्जी खुशी घाम में काफूर हो गइल। अब पछता के का होई जब चिरई चूगि गइल खेत। बेचारू हाथ मलि के रहि गइले। ••

❑ राज साड़ी घर, चौक कटरा, बलिया

लोकराग
(बारहमासा)

शिवजी पाण्डेय 'रसराज'

खटलो के जोग नाहीं, मिलेला मजुरिया, सुनु रे भउजी,
आगि लागो अइसन सुराज, सुनु रे भउजी।
डेगे-डेगे रोकताटे रहिया हमार, सुनु रे भउजी,
दे-दे दुहाई ई समाज, सुनु रे भउजी।

जतिया-धरमवा के झुठिया सहारा, सुनु रे भउजी,
रचे जालसाजी जालसाज, सुनु रे भउजी।
कबहीं नरेगा, कबो रोजी के गारंटी, सुनु रे भउजी,
कहतो में लागे हमके लाज, सुनु रे भउजी।

पेटवे के खातिर कइनी, कवन ना जतनियाँ, सुनु रे भउजी,
एकर मरमवो ना बुझाय, सुनु रे भउजी।
चइते कटियवा जगावे सारी रतिया, सुनु रे भउजी,
तिकईं कि होखे भिनुसार, सुनु रे भउजी।

जेठ-बइसखवा के, तलफे जस भुभुरिया, सुनु रे भउजी,
तलफे तस हियरा हमार, सुनु रे भउजी।
चढ़ते आसाढ़ होले धान के रोपनियाँ, सुनु रे भउजी,
कनई में जाईं लपटाइ, सुनु रे भउजी।

निमिया के डोले जइसे, नवकी छिउँकिया, सुनु रे भउजी,
दोचित रहे मनवाँ हमार, सुनु रे भउजी।
सावन-भदउवा जइसे चूवेले पलनियाँ, सुनु रे भउजी,
ओइसे टपके लोरवा हमार, सुनु रे भउजी।

धानवाँ सोहत में, अँगुरियो कटाले, सुनु रे भउजी,
देहिं जारे घमवा कुवार, सुनु रे भउजी।
रेंड़ेला कतिकवा में, धान अगहनिया, सुनु रे भउजी,
अँचरा से ढाँपीले कपार, सुनु रे भउजी।

जाड़े कठनरि जाले फेड़-रूख सगरे, सुनु रे भउजी,
कँपरेला गँवे-गँवे हाड़, सुनु रे भउजी।
सन-सन पुसवा में सितिया लहर, सुनु रे भउजी,
बेधे लागे पोरे-पोरे जाड़, सुनु रे भउजी।

मघवा में सरिसो से, लपटे केरइया, सुनु रे भउजी,
देखि-देखि हिया हुलसाय, सुनु रे भउजी।
होरियो के बेरी नाहीं, ऊहो अइले घरे, सुनु रे भउजी,
नीक नाहीं लागे तिहुवार, सुनु रे भउजी।

••

❑ ग्राम-पो० - मैरीटार, जनपद - बलिया (उ० प्र०)-277202

बलिया के भोजपुरी काव्य-परम्परा : भाषा का ठेठ-ठाट पर समय आ समाज

✍ डॉ0 अशोक द्विवेदी

बलिया के उरबर माटी आ ओकरा निज–भाषा में, सर्जना के बात जब उठी तऽ ओह कवियन के नाँव अनासो जीभि से उचरि जाई, जवन भोजपुरी कविता के पोढ़ जमीन का साथ जियतार उठानो दिहलें। साहित्य–सृजन में, उत्तर प्रदेश का एह नामी जनपद बलिया के राष्ट्रीय पहिचान बा । इहाँ हम खलिसा ओह भोजपुरी कवियन के चरचा कइल चाहब, जेकरा के राष्ट्रीय महत्व भलहीं ना मिलल बाकिर ओह लोगन से भोजपुरी लेखन क गुमान बा।

''गो बिलाप छन्दावली'' का जरिये प्रसिद्धि में आइल पं० दूधनाथ उपाध्याय (हरिछपरा) का कबिताई में लोक हिया में लहरत करुण–रस का भाव–सघनता का सँग, आदर्श भोजपुरी के ऊ सुभाविक प्रवाह मिली, जवन पढ़वइया–सुनवइया के मरम छुवला बिना ना रही। श्री रामबिचार पाण्डेय जी त, 'भोजपुरी' के परयाये रहले। लोकप्रियता अइसन कि ओह समय में भोजपुरी के नाँव आवते, उनकर अनासो लोगन का जबान पर आ जात रहे। उनका किताबन में ''बिनिया–बिछिया'' संग्रह त बाद में छपल, ओकरा पहिलहीं उनकर कतने कबिता लोगन का काने होत दूर–दूर ले चोहँपि गइल। ''अँजोरिया'' आ ''उलटनि'' कविता के प्रसिद्धि जिला का बहरी ले रहे। प्रसिद्ध नारायण सिंह (चितबड़ा गाँव) आ शिवदत्त श्रीवास्तव 'सौमित्र' (ग्राम–शेर, बाँसडीह) आदि का नाँव के चरचा त भोजपुरी काव्य के इतिहासो लिखे वाला लोग कइले बा। प्रसिद्धनारायण जी के ''बलिया बलिहार'' में अँगरेजी गुलामी से लड़े वाला बीर–बलिदानियन के जस–गाथा ओजस्वी स्वर में उरेहल गइल बा।' हुकूमत के हाथी नियर दाँत दू गो, देखावे के दूसर, चबावे के दूसर' लाइन उनका तीखर व्यंग के बानगी भर बा। शिवदत्त ''सौमित्र'' के रचनात्मक विविधता, उनका छपल संग्रह से उजागर भइल बा। ऊ हास्य–व्यंग के कबिताइयो खातिर जानल जात रहलन।

जगदीश ओझा 'सुन्दर' : जनपक्षधरता के कवि–

भोजपुरी कविता के 'कथ' आ रचाव ('कन्टेन्ट 'आ 'फार्म') के नया उठान देबे वाला श्री जगदीश ओझा ''सुन्दर'' के नाँव, भोजपुरी–साहित्य में बिना कवनो संदेह अगुवा रहल बा। 'सुन्दर' जी (मिश्रवलिया, विद्याभवन नरायनपुर) के रहलन। गीत के रचाव आ लय (रिद्म) के सिद्ध कइले रहलन। रचनाशीलता में, जन–वाणी के अकथ उद् गार रहे। 'कथ' आ बिचार पेठावे (संप्रेषण) में स्पष्ट जन–पक्षधरता लउके। कविता में उनकर वक्तव्य, उनका भीतर बइठल एही जन पक्ष का कवि से स्वर आ शब्द–बिधान पावे। ''जुलुम भइले राम'' संग्रह का कवि–स्वर में, जुलुम का

आगा मूड़ी गड़ले जन का भीतर बिराजल, जड़ता के तूरे के रागमय आवाहन बा। सुन्दर जी समाजिक आ राजनीतिक व्यवस्था के जथारथ के भोक्ता लागत बाड़न। अपना गहिर अनुभूति का अभिव्यक्ति में, ऊ हर बिसंगति आ बिद्रूप के रेघरियावत–उद्‌घाटित करत बाड़न। ''सुराज'' मिलल, तऽका साँचो मिलल? जन साधारण का 'मोह–भंग' आ वेदना, कवि का करुन रागिनी में, अइसे फूटत बा कि बेधे लागत बा ... ''बटिया निरेखत, नयन पथराइल, हमरी दुअरिया, सुरजवा न आइल!'' गहिर निराशा में उभरत क्षोभ कवि का कई कवितन में नवजागरन का स्वर में बदल जाता। कहीं खिन्नता बा, त कहीं अवसाद, बाकिर ओही का बीच–बीच में कवि के उद् बोधक स्वर.....

काया डहाइल, मँहगिया क मारल
साहस ओराइल, बिपतिया से हारल
टूटलि कमरिया हो फाटल करेजवा/जरि गइले घरवा-दुआर
बतावऽ भइया, जगबऽ त कहिया ले जगबऽ !!
भइया, बिलइलऽ तूँ अपने करनवाँ
तहरे में देसवा के बाटे परनवाँ
तहरे से जगमग बा कोठवा अटरिया/काहें मड़इया अन्हार
बतावऽ भइया जगबऽ त कहिया ले जगबऽ !!

सुराज अइले केतने साल बीतल, बाकि ई अन्हार, ई लूट, ई नोकरशाही, ई अत्याचार, ई गरीबी, ई अन्हार जीव ना छोड़लस। एही में 'अढ़तियन' के माया बा, जवन, न बुझले बुझाले, न कहले, कहाले। जगदीश ओझा 'सुन्दर' खेत–खरिहान, गँवई प्रकृति आ परिवेश का साथे, जोर–जबरी करे वाला ठीकदार–गुण्डाशाहियो के अपना कविता–संसार में देखावत बाड़न आ सरकारी चाल–सुभाव के चित्रित करत, गाँधीवाद, समाजवाद आदि के असलियतो उजागर करत बाड़न। अढ़तियन के माया–जाल अलगा आ तन्त्र के तन्त्र–जाल अलगा। पिसात, छलात, धोखा खात, अपढ़ आहत जनता.. ऊहो गाँव–कस्बा के, अपना औकात भर खटलो, कँहरलो का बाद ओइसहीं विपन्न आ दुखी बिया, जइसे 'सुराज' मिलला का पहिले रहे। गाँव–गाँव में 'सुराज' का दिसाईं उपजल उछाह निराशा आ अवसाद में बदल गइल। जन–मन के ईहे पीर सुन्दर जी का कविता में निसरत बा।

''सुन्दर'' जी के जनपक्षधरता, कवनो वाद भा विचार–बन्ध के पक्षधरता ना रहे, ऊ कवि के अपना लोक–भाव से बूझल–जानल पक्षधरता रहे। कवि का नाते, उनके असमानता, अनेति आ अन्याय का बिरोध में आवाज उठावे आ गाँव–गाँव, किसान–मजूर क रूप में फइलल – शोषित, पीड़ित, आहत, दुखी–गरीब के जगावे के रहे। ऊ प्रतिरोध के नारा वाला सतही लाइन नइखन उचारत, अपना कविता से सुराज के सूरत उजागर करत, –– समानता, समान अधिकार के बोध करावत ई बतावे से नइखन चूकत कि ... ''चली ना घुरहुआ, त देस नाहीं चली हो!'' सुन्दर जी का कविता में मानवी करुणा का सँग, भारत भूमि का गाँव–गिराँव का विशाल भू–भाग में निवास करत असंख्य शोषित–पीड़ितन के पीर बा। ऊ दुःखी, आहत आ बेवस्था से क्षुब्ध, असहाय जन का पीर के बानी देत, ओकरा जागरन खातिर, चेतन आवाहन करे वाला सच्चा भोजपुरी कवि बाड़न।

प्रभुनाथ मिश्रः खेत-खरिहान का भाव-भूमि से राष्ट्रीय क्षितिज तक

गाँव का खेत–खरिहान, बाग–बगइचा से निकलल अपना अनुभूति आ संबेदना के राष्ट्रीय भाव देबे वाला सचेत कवि प्रभुनाथ मिश्र किसान आ ओकरा जिजीविषा–जीवट के सजीव उरेहे वाला कवि हउवन। उनकर काव्य–संग्रह ''हरियर हरियर खेत में'' गँवई जीवन के सौन्दर्य का साथ, प्रगति के चेतना बा। 1958 में एह संग्रह के भूमिका डा० भगवत शरण उपाध्याय जी लिखले रहलन। एमें प्रभुनाथ मिश्र के 53 गो कविता संकलित बा। नदी किनार, दीयर–पाट के बालू–रेत तक के भूइँ अपना कठिन मेहनत आ जीवट से हरियरा देबे वाला खेतिहर का प्रति उनकर संबेदन कतना गहिर बा, एकर परिचय उनका लोकप्रिय गीत के एगो टुकड़ा से मिल जाई –––

बलुरेतवा पर हमरो पलानी मितवा!
जहाँ उगिलेला उमस सुरुजवा के जोत
जहाँ जड़वा में लउकेला आड़ ना अलोत
जहाँ बरखा में उमड़ेला पानी मितवा।
बलुरेतवा पर हमरो पलानी मितवा।।

सामूहिक स्रम–संस्कृति के ध्वजवाहक किसान धरती के राजा हऽ। ऊ सिंहासन पर ना बइठे, बलुक पसेना से सींचि के धरती के हरियर बनावेला, फसल का सुघराई पर ओकर हिया हुलसेला। कठिन पसेवा से जब थाक जाला तऽ, सिहराई मेटावे खातिर भुइँयाँ सुस्ताला आ अगोरिया बदे खेत में गाड़ल मचान पर सूतेला। एकर कमी बस अतने बा कि, ऊ सिधवापन में

अपना दुरावस्था का दिसाईं सचेत नइखे। समय–संदर्भ में, ओकर जागल जरूरी बा। कवि एही स्थिति के, ओकरा गौरव गान का साथ चित्रित करत बा ---

मेहनत से थाकल, धरती के राजा सुतल अचेत में
बाइ जगावत जुग कबसे, ना आइल अबहीं चेत में
जन-मन-गन के प्रान, रतन के खान उगल जल-रेत में
बाटे हँसत भाग, भारत के, हरयर-हरियर खेत में।।

कवि प्रभुनाथ मिश्र समकालीन जनकवि लेखा, यथास्थिति के प्रतिरोध करत बाड़न काहेंकि यथास्थिति जड़ता के निशानी हवे । ई गँवई किसान के कमजोर आ दुखी बनावेला खास कर तब, जब ऊ नियति आ बिपरीत परिस्थिति का पेंच में, कुव्यवस्था आ कुशासन के शिकार बनेला। नया बदलाव आ सुघर भविष्य खातिर, रचना करे वाला कवि बदलाव आ जागरन खातिर कविता रचेला। कोइलि अपना मीठ आ विरही कूक खातिर जानल जाले बाकिर प्रभुनाथ मिश्र ओकरा से अलग कूक के अपेक्षा करत बाड़ें, ऊ चाहत बाड़ें कि कोइलि के स्वर समय का अनुसार एतना तिक्खर होखे कि सुतलो धरती जागि जाव, ओह धरती के सेवक आ राजा (किसान) जागि जाव। जड़ता टूटि जाव आ लोग मिलि के, प्रगति का राह के उढुक–अवरोध हटा देव —

तहरो कुहुँक से गुँजेला मधुबनवाँ
सुनि-सुनि फाटे फेंड़-रूखवो क कनवाँ
तबो नाहीं सुतरल तहरो सपनवाँ
जियरा के पीर नाही बूझेला जमनवाँ
कुहुँकत कुहुँकत बीति गइले जुगवा,
गरजि-गरजि अब गाउ रे कोइलिया!

प्रभुनाथ मिश्र लोकभाषा का ठेठ स्वर में, गँवई भावबोध के उरेहत, प्रकृति का प्रकृत रूप के चित्र खींचत, भारत का समूचा गँवई–लोक के मंगलकामना करत, किसान का ओह आस–भरोस आ सपना के जगावत बाड़न, जवना के ओह समय–सन्दर्भ में कवनो लोक कवि से उमेद कइल जा सकत रहे। विषमता आ अन्याय का खिलाफ समानता आ न्याय खातिर कवि के स्वर आशावादी बा -----

जोति के पसार चारू ओर होइ जइहें
करिया ई राति हटी, भोर होइ जइहें
थोर होई ढेर, ढेर थोर होइ जइहें --
एक भाव सगरो अँजोर होइ जइहें
एक दिन बरे वाला अइसन लुकार बा
कहाँ कहाँ दिया बारी सगरो अन्हार बा!

''सुन्दर'' जी के समय आ अन्य जनपदीय कवि

कवि का अभिव्यक्ति के विश्वसनीयता तब्बे मिलेले जब ओकरा कविता में गुँथाइल, संबेदन आ अनुभूतियन में प्रामाणिकता आ सचाई होखे। जथारथ ऊहे ना हे, जवन सोझा लउकत होखे, बलुक ऊहो हे, जवन आड़ा–अलोता भा भितराइल बा, जवन अप्रतक्ष साँच बा। एही तरे, अनुभूतियो के गहिराई आ व्यापकता होले। कवि का अभिव्यक्ति में एह जथारथ के अनुभूति गहिर आ व्यापक होई, तबे ओकरा अभिव्यक्ति के परतीति गहिर आ व्यापक होई। कहे के ना होई कि विशिष्ट कवि, जनजीवन के बहुरंगी छबियन का साथ, जन गन के सोच–सरोकार आ आकाँक्षो के जियतार अभिव्यक्ति अपना संबेदन आ अनुभूतियन का आधारे पर करेला। सिरजन–समय का जटिलता में भाषा के ताना–बाना बुनत खा कवि के इहे कोसिस रहेला कि जवना साँच के ऊ देखले––महसूस कइले बा ऊ असरदार ढंग से ओकरा रचना में उजागर होय। कवनो रचना अरथवान तबे बनेले जब ओकरा में, समय–सन्दर्भ के अनुसार ओकरा में सिरजित जथारथ अपना बिसंगति–बिद्रूपता का साथ, नया कोन (ऐन्गल), नया/ध्वन्यार्थ का साथ परोसल गइल होखे। कवि एकरा बदे कवि–प्रतिभा आ कौशल के काम में ले आवेला। ए कौशल में अगर तनिको बनावटीपन आ आडम्बर आइल त लोक भाषा का रचना के मोल कम हो जाला। कवि एही से रचना के जनग्राह्य बनावे खातिर, अभिव्यक्ति के सुभाविक रूप देला। ई सुभाविक रूप भाषा आ अनुकूल शब्द–बिधान से आवेला। आभिजात्यपूर्ण आ रँगल–बनावल भाषा के ऊ सुभावे नइखे, जवन आमफहम जन–भाषा के होला। लोकभाषा का सहज सुभाव के एगो अलगे तेवर आ 'टोन' होला ।

लोकजीवन से गहिर जुड़ाव, कवि का जीवन अनुभूति के खाली गहिर ना करे, ओके बड़वर आ ब्यापक बनावेला एही तरे एह जुड़ाव से कवि के भाषा–सिद्धियो होले। अब ई कवि पर बा कि ऊ अपना कवि–कर्म में, कवि–कौशल के कतना सटीक आ सम्यक इस्तेमाल करत बा। भाषा के सम्यक् आ अरथवान प्रयोग में लापरवाही भा असावधानी, रचना के बिनाव–रचाव में असंगति पैदा करेले। ''सुन्दर'' जी के कविता होखे भा प्रभुनाथ मिश्र जी के, या चाहे ओह समय का कवियन में अउर केहू के कविता। मूल्यांकन का दिसाईं उपर कहल गइल बात के धेयान में रखला पर, कविता के

समालोचना–समीक्षा भा आकलन में सुबिधा होई ।

बलिया का कवि–परम्परा में जगदीश ओझा 'सुन्दर' आ प्रभुनाथ मिश्र का अलावा अउरियो कवि लोग रहे जेमें लालजी सहाय लोचन, राम सिंहासन लाल 'मधुर' जी के आपन एगो अलग पहिचान रहे। लोचन जी गंभीर व्यंग्य खातिर ''कुण्डलिया'' छन्द के सिद्ध कइले रहले आ 'मधुर' जी बालकविता के। दूनों लोग ज्यादातर हिन्दिये में लिखल लोग, बाकि भोजपुरियो में जदा–कदा ओह लोगन के सामयिक कविता सुने के मिलि जाव। एही तरे श्रीराम सिंह 'उदय' आ कलीमुल्लाह कलीम (बाँसडीह), सीताराम पाण्डेय 'प्रशान्त' (बलिहार), तारकेश्वर मिश्र 'राही' (भीमपुरा) आदि के जिकिर जरूरी बा। नगेन्द्र भट्ट अपना नया गीत–बिधान का कारन कवि मंच पर चर्चित रहले। नगेन्द्र भट्ट आ शम्भुनाथ उपाध्याय जी (मैरीटार) के, सुन्दर जी के शिष्य बतावल जाला आ त्रिभुवन प्रसाद सिंह 'प्रीतम' जी के कवि 'लोचन' जी के। त्रिभुवन प्रसाद प्रीतम के कुण्डलिया लिखे कऽ रुझान उनके लोचन जी का काव्य परंपरा से जोर दिहलस आ नगेन्द्र भट्ट आ शम्भुनाथ जी के गीत बिधान ओह लोग के सुन्दर जी का काव्य–परम्परा से जोड़लस। भोजपुरी कविता पर केन्द्रित भइला का नाते इहाँ नगेन्द्र भट्ट आ शम्भुनाथ जी के चर्चा जरूरी बुझाता। नगेन्द्र भट्ट के कवनो संग्रह प्रकाशित नइखे। भोजपुरी पत्रिका ''पाती '' में समय–समय पर छपल उनकर कुछ कविता जरूर उपलब्ध बाड़ी से, जवना से उनका काव्य भूइँ आ शिल्प कौशल के प्रमान मिलत बा।

नगेन्द्र भट्ट : नव काव्य-विधान के गीत

भट्ट जी के कविता में, तत्कालीन हिन्दी नवगीत आ छायावादी रुझान के झलक बा। लयविधान आ ओकरा गति के सम्हारत उनकर गीत प्रायः प्रकृति–सुघराई के नया ढंग से प्रस्तुत करत लउकत बा। शहर में रहत कवि; मन में गाँव के छवि सहेजले बा आ ओकरे सुधि में गीत उभरत बा –––

याद पड़े गँउवाँ के बतिया, याद पड़े अमराई
कबो बहे मनवाँ में पछुआ कबो बहे पुरवाई!
........''जटा जूट वाला बरगद हो शिव के ढहल शिवाला
नवो रतन के कथा कहानी, महुआ बलुई वाला
रात रात भर नींन न आवे, जब सुधि ले अँगड़ाई।

भट्ट जी नवगीत का बिनावट में, कल्पनाशीलता आ नया प्रयोग से जनपद का भोजपुरी कवि परम्परा में इयाद कइल जइहें। उनका कविता में प्रकृति का सुघराई आ ओकरा बदलत रूप के चित्र विधान बा। ऊ अउर कवियन लेखा भोर आ सबेर के चित्र त उरेहते बाड़न, सँझियो के चित्र खींचत बाड़न। उनकर दू गो कविता 'भोर' आ 'साँझि' पर से एक एगो टुकड़ा हम उदाहरन में दे रहल बानी। एम्मे हिन्दी के छायावादी सुभाव वाला शब्द–बिधान, भोजपुरी में पलट के एगो नये ताजगी क अनुभव करावत बा ––

सबेर के चित्र :---

बन-बगान नदिया पुरइन पर
छलके कनक-गगरिया।
सातों सुर में भोरवा/सातों रंग नहा के
किरिन ले आइल धरती खातिर,
अँजुरी में लुकवा के
आसमान से उतरल,
चढ़ि के फुलवन के असवरिया।।
×× ×× ××

साँझ के चित्र :–––

पसरे लागल सन्नाटा/हवा मचावे शोर
आँखि बचा के चलल किरिनियाँ पगडंडी की ओर।
ओरियानी पर दिनवाँ अटकल
जस पपनी पर लोर
जस-जस गिरे नजर से पानी
तस तस घटे अँजोर
पसरे लागल आँखि के काजर बहि-
बहि चारों ओर।।

नगेन्द्र भट्ट जी हमहन का ''पाती'' रचना–मंच का मासिक कवि–गोष्ठी में आवसु। घुटना का परेशानी का बावजूद उनकर आइल अइसन लागे, जइसे गोष्ठी सोगहग हो जाय। त्रिभुवन प्रसाद 'प्रीतम', शम्भुनाथ जी, शत्रुघ्न पाण्डेय जी रहसु लोग। भट्ट जी के कविता सुनावे क ढँग सबसे अलग रहे। स्मृति–बिम्ब के सिरिजना से ऊ भोजपुरी कविता में नये उठान के दरसावसु। अइसहूँ आजकाल्ह कवि लोग भाषा के हिन्दी भा अउर पड़ोसी भाषा का शब्दन से काम चला रहल बा। बदलाव का तेजी में, भोजपुरी के बहुत सारा मूल शब्द भुलाइल जा रहल बाड़ें स। बहुत लोग त ओह शब्दन के भावे नइखे बूझत, अरथ बतावे के परत बा। अइसना में, ठेठ शब्दावली का बिनावट वाली कविताई के ग्रहणशीलता के लेके सवाल उठत बा ....हम कबों कबों सोचीला कि कहीं धिरही–धीरे भोजपुरी भाव–भाषा

आपन मौलिकता आ निजता के सुभाविक सुघराइये मत छोड़ि देव। नगेन्द्र भट्ट जी के स्मृति–बिम्ब वाली एगो गीत इयाद पड़त बा, एम्में ज्यादातर हिस्सा, हिन्दी–कविताई लेखा बा, "भोजपुरी में, भोजपुरी के" वाली बात नइखे। बस 'परती' के दूबि लहलहाइल' त 'सुधियन' के घटा के ओसे जरूरे कवनो पुरान स्मृति के सम्बन्ध होई.... अतने पर मन थिर हो जाता–

परती के दूबि लहलहाइल
सुधियन के घटा उमड़ि आइल।
हंस नियन दिन उतरल नदिया के पानी पर
लहर-लहर लहराइल, दिन के अगुवानी पर
जिनिगी के ताल पर भुलाइल।।

"पाती" सम्पादन में ओह घरी हमके ई बुझाइल रहे कि कुछ गायकन के भोजपुरी के छबि बिगारे वाला फूहर गीतन से छुटकारा खातिर, ओकरा समान्तर लोकराग का 'फार्म' आ लय में कवि लोगन के, गीत लिखे आ पढ़े के चाहीं। एह दिसाईं एगो जोरदार रचनात्मक आन्दोलन चलावे के जरूरत महसूस क के, हम ना खाली "पाती" में स्तम्भ (कालम) सुरू कइनीं, बलुक ओह समय के पत्रिका, "भोजपुरी साहित्य सम्मेलन पत्रिका" (पटना), "समकालीन भोजपुरी साहित्य" (देवरिया) आ "भोजपुरी माटी" (कलकत्ता) का संपादको लोग से एकर निहोरा कइलीं। पाण्डेय कपिल जी, अरूणेश नीरन आ सभाजीत मिश्र अनिल ओझा 'नीरद' आदि लोगन के सहयोग से ई लोकराग–आन्दोलन, गति पकड़लस। हमार एगो प्रिय अनुज जयप्रकाश "सागर" (अब डा० सागर) ओह घरी जे०एन०यू० में "लोकराग" के रचनात्मक बइठकी दिल्लियो में शुरू करवले। एकर अच्छा नतीजा देखे के मिलल। भोजपुरी कवि लोग लोक धुन कजरी, सोहर, चइती आदि पर सुन्दर आ असरदार गीत लिखे लागल।

बलियो में 'लोकराग' का गीति–रचना का दिसाईं ओह घरी नगेन्द्र भट्ट, शम्भुनाथ उपाध्याय, त्रिभुवन प्रसाद प्रीतम, कन्हैया पाण्डेय, हीरालाल 'हीरा', शिवजी पाण्डेय 'रसराज' शत्रुघ्न पाण्डेय आदि कवि लोगन में उछाह रहे। भट्ट जी लोकराग का फार्म पर कुछ अच्छा गीत रचलन आ सुनइबो कइलन। बरखा राग 'कजरी' का फार्म में उनका देस–गीत के एगो सुघर टुकड़ा देखीं ––

हउवा झूमि के चँवर डोलावे
बदरा चरन पखारे ना।
साँझ-सुन्दरी साँझ के बेरा दीपक-राग सुनावे
गावे रात मल्हार रात भर, भोर भैरवी गावे
पछुआ लोरी गावे, पुरवइया आरती उतारे ना !

एही तरे चइती का राग में, उनकर एगो मधुर गीत ऐ बेरा हमके इयाद परत बा ----

झरे लगल जुही के पँखुरिया हो रामा
भोरे - भोरे।
छोड़ि दीही खनकल हो कर के कँगनवाँ
जनि जा बिदेस छोड़ घरवा-अँगनवाँ
गोरिया करेले गोड़धरिया हो रामा, भोरे-भोरे।।

शम्भुनाथ उपाध्याय: जनजीवन के उरेह के अरथवान कोसिस

हम पहिले कहि चुकल बानी कि लोकभाषा में बाहरी प्रयोग के अतिरेक, ओकरा सुभाव के विपरीत भइला से, कविताई बनावटी लागे लागेले। नया शिल्प आ ढाँचा में, लोकभाषा के सुभाविक मौलिकता के रच्छा खातिर सुधी कवि तनिक सावधान रहे त उचित होई। भोजपुरी के कविता, भोजपुरिये भाव–सुभाव में नीक आ मौलिक लागी। अक्सरहा देखे के ई मिल जाला कि कुछ लोग कविता हिन्दी में लिखि के, ओकर भावानुवाद भोजपुरी में कर देत बा। अइसनकी रचना फरके भइल चिन्हाइ जाले। ओमें ऊ मूल (ओरिजिनल) सवाद ना रहे, जवन भोजपुरी के बा। सिरिजनशीलता अपना भाषा का मूल शक्ति से निखरेले आ सम्यक अरथ सिरिष्टि करेले। कवि शम्भुनाथ जी का कविता में गाँव आ किसान के भाव–संवेदन आ अनुभूति, भोजपुरी भाषा का प्रचलित ठेठ ठाट का साथ उभरत लउकत बा। गँवई परिवेश अपना प्राकृतिक रंग–रूप आ सुषमा में, ऋतुचक्र भा मौसम का मुताबिक बदली त ओकर अनुभूति करे वाला किसान–समाज, अपना साध–सपना, उमंग–उछाह, स्रम–सुघराई का साथ ओके ग्रहण आ अभिव्यक्त करी। सामयिक हरष–विषाद, उल्लास आ अवसाद ओकरा भाव–भाषा में स्पन्दन करत ना रही त ओह अभिव्यक्ति में ऊ असर कइसे रही, जवन दोसरा के ओइसने प्रतीति करावे, जवन अनुभूति करे वाला के भइल होई ।

आम–महुआ के बगइचा, फेंड़–पौधा आ फुलाइल तीसी–सरिसो के खेत आदि के सहज चित्र कवि, किसान का भाव–भूमि पर उतरिये के सुभाविक रूप में अंकन कर सकेला। शंभुनाथ जी, खुदे किसान रहल बाड़न। अपना छोट शहर में हिन्दी के अध्यापन करत, ऊ अपना खेती–किसानी का ओही मौलिक रूप में जियका जोगावत मिलेलें। एही से उनका कविता में,

ऊ ठेठपन बा, ऊ लोक लय बा ––––

अमवाँ में लगली मोजरिया हो
गावे गीति कोइलरिया!
फूल के बिछावल बाटे पियर गलइचा
रसवा घोराइल बाटे सउँसे बगइचा
पिपरा डोलावेला चँवरिया हो
मारे सीटी बँसवरिया!

प्रकृति के सँग– साथे रहे वाला, खेत–बधार में रमे वाला भोजपुरिया भला ओकरा साहचर्य–सुख से बिलग कइसे होई? भोजपुरी के कवियो, जन–जीवन का एह सहज अनुभूति के, अपना कविता में अपना ढंग से उरेहे क कोसिस करबे करी। शंभुनाथ जी बरखा के एगो नये रूप परोसत बाड़न – बदरी अइसे बूनी बरसावत बिया, जइसे पानी चलनी से झारत होखे –––

चलनी से झारेतिया बुनिया बदरिया
रसे-रसे भींजि-भींजि बहेले बयरिया!

कविता में मानवीकृत रूप–चित्र, उनका अभिव्यक्ति के ताजा आ चटक रंग देत बा। अपना एगो दोहा में, ऊ अपना कल्पना–शक्ति से तलैया में खिलल कोंई के एगो नये कोन से देखत बाड़न। उनका लागत बा कि कोंई अपना नैन से सान मारत बिया (इशारा करत बिया)। चित्रात्मकता में, उनका कबिताई के सुघराई देखत बनत बा ––

ताल बनल बा आइना, मुख देखेला चान।
कोंई तिरिछी आँखि से, मारत बीया सान।।

×××   ×××

कउड़ बुताइल ठंढ से, काँपत बाटे हाड़।
लइका धइले जाड़ के मुट्ठी में बा ठाड़।।

दुसरका दोहा में जाड़ा के एगो नये चित्र बा। सिमसिमइला से कउड़ा बुताइ गइल बा, जाड़ से हाड़ गलत बा, बाकिर नंग–धड़ंग लड़िका पर एकर जइसे कवनो असरे नइखे। ऊ मुट्ठी बन्हले बेखबर खड़ा बा, बुझाता कि ऊ जाड़ के मुट्ठिये में बान्ह लेले बा। शम्भुनाथ जी के सादा सुभाव में एगो दिहाती ठसक रहे। ऊ पेशा से शिक्षक, कर्म से किसान, जीवट के धनी ठेठ ठाट के अइसन कवि रहलन, जेके आपन बात बेलाग ढंग से कहे के सुभाव रहे। विश्व भोजपुरी सम्मेलन बलिया इकाई आ ``पाती–रचना–मंच`` का ओह समय होखे वाला मासिक कवि गोष्ठियन में, कवि–जमात का साथ उनुका सक्रिय भागीदारी के नतीजा ई भइल कि उनका कविता–संकलन का सँग–सँग, सबकर कविता–संकलन तइयार हो गइल। ओह गोष्ठियन के खास बात ई रहे कि बलिया का कवियन का अलावा आसोपास के जनपदीय कवियन के जदा कदा जुटान हो जाय। कवनो कवि का कविता पाठ का बाद, ओप्पर सब लोग आपन बात–बिचार–सलाह देव, विशेष रूप से बड़–वरिष्ठ लोग। अच्छा विमर्श होखे। कन्हैया पाण्डेय के पहिल कविता–संग्रह ``हेराइ गइल जिनिगी`` 1999 में छपल रहे, तबो, जब शंभुनाथ जी, हीरालाल `हीरा`, शिवजी पाण्डेय के संग्रह 2006 में प्रकाशित भइल, त उनुकर दुसरका कविता–संग्रह ``तनिके दूर बिहान बा`` के सामग्री तइयार हो गइल। बलिया में, भोजपुरी साहित्य का मौन रचनात्मक आन्दोलन के, ई उपलब्धि कम ना रहे। नियमित होखे वाली ई साहित्यिक गोष्ठी सचहूँ कामे आइल।

शम्भुनाथ जी का संग्रह ``मूस खात बा देस के``, अपना नाँवें का अनुरूप बा। ई बतावत बा कि गँवई सरेहि में रहे वाला कवि के नजर खाली अपना गँवई परिवेश पर ना, बलुक पूरा देश आ ओकरा बेवस्था पर, सचेत बा। अपना समय के राजनीतिक, सामाजिक स्थिति आ जनसाधारण के हाल चाल पर जागरूक कवि हर ओह विसंगति, विडम्बना पर कमेन्ट आ व्यंग करत मिली, जवन असंगत आ खराब बा। शम्भुनाथ जी के कवि के तेवर आ टोन उनका दोहन में सटीक ढंग से उभरत बा ––

अपराधिन के भइल बा, संसद में भरमार।
तू-तू, मैं-मैं से चली, कब तक ले सरकार।।

×××   ×××

अपराधी एह देस में, सबसे बा खुसहाल।
मन्त्री, नेता, पुलिसदल एकर उत्तम ढाल।।

भारतीय लोकतंत्र के अन्दरूनी देवाल खसकला आ भितरे–भीतर चरमरइला के कारन भ्रष्ट राजनीति, नौकरशाही आ अपराधियन के कुत्सित गँठजोड़ बा। जब रच्छके, राछछ हो जाई त जनसामान्य के न्याय आ समानता कइसे भेंटाई? पीड़ित–शोषित जन के रक्षा करे के बजाय जब पुलिस आ सुरक्षाकर्मी अपराधी बाहुबलियन के रास्ता देबे लागी त बेचारी जनता के का होई? नेता, मंत्री बनल जन–प्रतिनिधि जब अपराध के संरक्षक हो जाई त ओकरा पर जनविश्वास कइसे कायम होई? ``मूस`` त प्रतीक हवे, ऊ बिल बनाइ के भितरे–भीतर धरती के खोंखर करी आ सुव्यवस्था के कुतुर–कुतुर नास करी। सजग आ प्रगतिशील नजरिया कवि शम्भुनाथ का कबिताई के

सार्थक बनावत बा। ई नजरिया उनका रचना–संसार में देखल जा सकेला।

त्रिभुवन प्रसाद सिंह 'प्रीतम'

प्रीतम जी, जनपद के वरिष्ठ कवि लालजी सहाय 'लोचन' का, संसर्ग में, उनका संरक्षण में अपना समय आ समाज के चित्रित करे वाला कवि रहलन। ''लोचन'' जी ज्यादातर हिन्दी में कविता कइले बाड़न। 'कुण्डलिया' छन्द में, समाज आ व्यवस्था का विसंगतियन पर, तिक्खर व्यंग्य का साथ कमेन्ट करे में माहिर लोचन जी के विशिष्ट तेवर आ अन्दाज बा। भोजपुरी मे बहुत कम्मे लिखले, बाकि निहोरा प, ''पाती'' का एगो अंक में उनकर दू–तीन गो भोजपुरी कुण्डलिया मिलल रहे। प्रीतमो जी, उनहीं नियर जादातर हिन्दिये में लिखले, कभी कमार ''पाती'' में प्रकाशित करे खातिर उनकर कुछ कविता मिलल, हालाँकि ऊ भोजपुरी का हर गोष्ठी में बढ़–चढ़ के हिस्सा लेत रहलन। आज शम्भुनाथ जी आ प्रीतम जी नइखन, बाकिर बलिया का भोजपुरी रचना–मंच पर ओह लोगन के सहजोग आ भागीदारी के मिसाल दियात बा।

त्रिभुवन सिंह 'प्रीतम' भोजपुरी के गीति शैली में जवन रचना कइले बाड़न, ओम्मे घर–परिवार बा, जीवन–दर्शन बा आ देश–गान बा। घर में पोसाये वाला सुग्गा, पिजड़े में रहेला, जवन खियावल–पियावल, सिखावल जाला ओतने भर, पिंजड़ा के पराधीनता ओके, एह ले बेसी के सुतंत्रता ना देला। एह बान्हन के विवशता अलगे बा। प्रीतम जी एकर बयान, एगो कविता में कुछ अइसे कइले बाड़न ....

राम सीताराम, सीताराम कहे सुगना
सुति उठि, सबके सलाम करे सुगना।
पंछी बनइला, बिजनवाँ के बासी
पड़ले अकेल अब काटेलें उदासी
पिंजड़े में सँझिया-बिहान करे सुगना।।

एगो गीत में घर के आनन्दित करे आ वात्सल्य सुख देबे वाला गोदी के खेलवना बा। शिशु के निश्छल आ अबोध क्रिया–व्यापार केकरा ना सोहाय ? प्रीतम जी भाव–सघनता का साथ एह शिशु–सुघराई के अंकन कइले बाड़न। गीत के एगो टुकड़ा देखीं ––––

हँसे किलकारे कबो ओठ बिजुकावे
सुसुके कबो त माथे घरवे उठावे
टप-टप महुआ चुवावे दुनों नयना।
घुटुरुन-घुटुरू चलेला भरि अँगना।।

प्रीतम जी लोकरागो में एगो कजरी अक्सर सुनावसु, जब कवनो पावस गोष्ठी होखे। अइसे ई ''पाती'' का कवनो पुरान अंक में छपलो बा। एमे विशेष कुछ नया नइखे, बस पारंपरिक राग, पारम्परिक ढंग ....

रिमझिम बरिसे श्याम बदरिया
मोर नगरिया भींजे ना।
अरे रामा, उमड़ल ताल पोखरिया,
महल अटरिया भींजे ना।।

एगो कविता में स्रम आ पुरुसारथ के सुघराई का साथ, कर्म कइला के आवाहन बा। कविता निज से उठि के अन्त में देश से जुड़ जात बिया। कवि के ई आवाहन स्रम का महत्ता के प्रतिष्ठा देत बा –––––

खूब सींचऽ कि बिरवा बिरिछ बनि जाय।
सींचऽ पसेना का पानी से सीचऽ
आपन चढ़लकी जवानी से सींचऽ
ढारल सनेहिया फलित बनि जाय।
खूब सींचऽ कि बिरवा, बिरिछ बनि जाय ।।

कन्हैया पाण्डेय : सिरजन –संभावना के निखार

कन्हैया पाण्डेय, कवि–कर्म के निष्ठा से भरल–पूरल कवि हवें। 1990 से ऊ भोजपुरी कविता का जरिये, हमरा सम्पर्क में अइले। उनका रचनाधर्मिता में जतने सहजता बा ओतने ईमानदारी बा। सिरजन का दिसाईं निरन्तर लगन से लागल रहे वाला कवि का रूप में विनम्रता उनका व्यक्तित्व के गहना बा। ओह घरी ऊ अपना गाँव मैरीटार से थोरिके दूर, एगो मिडिल स्कूल में पढ़ावत रहले, बाकिर खेती बारी के काम उनसे ना छूटल रहे। उनका कविता में, गँवई–संसार अपना सुभाविक रूप में उभरल बा।

''हेराइ गइल जिनिगी'' कन्हैया पाण्डेय के पहिला काव्य–संग्रह हवे, जवन 1999 में प्रकाशित भइल। संयोग से एह संग्रह के भूमिका लिखे के अवसर हमरा मिलल रहे, एसे उनका कविता–संसार से हमार परिचय पुरान बा। जिनिगी के सझुरवला में आदमी एतना अझुरा जाला कि ओकर दर्शन समझ में ना आवे आ जब कुछ–कुछ समझ आवेला तऽ देर हो गइल रहेला। कन्हैया जी एही बात के, अपना ढंग से कहले बाड़न ––

का जाने कवना बेयरिया से लहकल
मनवाँ के हिरना, सरेहिया में बहकल
जतने बचवलीं ओराइ गइल जिनिगी
हेरते में, हमरो हेराइ गइल जिनिगी।

जिनिगी के लड़ाई में अझुराइल कवि के अपना

समाज आ ओकरा व्यवस्था से निकहा टकराव के देखावत बा। उनका समाज में पसरल असमानता, अन्याय, लूट–खसोट, दबंगई आदि सहन नइखे होत। गाँव–जवार, कस्बा, शहर में आये दिन घटत रहे वाली बेचैन करत बाड़ी सन ––

मोछिया अँइठि घूमऽ तारे बेइमनवाँ
सोझिया सहत बाड़े रोजे अपमनवाँ
खेत खाय गदहा, जोलहा पिटाय।

××   ××

बन्न भइल बा खिरिकी सबकर/बन्न भइल दरवाजा
दुनों कान पर जब्बर चोरवा/लगल बजावे बाजा
स्वारथ में बन भइले बाटे सबकर नाका-नाका हो !
जुम्मन काका हो !!

××   ××

तुहीं बतावे, कहवाँ बाटे आपन हिन्दुस्तान !
न्याय बिकाता, जहवाँ हाटे
जहाँ कनुनवाँ आन्हर बाटे
दुर्जन कुरुसी के हथियावे
सज्जन, सोझिया माथ नवावे
सीना ताने घूमे हरदम, अपराधी-बइमान।

कवि अपना सुराज आ ओकरा बेवस्था का अन्तरविरोध से खिन्न बा ओके अचरज एह बात क बा कि शोषित, पीड़ित लोग प्रतिरोध तक नइखे करत। भ्रष्ट राजनीति सगरे तंत्र के कुव्यवस्था आ अनेति का तरफ ढकेल देले बिया। समूचा समाजिक ढाँचा चरमरा रहल बा।

कन्हैया जी का संग्रह में अइसन कविता के कमी नइखे जवना में जन साधारन के सोच–सरोकार, आशा–आकाँक्षा आ कुव्यवस्था पर क्षोभ नइखे। एम्मे दर्जनों लोकलय के गीत अइसनों बाड़ें से, जवना में पारम्परिक स्वर अपना रंग रस का साथ मन के छुवत बा। एह गीतन में अनुभूति के ब्यापकता, सउँसे देश के समेटति बिया। कवि कहीं खेत–खरिहान, कहीं नारी जागृति, कहीं सीमा पर लड़त सैनिक, कहीं समाजिक चेतना, कहीं देशप्रेम के विषय बना के लोकराग में गीति रचना कइले बा। तरह तरह के लय आ राग में रचल गीत भाव विभोर करत बाड़ऽ सऽ।

एगो गीत में पति के लापरवाही और दारू पियला आ एने ओने घुमला पर ओरहन देत मेहरारू बिया–––

नीक लागे ना रहनिया
पिया तोहरी।
बड़को बेहुड़िया के चउरा ओरइले
अन्हिया-तुफनवा के दिन नियरइले
थोरिकी-सा बाँचल बाटे, धान अगहनिया
पिया तोहरी, नीक लागे ना रहनिया ।

प्रचलित मुहावरन आ शब्दावली के सार्थक इस्तेमाल से, कन्हैया पान्डेय अपना कविताई के सँवारत, सोद्देश्य रचनाधर्मी भइला के सबूत देत लउकत बाड़न। उनका दुसरका कविता–संग्रह ¨तनिके दूर बिहान बा¨ में ज्यादा परिक्वता (मेच्योरिटी) लउकत बा। एम्मे शिल्प आ कथ्य दूनों दिसाईं विविधिता बा आ रचनाशीलता का साथ, कविता में विचारो खुल के उभरत बा। पहिल संग्रह पर अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन उनके ¨आचार्य महेन्द्र शास्त्री¨ पुरस्कार देले रहे। ई उपलब्धि, उनका रचनाशीलता के अउर उत्साहित कइलस। ´तनिके दूर बिहान´ में कन्हैया पाण्डेय अपना सामयिक भाव बोध के संकेतिक चित्रन से सजवले बाड़न आ गँवई परिवेश के अउर चटक आ जियतार ढंग से उरेहले बाड़न। गीतन में प्रभाव भरे खातिर ऊ लोक लय के गीतन में, भाषिक बिनावट का दिसाईं सजग लउकत बाड़न।

नवका संकलन का कविता में बदलत गाँव के तस्वीर बा आ लोग समझ नइखे पावय कि गाँव काहे आपन पुरनका मान मूल्य आ चरित्र बदल रहल बा। एघरी गुल्ली डंडा आ कबड्डी–चिक्का का जगहा, कट्टा, छूरा आ तमंचा के सौकिया खेल बा। बाइक बा, मोबाइल बा, मुरगा–दारू के दावत बा, नवहन के मनसरहँगई का आगा बड़–बूढ़ बोल नइखे पावत। एक लेखे इरिखा–डाह में गाँव भितरे से धनक रहल बा–––

फेड़ रूख जहवाँ ना रेंड़ परधान/
कतहूँ सरेहिया में लउके ना छाँव
पिया धनकत बा गाँव ।

×××   ×××

राह-घाट में बढ़ल छिनइती, झूठ बा चम्बल घाटी
छत्तिस के सम्बन्ध भइल बा, दुख केकर के बाँटी
ठाँव ठाँव शकुनी दुर्योधन फेंके आपन दाँव रे
बदलि गइल बा, ऊहे नइखे, पहिले वाला गाँव रे ।

×××   ×××

सोझिया के नइखे जमनवाँ हो, आज कवने करनवाँ?
सिकहर प' टँगल परनवाँ हो, आज कवने करनवाँ?

सुराज मिलले कतने दशक भइल। देश तरक्की कइलस, सुबिधा संसाधन बढ़ावल गइल, बाकिर

भ्रष्ट–तंत्र में गरीबी आ मानसिक पिछड़ापन जइसे गर क फाँसी हो गइल, ऊ जाते नइखे स्रम के मोल घटल, सम्मान घटल, आपुस के प्रीति आ ओकर मरजादा घटल। बोलला–बतियवला के आजादी मिलल बाकि, नागरिकता में मनबढ़ूपन आ ठसक बढ़ल। जाति–मजहब के भड़कावल अजुओ बदस्तूर जारी बा। कवि का मन में एह सब का दिसाईं गहिर क्षोभ बा। ऊ कविता में बिसंगतियन के उद्घाटित करत खा गभिया आ उक्ति–वक्रता के सहारा लेता। ओकरा भाषा में प्रचलित कहाउत आ मुहावरा सामयिक सन्दर्भ के, गहिर रूप से उघारत बा। कुछ दोहा देखे लायक बा —

लोकतन्त्र लँगटे भइल, ढँकलो भइल उघार
लउकत नइखे देस में, तनिको कहीं सुधार।

xxx xxx

मुखिया आन्हर हो गइल, बहिरा बा कानून
ठाँव-ठाँव दंगा मचल, डेग-डेग पर खून ।।

xxx xxx

अबहीं रावन ना मुवल, कतनो लागल बान
देहें-देहें पइसि के, घूमत बा श्रीमान ।।

कन्हैया पाण्डेय का रचल लोकराग वाला गीतन में लोकलय के नया लयदारी आइल बा। ऊ कविता में रूमानी आ छीछिल उरेहे से बाँचे के कोसिस करत लउकत बाड़न। अब उनका गीतन में अनुभूति के गहिराई आइल बा। भोजपुरी भाषा के मूल शब्द गरिमा आ ओकरा प्रयोग के सहूर विकसित भइल बा, जवना कारन अभिव्यक्ति अरथवान आ तलस्पर्शी बनल बा ——

लरकल लरहिया बाटे, उजरल पलानी/कबले अइबे पिया
छिलबिल अँगना में पानी, कबले अइबे पिया ?

xxx xxx

कसि के बन्हाइल जाता गरवा में फँसरी
तड़पेला अइसे जइसे जलवा में मछरी
हरियर लकड़ी गरीबवा के जिनिगी/सुनुगे ना लहके, बुताय।
डहकि-डहकि रोवे टुटही मड़इया हँसेले महलिया ठठाय!

भोजपुरी के मौलिक पुरान शब्द जइसे छान्ही–छप्पर, छिदिर–बिदिर, छिलबिल, हँड़होर, मघोंच, चउका–चुहानी, डहकि–डहकि, लँगटे–उघार आदि के जियावे जोगावे के कोसिस, भोजपुरी के मुहावरन के नया सन्दर्भ में ब्यौहार, कन्हैया जी जइसन एघरी के भोजपुरी कवियन के मूल से जोरे के काम करत बा। एघरी भोजपुरी कविता के पाट चौड़ा हो रहल बा आ ओकरा बिस्तार में, देश–दुनिया आ गइल बा। कन्हैया जी मुक्तो कविता (फ्री वर्स) लिखले बाड़न आ कुछ गजलो प्रकाशित बा, बाकिर गीत उनका कविताई के मूल पसन्द आ खासियत बा।

हीरालाल 'हीरा' : समय के साँच देखावे के जतन

समय का सचाइयन के देखत, महसूस करत कवियन में, अपना खास टोन आ कहे का अन्दाज का कारन ,हीरा लाल ''हीरा'' के कविता, पढ़े–सुने वाला लोगन के बरबस अपना ओर खींचेले। उनकर कविता–संग्रह ''ऊ उजियार न आइल'', वरिष्ठ कवि शम्भुनाथ जी का सँगही 2006 में छपल। ''ऊ उजियार न आइल'' का कवि में आजादी का बाद मिलल ''सुराज'' का प्रति खिन्नता बा। कवि का भीतर जनसाधारन का 'मोहभंग' आ ओसे उपजल निराशा त बटले बा, सार्थक बदलाव के छटपटाहटो बा। ऊ जनपक्ष के आकाँक्षा के स्वर देत, राजनीतिक विसंगति आ अवमूल्यन पर तिक्खर व्यंग करे से अपना के नइखे रोक पावत ———

ढंग भुलइले रहनुमा, बदलल उनकर सोच
चाहत बाड़ें, देश के कइसे लीहीं नोच।।

xxx xxx

पीछे मुड़ के देखि लीं, बीतल साल पचास
नैतिकता गड़हा गिरल, दुराचार आकास।।

xxx xxx

सितलहरी में ना जरल, रस्ता-घाट अलाव
घर में बस अफसरन के, पाकत रहल पुलाव ।।

आजादी का बाद ना त शोषण खतम भइल, ना अत्याचार, ना दबंगई। अशिक्षा, गरीबी आ नियति के मार सहत जनता का सामने, ऊहे कुल बेमरिया नया रूप धइ के सोझा आ गइल। आजादी के खुशनुमा सपना आ मुस्कान, जथारथ में, ओकरा अवसाद ग्रस्त जिनिगी में, फेफरियाइल ओठन लेखा पसरि गइल। राज त कहे कहाये खातिर आपन रहे, बाकिर ओके नौकरशाही आ लाल फीताशाही चलावे लागल। चँल्हाक, धूरुत, आ पहुँच वाला मौकापरस्त लोग एकर खूब फायदा उठावल। नैतिकता, सदाचार, सादगी, ईमानदारी थोथा आदर्श आ उपदेश बनि के रह गइल। नेता जनसेवा का बजाय, सुख सुबिधा के मेवा खाये लगलें। प्रशासन कागजी कवायद में मसगूल हो गइल। पारदर्शिता का अभाव में जवन रुपया, जवन सुबिधा, जवन उन्नति गाँवन में जाँगर खटावत जनता तक पहुँचे के चाहत रहे, बिचवे का लूट आ बनरबाँट में ओराइ गइल। हीरा जी एह तथ्य के, कविता में अपना ढंग से, इशारा करत

बाड़न। जाति वर्ग में बँटाइल, शंका आ भय में घेराइल लोगन के मानसिक स्थिति अइसन ना रह गइल कि हिया के उमंग–उल्लास आपुस बाँटि सको ––––

खोंता में सुगना बा सपटल, झाँकत नइखे बहरा
कदम कदम पर धोखा बाटे, साँस-साँस पर पहरा
उमस भरल हमरा सिवान में, मलय बयार न आइल।
सोचले रहलीं जवन जुगन से, ऊ उजियार न आइल !!

कवि आ साधारन समाज का आदमी, अनुभूति आ संवेदन में एक्के लेखा होला। जवन सामान्य व्यक्ति कहि ना पावे, कवि ओके अपना कवि कौशल आ शब्द–बिधान का जरिये, वाणी देबे क काम करेला। अब कवि का सामरथ पर निर्भर बा कि ऊ अपना अनुभव–प्रतीति के केतना सार्थक आ सोद्देश्य ढंग से अभिव्यक्ति देव।

हीरालाल जी का कविताई में, समाज के इकाई, घरो–परिवार के टूटन आ बिखराव के वर्णन बा, साथे–साथ बेटा–बेटी, बाप–महतारी, भाई–भाई का संबेदनशील सम्बन्धन में बिखराव आ परायापन के मार्मिक अंकन बा। उनकर कवि खाली कुव्यवस्था आ देश के समाजिक आ राजनीतिक हालते से दुखी नइखे। नया जुग का संकीर्ण सोच आ स्वार्थ वाला ब्यौहारिक नजरियो से क्षुब्ध लउकत बा।

भाई-भाई में रार बढ़ि गइल/बिना बात तकरार बढ़ गइल
अँगना-दुअरा लगल बँटाये/पहुँचल पंच दुअरिया रे
माई बाबू के, के राखी, सुरू भइल तकररिया रे !
××× ×××
नाती-बेटा सभे भरल बा/उमिर बहत्तर हेलि चलल बा
बेबस मुखिया देखऽ कइसे अब्बो हाड़ ठेठावेले!

हीरा जी, विनयी व्यक्तित्व के कवि हउवन, बाकिर कविता में, व्यंग के गहिर उरेह करेले। ``पानी`` पर उनकर लोकप्रिय कविता बा, ओमें ऊ जन प्रतिनिधि आ नेता कहाये वाला लोगन के खबर, एही पानी वाला व्यंग का सहारे लेले बाड़े। अइसहीं समाज में मानवी मूल्यन पर उनकर गहिर चुटकी ``पाती`` का पुरान अंक में छपल ``नया किचेन शास्त्र`` में बा। खाँटी भोजपुरिया ढंग से, ऊ किचेन के मुख्य चीजन के प्रतीक बना के समाजिक विद्रूप पर कमेन्ट कइले बाड़े, समझे–बूझे जोग बा। जइसे

''कलछुल अस जे हेने-होने/कूदी-फानी, फरी-फुलाई।।
भाग भगौना के ना जागी/हरदम अदहन, पीही, खाई।।
तावा अस परहित जरला में/करिखा सगरी देंह पोताई।।
राह बहरबे जेकर, ऊहे/तहरा राहे काँट बिछाई''।।
समुझीं त बहुत कुछ बा, ना समझीं त कुछ ना!

शिवजी पाण्डेय 'रसराज':सुबराई आ प्रेम के कवि

शिवजी के उपनाम रसराज बा त अइसहीं नइखे, उनका कविता में रसप्रवाह बा। सह अनुभूति बा, परदुख कातरता बा आ करुना बा। रसराज के कविता संकलन ``रोवेले फफकि मुस्कान`` 2006 में छपल आ उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान से एह किताब के राहुल सांस्कृत्यायन पुरस्कारो मिलल। ई संकलन शिवजी के रचनात्मक विविधता के गवाही देता। एह संग्रह में साठ गो रचना बाड़ी सऽ, जवना में बिषय आ कथ के भिन्नता का साथे साथ सन्दर्भ के भिन्नता बा। सुरहा ताल का किनारा बसल मैरीटार गाँव के रहेवाला रसराज सामान्य जन के हास–हुलास, सोच–सरोकार आ पीर के जियले बाड़न आ अपना कविता में ओकर सहज उरेह कइले बाड़न।

``जोगईले पानी`` गीत में शिवजी गँवई सर्वहारा के सम्मान का गीत लिखले बाड़न। एह गीत में, उनकर नकारात्मक ना, सकारात्मक नजरिया स्पष्ट बा । गीत में साधनविहीन, निर्धन का साधारण रहनी के वर्णन बा। ओकरा बयान में कवनो अवसाद भा लोभ–लालच नइखे, बलुक सन्तोष के गरिमा बा। सहज, निरभिमानी बाकिर स्वाभिमानी भाव का साथ ओकरा भीतर के परदुख कातर भाव के समझल जा सकत बा ––––

जेतना बा, ओतने में ठीक हम बानी।
बड़ा नीक बाटे मोर टुटही पलानी ।।
××× ×××
दियवे बा हमनी के, चमकत बिजुरिया
बइठेले सँगहीं पोसलकी कुकुरिया
भलहीं गरीब हम, जोगईले पानी ।।
दोसरा के दुख से, दुखाइ जाला जियरा
सुख देखि अनकर, फुलाइ जाला हियरा
नाहीं बाटे छोरा-छीनी, नाहीं बेइमानी ।।

आजुओ अइसनका लाखन लोग बा, जेकरा में ई सकारात्मक सोच आ `रहनी` बा। भलहीं ढेर सुख सुबिधा आ धन दउलत नइखे, बाकि जेतना बा, ऊ ओतने में काम चलावत अपना मानवी गरिमा के जोगवले, जियत बा। आज का क्षुब्ध, नकारात्मक माहौल में अइसनका वर्ग के असली रूप में चित्रित करे वाला कवि धन्यवाद क पात्र बा। असन्तोष आ बिषमता का माहौल में बिलात जात भाईचारा, सह अनुभूति आ भलमनसाहत के बचावल–रेघरियावल जरूरी बा। कवि क बड़प्पन ई बा कि ––

''हम आपन दुखवा, गा-गाके दोसरा के घाव सुखाईले ....
गँठिया अझुराइल जिनिगी के हम गँवें गँवें सझुराईले।''

शिवजी नीक से जानत बाड़न कि 'जुगवा ' 'बटमार' बा आ लोगन का ''मन के कुँइयाँ में जहर घोराइल'' बा, तबो ऊ चाहत बाड़न कि लोगन के घर के खिड़िकी–झरोखा ''डर से कतहीं बन्द न होखे'', हिन्दू–मुस्लिम में आपुसी सद् भाव बनल रहे आ ''गोधरा जइसन कांड न होखे'' अइसन भाव जगवला के काम बा, बाकिर ई वोट बैंक के राजनीति, आग में घीव डलला से बाज नइखे आवत। सही त सही, लोग अपना नफा नुकसान खातिर गलत का पक्ष में बयानबाजी करे लागत बा। एगो वर्ग के खुश करे खातिर दोसरा वर्ग के मन दुखावत बा। भेदभाव आ सरकारी तुष्टीकरण के गलत नीति एह आपुसी सद् भाव आ समरसता के नोकसाने नु पहुँचाई।

शिवजी पाण्डेय लोकराग के बढियाँ गीत लिखले बाड़न। एह रससिक्त गीतन के सुनला, पढ़ला के आनन्द अलगे बा। एह गीतन में उमंग उछाह बा तऽ सांकेतिक रूप से, बिषमता पर चोटो बा, दुख बा त ओकरा पीर के मरम छुवे वाला प्रभाव प्रतीतियो बा ––

काटे हम चलनी रे धान अगहनियाँ/
होरिलवा मोरा जागे रे लहुरी ननदी !
××× ×××
अब तऽ नाहीं रहल रहे लायेक गँउँवाँ/
चले नया ठाँव जोहीं जा !
नाहीं कवनो राह बने रोजी-रोजिगार के
उदमो सफल होला कवनो अधार से
इहवाँ खेले के बा घुमरी परउवाँ/चलऽ नया ठाँव जोही जा !
××× ×××
खन-खन खनकेले गोहुँवाँ के बलिया
ए रामा चइती के होई अब कटनियाँ ए रामा
चइती के ।

जथारथ का बिसंगतियन आ बिद्रूपता में घिसिटत मानवता आ मानवी मूल्यन के गिरावट आ हरास का एह दौर में, मनुष्य के संवेदना आ मनुष्यता के बचावल–जोगावल बेमानी नइखे। ई काम लोक भाषा के कवियेे अपना सार्थक –सोद्देश्य रचना से कर सकत बा। रसराज निष्ठा से आपन जोगदान दे रहल बाड़े।

भगवती प्रसाद द्विवेदी: बहुरंगी रचनाशीलता

बहुआयामी सिरजन–प्रतिभा से भरल भगवती प्रसाद द्विवेदी (गाँव–दलछपरा)के कविता–संग्रह ''जौ–जौ आगर'' भलहीं देर से (2009) में छपल, बाकि ''पाती–रचना–मंच'' से ऊ 1980 से जुड़ल रहल बाड़न। पढ़ाई का समय से साहित्यिक गतिविधियन में रुचि राखे वाला एह कवि के साहित्यिक जतरा में हिन्दी–भोजपुरी दूनों में समान पइसार रहल बा। बाल–साहित्य का रचना–कर्म के प्रसिद्धि अलगा बा। कथा– कहानी, निबन्ध, कविता, समालोचना आदि में लगातार लेखन उनका के प्रसिद्धि आ पुरस्कार दूनों देले बा। पटना नगर में वास करे वाला ई रचनाकार अपना गाँव–जवार आ ओकरा गतिविधि से जुड़ल नजदीकी रिश्ता बना के रहल बा।

''जौ–जौ आगर'' में 19 गो मुक्त कविता (फ्री–वर्स), 20 गो गीत आ 25–26 गो गजल संकलित बा। एम्मे से ज्यादातर रचना ''पाती'', भोजपुरी साहित्य सम्मेलन पत्रिका, भोजपुरी माटी आ समकालीन भोजपुरी साहित्य, कविता आदि पत्र–पत्रिकन मे छपल बा। भगवती जी पटना में, भोजपुरी के बड़–जेठ साहित्यसेवियन से जुड़ल रहल बाड़न। कवि जगन्नाथ जी का सँगे भोजपुरी के ''कविता'' पत्रिका के सम्पादन कइले बाड़न, बाकिर हमसे आ ''पाती'' से उनकर नेह–नाता ओइसहीं बनल रहल बा, जइसे सुरूआत में रहे।

समकालीन रचनाशीलता में, ''गौरैया'' कविता का जरिये विशेष चर्चा में आवे वाला कवि द्विवेदी जी मनुष्यता के बचावे के रचनात्मक सनेस देत बाड़न आ सांकेतिक रूप में वर्तमान का विसंगति पर महीन व्यंग करत लउकत बाड़न, जब ऊ देश के जंगल का प्रतीक से जोड़त बाड़न। ऊ अरथ उपराजे खातिर कविता नइखन लिखत, एहसे लिखत–बाँचत बाड़न काहेंकि कविता ''खाये आ जीये के / सलीका सिखावेले / आदमी के जानवर बने से बचावेले । पिंजड़ा से बहरियाये खतिर उकसावेले।'' आखिरस कबताई के मूल धरम ईहे नू हे –– मनुष्यता सिखावल, मानस–मूल्य बचावल आ मनुष्य के ओकरा खुद से ('अहं', ईगो) से मुक्ति खातिर उकसावल। अइसहूँ कविता हिरदया के मुक्तावस्था के सिरिष्टिये न हऽ, जइसन कि आचार्य शुक्ल जी कहले रहलन। कविता मुक्त–अवस्था में पहुँचावहूँ क माध्यम बने।

कवि के इहे सचेत स्वर उनका ''जौ जौ आगर'' कविता में, स्त्री चेतना के उकसावत लउकत बा। इतिहासबोध आ परम्परा का विश्लेषण से उत्पन्न आधुनिक नजरिया का साथ बेटी–बहिन–पत्नी–महतारी का रूप–गुन वाली स्त्री पर रचल ई कविता, नारी–संघर्ष का बयान का साथ–साथ ओके चेत करे के उकसावत बिया। लोककहनी के राजकुँवरि,

दनवाँ–दइत आ सपनाइल राजकुमार का असलियत के पड़ताल करत कवि सलाहियत का साथ स्त्री–चेतना के सचेत करत बा —

''तहरा नइखे खाली रेंड़ी अस चनके के
तहरा त बा लुत्ती बनि के धनके के।........
............जवना से जरे तहरा अस्तित्व के दीया।''

स्त्री–विमर्श के एगो अउर कविता ''चिन्हासी'' में कवि तनी दोसरा कोन से नारी सामरथ आ ओकरा संघर्ष के करुन–ब्यंग का साथ उरेहत बा–– ''सिरिजेलू तूँ छाती से अमरित सोता/बाकिर भरेला तहरा पेट के खोंता/बाँचल–खुचल जूठन से/ढोवेला तहार पेट/बीया के गाछ में बदले तक।'' भगवती प्रसाद जी दरअसल नारी के भीतर का लुती के धनका के बिध्वंस करावल नइखन चाहत, ऊ ओकरा लौ से ऊ दीया जरावल चाहत बाड़न, जवन भित्तर–बाहर उजियार करो, जेकरा से अन्दर–बाहर बनल अन्हियार के जड़ता टूटो। इहे चेतना हऽ जवना के जगावे के रचनात्मक उद्दम कवि कर सकत बा। एही चेतना के जगावे के उद् बोधन भारतीय मनीषा पहिलहूँ कइले बिया — ''उत्तिष्ठ ..जाग्रतऽ ..अप्पद्दीपो भव!'' उठऽ! जागऽ! अपना के अइसन दिया बना लऽ, जेकरा उजियार में तहार राह तहार लक्ष लउके।

भगवती प्रसाद द्विवेदी अपना समय–सन्दर्भ में, आदमी का सोच, सरोकार आ ओकरा देखला का ढंग (नजरिया) पर सतर्क नजर रखले बाड़न। ई समान्तर साहित्य के संगत के प्रभाव हऽ। आदमी का सोच के बदलाव के रेघरियावत उनकर एगो बढ़ियाँ कविता बा ''उन्हुकर वापसी''। एह कविता में आखिरी नतीजा (परिणति) बा ''हो गइलन उदास!'' कविता सुरुवे होतिया एही से आ खतमो होतिया एही पर। अभाव आ बेबसी के देखे आ ओकरे रोवल–धोवल सुने के आदी, सुबिधा–संपन्न आदमी के, जब अभाव में सादगी सन्तोष–स्वाभिमान वाला मनई से सामना भइल, त उदास होखहीं के रहे। ई कवि का 'निज' आ स्वानुभव के कविता, ओह साँच के उजागर करत बिया, जवन सोच आ नजरिया में तोपाइल बा।

व्यवस्था के अन्तर्विरोध आ असंगति कवि रचनाकारन के उकसावेले, एही से लगभग सभे एह विषय पर अपना–अपना ढंग से, अलग–अलग कोन से टिप्पनी (कमेन्ट) करेला। कुछ कवि लोग एकरा बिसंगतियन के बरनन करेला, त कुछ लोग संकेत से देखावेला भा परोक्ष, प्रतीकात्मक रूप से, कविता में उरेहेला। भगवती प्रसाद द्विवेदी के एगो गजल 'जन' प्रतिक 'रामभरोसे' पर बाटे। ऊ उनुके मार्फत, अइसनका विसंगतियन पर आत्मव्यंग करत बाड़न –––''का उजियइहें रामभरोसे/पचरा गइहें रामभरोसे ।

कबों भेंड़ बनि भीड़तंत्र के/रीत निभइहें रामभरोसे।
खुद शहीद होके, राजा के/मुकुट बचइहें रामभरोसे।''

ई 'रामभरोसे' आम जन के प्रतीक हउवन। कवि, कलाकार लोग इनका मार्फत व्यवस्था पर बहुत कुछ अभिव्यक्त कइले बा। कार्टूनिस्टो लोग कार्टून बनवले बा। हमनी किहाँ के एगो पुरान कवि स्व० चन्द्रदेव सिंह के एगो गजल, एही रामभरोसे पर ''पाती'' में बहुत पहिले छपल रहे। ई रामभरोसे, प्रसिद्ध कार्टूनिस्ट काँजि लाल के 'रामखेलावन' हउवन। शासन आ समाजिक व्यवस्था के मूल में, अच्छा–बुरा, सबकुछ के भोक्ता ई राम खेलावन भा राम भरोसे जी हउवन। भगवती प्र० जी के ''पाती'' में छपल, एगो छोट बहर का गजल के कुछ शेर देखीं ...व्यवस्था पर संकेत से, कइसन सामयिक सटीक व्यंग कइल गइल बा एम्में ––––

कहि के आम, बबूर रोपाइल
टहनी-टहनी काँट समाइल
बा चमड़ा के काम नधाइल
कुकुरे के रखवार रखाइल।

भगवती प्रसाद जी के गीति–रचना में उनका कवि–प्रतिभा आ कौशल के सम्यक निबाह भइल बा। ऊ प्रतिक्रिया भरल, नकारात्मक बिचार–दर्शन आ क्रिया–व्यापार के अवरोध मानत, हर प्रकार के जड़ता आ ठहराव के चुनौती देत, रचनात्मक कोसिस आ संघर्ष के सनेस देत लउकत बाड़न। उनका रचनाशीलता में, तमाम कठिनाइयन का बादो, भविष्य खातिर आशावादी स्वर बा ––––

जबले जिनिगी में धार रही/गीते ओकर पतवार रही
थथमल नदिया के, का माने/छाड़न अस सड़त बिचार रही।

कहे क मतलब ई कि सोचल–बिचारल जाव त, आधुनिक ढंग से, अच्छा परिणाम, अच्छा नतीजा खातिर, राह के उढ़ुक हटावत, अन्धबिश्वास मिटावत एह आत्मविश्वास से कि केतनो रोक–टोक आ कठिनाई आई, कइसनो बिपरीत समय आई, हमनी सब के 'अँखिया सपनात रही आ सिरिजन के गीत लिखात रही। कवि के कलम, द्रौपदी का चीरहरन पर चुप ना बइठी, ऊ सुतलो मुरलीधर के जगावत रही। भगवती

प्रसाद जी बचपन बचावे खातिर, फूल आ तितिली बचावे के आवाहन करत बाड़न। उनका कवि के संकल्प बा कि हर रोक, हर अवरोध, हर बन्दिश का बादो, ''रोज–रोज मू–मू के जीयत/जन–गन–मन के पीर लिखाई।'' इहे सोद्देश्य आ सार्थक सिरजन कहाला।

शशि प्रेमदेव: सधल आ सचेत रचनाशीलता

शशि प्रेमदेव, अपना कविताई ,खास कर गजल का शिल्प (फार्म) मे, छान्दसिक अनुशासन का दिसाईं सचेत कवि हउवन। असरदार भाव–अभिव्यक्ति खातिर, जवना हुनर आ अभ्यास के जरूरत होला, ऊ उनका में बा, एकर प्रमान ऊ अपना सधल कलम से, देले बाड़न।

संवेदन आ अनुभूति के अपना कल्पक–शक्ति (फैन्सी) से सँवारे आ बयान करे के हुनर, शशि जी में खूब बा। ''पाती''–71 (मार्च 2014), प्रेम कविता विशेषांक में छपल गजल में स्मृति–बिम्ब का अरथवान उरेह से, शेरन के सुघराई त बढ़ते बा, बयानो में असर पैदा करत बा–– भोजपुरी भाषा का भाव–गति का साथ, पहिले से कहलको, के नया करे क काव्य–प्रतिभा शशि प्रेमदेव में, उनकर खूबी बनि के उभरत बा ––

तड़पल आ छपिटाइल होई, असहीं राति ओराइल होई।
मन के ठेस लगा के हमरा, ओकरो नीन न आइल होई।
जइसे हम लाचार परिन्दा मरजादा का पिंजड़ा के
ओसहीं साइत लोकलाज में ओकरो गोड़ बन्हाइल होई।
बिसरल ना एको छन खातिर ओकर साँवर हँसी 'शशी'
करियट्टी कहि-कहि के छेड़ल ओकरो कहाँ बन्हाइल होई।

××× ×××

फेरु कबों जिनिगी के अँड़हुल गतरे-गतर फुलाई का
फेरु मुन्हारे ओसहीं केहू फूल बिटोरे आई का !
बड़ा करत बाटे मन ओकरा के एक बेर निहारे के
फेरु कतों छन-भर खातिर ऊ बिछुड़ल मीत भेंटाई का।

सुघराई, प्रेम आ बिरह त गजल के प्रिय कथ्य रहल बा। अपना भाषा में, शशि प्रेमदेव ओके अछूता भंगिमा (ऐन्गल) से परोसत बाड़न। उनका लगे, लोक–सन्दर्भ में कहे के सलीका आ भाव–सुभाव बा। समय का सचाई के समझे–बूझे आ जाने के बाद, ओपर सीधा कमेन्ट ना कइ के, परोक्ष कहल आ संकेतिक 'टोन' में कहल, गजलकार के खासियत होला, आ ई खासियत शशि प्रेम का भोजपुरी–कविताई में बा।

चोर के चोर जनि कहऽ साधो।
खैर चाहऽ त चुप रहे साधो।

××× ×××

जंगले में गुजर गइल जिनिगी
का बताईं समाज के मतलब ।
मन में जबले फितूर पइठल बा ---
रोज पूजा नमाज के मतलब।

●● ''पाती''– 69 (दिसं० '13)

××× ×××

सात समुन्दर पार क कवनो चोर-लुटेरा ना
हक तहार छीनी तऽ केहू घरे-दुआरे के।
देखि-देखि के लोग चिहाई असही तहरो के
तुहूँ सीखि लऽ कला आँखि से नीबू गारे के।

●● ''पाती ''—84 (जून '17)

××× ×××

कइसे कइसे बढ़ी कहानी तै बाटे
के हाकिम के बनी किरानी तै बाटे।
बखरा में केकरा आई कंकड़-पत्थर
ले जाई के सोना-चानी, तै बाटे।

●● ''पाती''––86 (दिसं० 2017)

××× ×××

एह तरे रफ्तार से फइली अगर अँगरेजियत
शहर का, गँउवों में हिन्दुस्तान असली ना मिली।

समाजिक, राजनीतिक आ जीवन–सन्दर्भ में, बिसंगति आ जथारथ के सचाई, कवि अपना शैली अपना ढंग से बयान करेला। ई बयान अगर मौजूँ आ सटीक ना होई त पढ़वइया–सुनवइया में असर ना पैदा करी। शशि प्रेमदेव में ई हुनर बा कि का कहल जाव आ केतना। शशि प्रेम में लोक राग आ प्रचलित लोकगायकी का बन्दिश आ लय–बिधान में गीतो लिखे के कला, अपना भाषाई–टोन का साथ मौजूद बा। ऊ नीक से जानत बाड़ें कि कवनो गीत के सम्प्रेषणीय आ असरदार बनावे में ओकरा गेयता के का महत्व होला। चिउँटी काटे वाला ढंग से, राजनीतिक व्यंग करत उनका एगो गीत के आनन्द लीं––

मीलल बा कुरसी त फैदा उठालीं आ/
कीनि लीं ना सँइयाँ जहजिये हवाई
समाजवाद सइकिल पर कबले ढोवाई ?
सरधा बुतावे क ईंहे बा मोका/
सोचबि-सवाचबि त हो जाई धोखा
बेरि बेरि किरपा ना करिहें भवानी,
फेर-फेर अइसन सुतार ना भेंटाई !

●● ''पाती''––79 (मार्च–16)

ए गीत में समाजवाद के दुसरका ऊ चेहरा देखावे क कोसिस बा कि एकरा आड़ में बिधायक बनला के माने –मतलब का बा? जनभावना में बिधायक जी के घरनी के का सोच बा? सन् 1979–80 में छपल गोरख पाण्डेय के नौ गीतन का पुस्तिका में, समाजवाद पर छपल उनकर गीत बहुत चर्चित भइल रहे। नेहरू जी का 'लोकतान्त्रिक समाजवाद' माडल पर व्यंग करत एह कविता क धूम मचि गइल रहे ––

समाजवाद बबुआ धीरे-धीरे आई
समाजवाद उनुके धीरे-आई!
हाथी से आई, घोड़ा से आई
अँगरेजी बाजा बजाई/समाजवाद उनुके धीरे-धीरे आई!
काँग्रेस से आई, जनता से आई
झंडा के बदली हो जाई/समाजवाद उनुके धीरे धीरे आई।

''समाजवाद'' का हिन्दुस्तानी रूपान्तरण में, राजनीति करे वाला लोगन पर भोजपुरी के कतने कवि लोग कटाक्ष करत कबिताई कइले बा। मोती बी०ए०, सुन्दर जी, बावला जी जइसन कतने भोजपुरी कवि समाजवाद का भितरिया साँच के उजागर कइले बा। शशि प्रेमदेव ओकरा साँच के, नया अन्दाज से उरेहत बाड़न। प्रचलित लोक धुनन पर, ऊ अउर गीत लिखले बाड़न, जवना में 'सुराज' का बाद के मोहभंग, बिसंगतियन का साथे उभरल बा। असमानता के पैरोकार अजुओ फूलत–फरत बाड़ें से, बलुक अउरी प्रभावशाली हो गइल बाड़ें सऽ, बस उनहन क रंग–रूप बदलि गइल बा। जनता जस के तस अपना दुरावस्था में घिघियात, सवाल करति बिया, बाकिर ओके महँटियावल जाता। अइसना गीतन के आपन तेवर आ ताव बा –––

हमनी का टोल, कब पहुँची बिहान/
बोलऽ ए राजा जी ?
कब होई गाँधी के सपना सेयान/बोलऽ ए राजा जी ?
के बान्हि लेले बा सूरुज के घोड़ा/
बन के झोंपड़ियन के राहे क रोड़ा
बाटे उतान खड़ा तहरे मकान/बोलऽ ए राजा जी!

अपना समय आ सन्दर्भ का दिसाईं जागल कवि ओह सचाइयन आ ओकरा भीतरी छिपल ओह असलियत के उजागर करेला, जवन मनुष्य आ ओकरा समाज के दिशाहीन, दिग्भ्रमित आ मानव–मूल्यन के हरास करेला। ऊ हर बदलाव के रेघरियावत, मनुष्य का चेतना के जगावेला। भोजपुरी के जनपदीय कवि, अपना कविताई से ई साबित करत बा कि ऊ देश–काल का दिसाईं तटस्थ नइखे आ अपना कलम का मोर्चा पर, हर अनेत–अन्याय पर ऊ दखल देत रही।

बलिया के अन्य कवि

बलिया के कवियन में अइसन अउरियो कवियन क जिकिर जरूरी रहल जेकर मान–सम्मान आ रचनात्मक महत्व बा। बाकिर लेख के सीमा बढ़ला आ प्रतिनिधि कवियन का कविता पर समालोचनात्मक चर्चा बढ़ि गइला का कारन हमके आपन मन मारे के विवशता लउकत बा। **वरिष्ठ कवि तारकेश्वर मिश्र 'राही', प्रशान्त जी., 'उ०प्र० हिन्दी संस्थान से ''राहुल सांकृत्यायन पुरस्कार पावे वाला डा० शत्रुघ्न पाण्डेय जी, आग्नेय जी, राजेन्द्र भारती, बृजमोहन 'अनाड़ी' (सुखपुरा) अशोक कुमार तिवारी (बहुआरा), गुरुविन्द्र सिंह (कैथवली)** आदि का कविता पर खास चरचा ना कर पवला के मलाल, मन में बनल रही।। ईस्सर चहिहें त, आगा एहू लोगन का कविताई पर जरूर लिखाई। ●●

भोजपुरियत के जीत के कहानी 'बिंदिया'

डॉ0 प्रमोद कुमार तिवारी

भोजपुरी के पहिला उपन्यास 'बिंदिया'1957 में छपल। रामनाथ पांडेय जी के लिखल खाली 111 पेज के एह उपन्यास से भोजपुरी साहित्य के ताकत के साफ पता चलत बा। कहे के जरूरत नइखे कि ई मजबूती, ई दृष्टि आ ई प्रगतिशील सोच भोजपुरिया समाज के निसानी हऽ, जवना के साफ अइना नीयन 'बिंदिया' उपन्यास देखा रहल बा। एह उपन्यास के छपला 60 बरीस हो गइल बाकिर आजुओ बाप के मर्जी के खिलाफ अपना पसन्द के लइका के संगे घर छोड़ के भागल लड़की के मन से स्वीकार करे में समाज के बहुत दिक्कत होला। सोचीं ओ घरी एकरा के लिखेवाला के सोच कइसन रहल होखी। खाप पंचायत के फरमान से ले के प्रेमी जोड़ा के हत्या तक के कहानी पुरान समय के ना आज के सच्चाई हऽ। बाकिर ई उपन्यायस जेतना पोढ़ तरीका से स्त्री के समस्या के, ब्राह्मणवादी कुचक्र के आ धन के लालच में कवनो स्तर तक गिर जाए वाला लोगन के समस्या के उठवले बा ओकर जोड़ मिलल मुश्किल बा। भोजपुरिया संस्कृति के एह उपन्यास में एतना बारीक चित्रण भइल बा कि कहीं बइठल अदिमी समझ जाई कि ई कवना इलाका के चित्रण हऽ। ई खाली एगो संयोग नइखे कि भोजपुरिया समाज 'सगरी देहिया बलम के जगिरदारी हऽ' जइसन गीत गावेला, ई संयोग ना हऽ कि राहुल जी जब नाटक लिखेलन तऽ ओकर नांव 'मेहरारून के दुरदसा' हो जाला। असल में एह समाज में औरतन के जेतना दबावल गइल बा, संवेदनशील लोग ओतने मजबूती से एकर प्रतिकारो कइले बा। उपन्यास के मुख्य पात्र 'बिंदिया' एही भोजपुरिया संवेदनशीलता के एगो पोढ़ प्रमाण हवे। ई उपन्यास बिंदिया के बहाने भोजपुरिया समाज में मेहरारुन के ताकत के स्थाहपित कर रहल बा। इहे कारण बा कि महापंडित राहुल सांकृत्यायन जइसन विश्व साहित्य के जानकार एह उपन्यास के बहुत उपयोगी बतवले बाड़न आ एकरा भाषा के खुल के प्रशंसा कइले बाड़न। छोट आकार के ओर इशारा करत कहले बाड़न कि एकरा के पढ़ेवाला अतृप्त रह जाई बाकिर एकरा स्वाद के दाद हरेक पाठक दीही।

उपन्यास के सुघर भूमिका लिखत राजेन्द्र कॉलेज, छपरा वाला मनोरंजन प्रसाद जी कहले बानीं कि 'बिंदिया से जीउ लुलआ गइल अउर लालच बढ़ गइल'। मनोरंजन जी रामनाथ पांडेय के भाषा के बारे में लिखत बानीं– 'पांडेजी के भासा बड़ा सुन्दर बा, जीअत–जागत, चमकत–झमकत, फुदकत–नाचत। गांव के खेतन के अउर पउधन के बड़ा सुन्दर आ सजीव वर्णन बा।'

उपन्यास के शुरुआत खेती किसानी से भइल बा, आ पूरा उपन्यास में कवनो गीत के टेक जइसन लगातार खेती किसानी के बात लगातार आवत रहल बा।

शुरुआत के पंक्ति देखीं– 'सड़क के किनारे फूस के एगो झोपड़ी रहे जवना प लउकी के लत्तर फइल के कचमच–कचमच करत रहे। ऊजर–ऊजर फूल के साथे–साथे छोट बड़ बतियो लागल रहे... ओह झोपड़ी के पँजरे से खेत सुरु होत रहे, जवन कोस भर से अधिका में फइलल रहे। फसल खेत में खाड़ हो के लहलहात रहन स, जवना के देखला प हिया जुड़ा जात रहे। बेयार बहला पर ऊ सभ झूम झूम के लोटे लागँस, धरती के चूमे खातिर झुके लागँस। ओकनी के अइसन करत देख के दूर से आवे वाला राही के बुझाए जइसे हमार अगवानी करतारन सऽ। ई बूझ के राही के हिरदया में खुसी के समुन्दुर हिलकोरा मारे लागे आ ऊ आपन थकइनी भुला के हाली–हाली डेग उठावे लागे।..... अपना कोखी के लइका लेखा किसानन के मेहर लोग कबो कबो पवधन के अपना कोरा में ले के चूमे लागत रहे। दुलार से आपन हाथ उनकरा पर फेरे लागे लोग। ई कुल्ही देख देख के किसान के करेजा खुसी के मारे नाचे लागे।'

खेती किसानी खाली पेट भरे के जोगाड़ ना हऽ, जइसे बेटा बेटी के जनमावल खाली बुढ़ापा के लाठी तइयार कइल भा मदद के हाथ तइयार कइल ना होला, अइसहीं किसानी कइल खाली पेट भरल ना हऽ, आज के विकसित सभ्यीता में हर चीज पइसा से तोलल जा रहल बा, बाकिर धरती माई के साथे किसान के एगो अलगे रिश्ता होखेला, पौधा आ प्रकृति के संगे जिये मरे के संग होखेला। ई एगो जीवन दर्शन हऽ जवना के खाली भौतिक दृष्टि से ना बूझल जा सके। एह भाव के बुझला बिना भोजपुरियत के ना समझल जा सकेला। जवना घरी उपन्यास के नायिका बिंदिया नरक बन चुकल गाँव के बड़कवा लोग के अनेत से तबाह होके बूढ़ बाप के छोड़ के भाग रहल बिया ओहू घरी ओकर खेत आ गाँव से मोह छूटे के नाँव नइखे लेत। जाए से पहिले ऊ अपना गांव के धरती प माथा टेकत बिया। ऊ अपना बुद्धराम काका से कहत बिया, 'काका, हमनी किसान के बेटा–बेटी हईं। धरती मइया के छोड़ के हमनी से आउर केहू के सेवा ना होखी। धरती मइया के इचको दुख मत होखे दिहऽ, न त किसान खातिर ओकरा से लमहर कवनो पाप ना होखी।'

एह उपन्यास के कहानी छोटी बा। कोदई एक समय के गांव के प्रतिष्ठित किसान रहल बाड़न, बाकिर अब खटिया पऽ गिर गइल बाड़न, उनुकर बेटी बिंदिया तन आ मन दूनो से एतना सुंदर बाड़ी कि पूरा गांव उनकर बखान करत ना थाके। बुद्धराम, कोदई के लगे घर के सेवाँग जइसन रहेले जे जाति से भले छोट बाड़े बाकिर उनका सम्मान में कवनो कमी नइखे, बिंदिया उनका के बाप के दर्जा देबेली। ऊ मंगरा नांव के एगो मेहनती युवा के साथे पूरा खेती के जिम्मेजदारी सँभारेले, ओही गाँव में झमना नाँव के एगो अवारा लबार युवा बा जे अपना बाप भगत आ पं. बुझावन तिवारी के साथे मिल के बिंदिया से बियाह करे के साजिश रचत बा। मनबहकू झमना कई बेर बिंदिया के संगे बदतमिजी कइलस बाकिर बिंदिया ओकर औकात बता के दुरदुरा देलस एकर गुस्सा झमना के मन में भरल बा आ ऊ साजिश रचत बा आ बिंदिया पऽ चरित्रहीनता के आरोप लगा देत बा। ओकरा साजिश के पीछे कोदई के संपत्ति प कब्जा जमावल आ सुंदर सुशील बिंदिया के कइसहूँ हासिल करे के योजना बा। कोदई, झमना आ गांव के बाभन के कहला में आ के बिंदिया के बियाह झमना से ठीक क देत बाड़न। बिंदिया ई सब बर्दाश्त करत बिया बाकिर आपन जिनगी खराब होखत देख के ओह मँगरा के संगे भागे के निर्णय लेत बिया जेकरा साथे फंसे के ओकरा प आरोप लगावल गइल बा। बाद में बुद्धराम काका भी एह दूनो लोग के सहयोग करत बाड़न। बिंदिया के भगला के बाद कोदई एकदमे बेदम हो जात बाड़न, उनुका के साँच के पता चलत बा तऽ पछतात बाड़न आ बेटी के मुंह देखे खातिर तड़पे लागत बाड़न। आखिर में बेटी आवत बिया आ ओकरा से मिल के प्राण त्याग देत बाड़न।

कहानी छोट बा बाकिर एकरा में गाँव के राजनीति भरपूर बा। पंडीजी लोग किसान के कइसे दबोचेला आ आपन उल्लू सीधा करेला, सिधवा किसान कइसे ओह लोग के जाल में फँसत चल जाला एकर नीमन वर्णन उपन्याास में भइल बा। किसान साफ दिल के होखेला आ ऊ ज्ञानी लोग के सम्माान करेला। कोदई कहत बाड़न, 'खेत के अन्न पहिले बाभन आ पड़ोस के मुँह में पड़े के चाही, तबहीं खेती में बरकत होखेला।'

बाकिर पंडीज्जी के लालच के कवनो अंत नइखे, जब कोदई कहत बाड़न कि हम पच्चीस के जगही पचास देब आ ऊपर से पांचो टुक कपड़ो देब त पंडीज्जी गहना लेबे के लालच में कोदई के फंसावे

लागत बाड़न, बहुत महीन ढंग से कहताड़न, 'हम त रउआ के जनते बानीं, फजीरहीं पंडिताइन से अपनहीं के ले के तनी चख चुख हो गइल ह। ऊ कहे लगली हऽ, अपने बेर बेर चउधरी जी के बड़ाइए करींला, देखतानी नू कि अपना बेटी के बियाह में हमरा के का देलन। उनुकर बात सुन के हम कहनीं हऽ, तू घबरात काहें बाड़ू, चउधरी जी के करेजा मरद के बा, उहां के हाथ कबो चित ना भइल हऽ। हरमेसा पटे रहला। तोहरा के एक थान गहना उहाँ के जरूरे देब। तब ऊ तनी झमक के कहली– अच्छा अच्छा हमहूं देखिए लेब।'

आखिर में कोदई ई सँकारे खातिर मजबूर हो जात बाड़न कि 'हम एक थान उहाँ के गहनो दे देब, कि बाभन बिसुन के दानो देला से कहीं धन घटेला।'

उपन्यास में बहुत महीन ढंग से समाज के सच्चाई के बयान कइल गइल बा, बड़कवा लोग कुछो करे, केतनो झूठ बोले बाकिर सब स्वीकार हो जाला उहें गरीब आदमी साँचो बात कहेला तऽ ओकरा केहू ना पतियाए। बुद्धराम सब साँच जानत बाड़न, ऊ बिंदिया के साथे हरमेसा रहत रहलन एह से ऊ कइसन रहे नीमन से जानत रहन बाकिर ऊ तथाकथित छोट जात के रहलन एह से उनुकरा कहला के कवनो मोल ना रहे। कोदईयो ई कहत उनका के कुछुओ कहे से मना कर देत बाड़न कि, 'गरीब के बात के कवनो कीमत ना होखे, सांच बोलेवाला गरीब रोजे लतियावल जालन स। गरीब के साँचो बोलल ओकरा जीव के काले होखेला। गरीब के झोपड़ी में सांच बोलेवाला केतना मू गइलन बाकिर साँच बोले में नाँव भइल त जुधिष्ठिरे के। काहे से कि ऊ राजा रहस। उनका में बल रहे। तू भुलाइयो के केहू से जन कहिहऽ कि बिंदिया नीमन बिया। ना त सभे उल्टे बूझे लागी।'

जिनगी के कठोर सच्चाई के कतना सरल शब्दन में रामनाथ पांडेय जी रख देले बानीं आ ई डेगे डेग बा। एक जगही लिखत बाड़न, 'सभे गाँव के पहिले सरग बूझत रहल हऽ। ओमे रहेवाला के देवता समझत रहल ह, उहे गाँव अब नरको के कान कटले बा। ओमे रहेवाला लोग राकसो से चार डेग अगाड़ी बढ़ गइल बा।'

लोक प्रकृति के सँगे अइसन रच बस जाला कि दूनो के अलग कइल संभव ना होखे। लोक के रचनाकार के पहिलका पहिचान माटी आ प्रकृति के बारे में ओकरा सोच से मिलेला। अंजोरिया रात के लेखक बेर बेर मन लगा के वर्णन कइले बाड़न– 'चान कइसन सुन्नर बा। लोग झूठ ना कहे जे ओकरा में अमरित बा। ऊ रोजे अँजोरिया रात में अमिरित के बरखा करेला। बाकिर हमनी अइसन करमजरू बानी स कि ओकरा के पीहींसऽ ना। ओकरा में नहइला पऽ देह में एगो अइसन सनसनी फइलेला कि अदमी जोसे उठ के ठाढ़ हो जाला।'

अब अइसन सवाल के तऽ अउरुओ कवनो मतलब नइखे रह गइल कि अंतिम बेर अंजोरिया रात में चांद के कहिया निहरले रहे अदिमी। चान से लेके पेड़ पौधा तक लेखक सुन्नर मानवीकरण कइले बाड़न। बिंदिया जब गावे लागत बिया तऽ पौधो सब सुने खातिर ललुआ जात बा। 'ऊ तनी गुनगुनाए लागे तऽ ओकर गीत सुने खातिर पवधनो स आपन कान पार लऽ सऽ आ आपन मुड़ी अलगा के तनी आउर अगाड़ी झुक जाँ स।'

बिंदिया के चरित्र बेजोड़ बा। ओकरा बहाने लेखक समाज के सोच के तार तार क देले बाड़े। 'केहू ई ना चाहेला कि बिगड़ल लइकी से आपन बियाह करे। ई सभे भले चाहेला, जवानी से हँसीं, खेलीं, लपटाईं, बाकिर बिगड़ल जवानियो से केहू बियाह करे के ना चाही। आज के दुनिया के इहे चाल हऽ। पाप सभे करी बाकिर पापी से छुआए के केहू ना चाही।'

बिंदिया के परिस्थिति अइसन रहे कि ओकरा के टेसुआ बहावत, छाती पीटत समाज के कयदा के मुड़ी झुका के बर्दास्त कर लेबे के चाहत रहे बाकिर लेखक ओकरा के बहुत मजबूत आ प्रभावी देखवले बाड़े। 1957 के उपन्यास बा बाकिर बिंदिया के चरित्र 21वीं सदी के बा। बिंदिया जइसन संस्कारी लइकी अपना बाप के तीखा जवाब देत बिया। जब ऊ ओकरा प मँगरा से फंसे के अछरंग लगावत कहत बाड़े कि झमना से बियाह ना करबी त का मंगरा से करबी? त बिंदिया पहिले त एकदमें सुन्न हो जात बिया बाकिर फेर जवाब देत बिया कि, 'जब कहतारऽ त अब ओकरे से करब।'

बाप के सोझा आँख ना उठावेवाला के अइसन जवाब दीहल साधारण बात ना त तब रहे ना अब बा बाकिर अइसने प्रसंग से लेखक के विचार के पता चलेला। बिंदिया कवनो छुई मुई बन के नइखे जीयल चाहत। ऊ चौधरी के बेटी बिया, उपन्यास के नायिका बिया बाकिर जगह जगह एह बात के चित्रण भइल

बा कि ऊ खेत में घास गढ़े जात रहे, खेतन में भर हीक काम करत रहे, खेत के उपज बढ़ावे खातिर रात दिन एक क देत रहे। बिंदिया जवन अपना सुंदरता से गाँव भर में अंजोर कऽ देत रहे ऊ मेहनत में केहू से कम ना रहे। कहे के जरूरत नइखे कि भोजपुरिया मेहरारून के असली पहिचान ई मेहनते हउए। बिंदिया सोच लेत बिया कि ऊ झमना से बियाह क के अपना जिनगी के नरक ना बनाई। बलुक जवना मँगरा से ओकर झूठा संबंध जोड़ के बदनाम कइल गइल बा ओही से बियाह क के गाँव भर के देखा दिही कि ऊ केहू से दबेवाला नइखे।

आ बिंदिया जिनगी भर घुट घुट के जीये के बजाय गाँव छोड़ के एगो लइका संगे भाग जात बिया। बाद में कोदइयो के अपना गलती के पता चलत बा। ऊ पछतात बाड़न बाकिर सम्मान प एतना बड़ करिखा लागल बा कि उनका के कुछ बुझात नइखे। ऊ बिंदिया के घरे बोलावल चाहत बाड़न बाकिर समाज से डेरात बाड़न। इहाँ फेर जात के चमार बुद्धराम के बुद्धि काम आवत बिया। ऊ समाज के नस नस चिन्हत बाड़न आ कहत बाड़न कि, 'गाँव वालन के फिकिर जन करीं, गाँव लबारन के जमात हऽ। जात बिरादरी वाला सभ जीभचटोर होखेलन सऽ। तनिका मुंह मिठाइल कि जीभ मुँह में ढूकल। गाँव के नरक तऽ उहे सभ बनवले बाड़न सऽ।'

बाकिर अंत में असली गाँव जीत जात बा। धन के लालची, जीभ के चटोर आ चापलूस सभ कोदई के जाति से छांटे खातिर गांव बटोरत बा। बाकिर गांव जान जात बा कि धन बटोरे खातिर पंडित से मिल के झमना आ ओकर बाप कइसन तिकड़म कइले रहलन स आ सोना अइसन बेटी पऽ कइसन अछरंग लगवले रहन स। गाँव में अतना नैतिकता तब बाँचल रहे कि जब पूरा गाँव झमना के बाप भगत से शिव जी के पिंडी छुआ के साँच पूछल गइल तऽ ऊ गुमी साध लिहले। बाप बेटा पऽ जुर्माना लागल आ पूरा गाँव में बाप बेटा के छी छी होखे लागल। कोदई आ बिंदिया के इज्जत प लागल दाग हट गइल।

भले अंत के आदर्शवादी मानल जाव बाकिर ई ना भुलाए के चाहीं कि ई 70 बरिस पहिले के कहानी हऽ तब लोगन में भगवान के डरो रहे आ भीतर के इंसान जिन्दा रहे। जाति व्यवस्था मजबूत रहे, लेखक बिंदिया के जवना लइका जोरे भगावत बाड़े ओकरा बारे में ई बतावल नइखन भुलात कि ऊ अपनहीं जात के हऽ। लेकिन इहो सच्चाई बा कि कोदई बड़ जात के होखला के बादो चमार जात के बुद्धराम के गोड़ पकड़ लेत बाड़े। कहे के मतलब ई कि इंसानियत जात पांत से ऊपर रहे। आज जात पांत के मेटावे के खूब कोसिस होखत बा, बाहर से लोटा थरिया एक हो जात बा, बाकिर मन में गांठ बन्हा रहल बा। भीतरे भीतर साजिश रचल जा रहल बा आ धीरे धीरे गाँव खतम होत जा रहल बा। गांव खाली घर के समूह ना हऽ, ऊ तमाम प्रकार के जाति बिरादरी वाला लोगन के बीच, बड़का छोटका के बीच एगो मजबूत नेह के के बंधन के नाँव हऽ जवन बिंदिया उपन्यास में लउकल बा। ई उपन्यास खाली बिंदिया के कहानी ना हऽ, ई भोजपुरिया गाँव के कहानी हऽ, जवना में आखिर में जात पांत, धरम, पइसा सब हार जात बा आ गाँव जीत जात बा, प्रेम आ विश्वास विजय हासिल करत बा। आखिर में भोजपुरिया संस्कृति जीत जात बिया। ●●

❑ गुजरात केन्द्रीय विश्वविद्यालय, गांधीनगर

पाण्डेय कपिल के दोहा

✍ भगवती प्रसाद द्विवेदी

एकरा के पुन्नश्लोक आचार्य पाण्डेय कपिल के शख्सियत के दरियादिली ना, त अउर का कहल जाई कि तकरीबन पनरह बरिस पहिले जब उहाँ के दोहा–संग्रह 'जीभ बेचारी का कही' छपेवाला रहे, त ओकर भूमिका हमरा नियर अदना विद्यार्थी से लिखववनीं। खाली ओकरे ना, किछु आउर किताबन के प्राक्कथन ओही क्रम में लिखवावत गइनी आ आखिरी समय में एही काम खातिर एगो हाइकू संग्रह के डायरी थम्हा के एह निठुर दुनिया से कूच कऽ गइनीं। अपना अनुज पर अकूत नेह–छोह बरिसावे के उहाँ के ई एगो तरीका रहे। हमहूँ अपना औकात भर खूब भूमिका बान्हे के, भूमिकाबाजी करे के कोशिश कइले रहलीं। गजल का बाद दोहा उहाँ के प्रिय छंद रहे, जवना में उहाँ के मन–परान बसत रहे। आजुकाल्ह के 'तथाकथित व्यस्त' लोगन पर व्यंग करत अकसरहाँ उहाँ के कहि देत रहनीं :

अइसन कतना बाझ बा, अइसन कतना काम
अइसन का नाराजगी, छूटल दुआ-सलाम!

बकिर उहाँ के दोहन पर चरचा के पहिले एह छंद के परिपाटी पर अखियान कइल जरूरी बुझात बा। अपभ्रंश से विरासत में भेंटाइल दोहा सबसे पुरान आ सबसे अधिका शोहरत हासिल करेवाला छंद रहल बा। सोरठा के ठीक उल्टा, दोहा के विषम चरन में तेरह आ सम चरन में एगारह मात्रा होला। माने 24–24 मात्रा के दूगो तुकांत पाँती (दल), जवना के पहिला–तिसरका चरन में 13–13 अउर दोसरा चउथा चरन में 11–11 मात्रा होला, हर पाँती के बीच एक एगो यति (अल्पविराम) अउर सम चरन के तुकांत वर्ण अनिवार्यतः गुरू–लघु (51) होला, दोहा कहाला। भलहीं एकर पैदाइश संस्कृत के 'दोधक' छंद से भइल होखे भा 'द्विधा' (दूगो धार) से, बाकिर एकरा असर के सभे कायल रहल बा आ आठवीं सदिए से एकर विकसित रूप सरहपा से शुरू होके आज तक के रचनिहारन–पढ़निहारन के उदवेगत रहल बा। सूक्तिपरकता से तुरुंते आपन छाप छोड़े के ताकत एह छंद के खासियत ह ।तबे नू जिनिगी के सचाई के निचोड़ भा 'दोहन' से दोहा के नामकरण बतावल जाला। महाकवि बिहारी के ऊ अन्योक्तिमूलक दोहा आजुओ इतिहास में दर्ज बा, जवन महाराजा जयसिंह के विलासिता से उबारे आ जिम्मेवारी के एहसास करावे में लमहर भूमिका निबहले रहे:

नहिं पराग, नहि मधुर मधु, नहिं विकास एहि काल
अली कली ही सो बँध्यों, आगे कौन हवाल!

'नावक के तीर' आ दिल में पइसि के गम्हीर घाव करे के खूबी एकरे के नू कहल जाला। साइत एही से, आजु खाली हिन्दिए में ना, बलुक उर्दू, गुजराती नियर कई गो भासा में दमदार दोहा रचा रहल बा आ गजल के शेरो से बेसी ई छंद शोहरत के बुलंदी पर बा।

भोजपुरी में त आदिकवि कबीरे से दोहा लिखे के परम्परा शुरू हो गइल रहे। ओइसे साँच पूछल जाउ, त तुकांत लेखन के शुरूआते अपभ्रंश में दोहा छंद से भइल रहे। कबीर के 'साखी' में मुक्तक काव्य शैली में आ 'रमैनी' में प्रबन्ध काव्य शैली में दोहा के सिरिजना भइल रहे। आजुओ धार्मिक ढकोसला, पोगापंथी, भक्ति–भावना जइसन जरूरी मुद्दन पर कबीर के उपदेशमूलक दोहा लोगन के जबान पर बाड़न स। घाघ, भड्डरी, डाक से लेके आजु के समकालीन कवियन में ई छंद आपन खूब धाक जमवले बा। ओकरे नतीजा रहे जे भोजपुरी कविता विधा के खास पत्रिका 'कविता' जहाँ दोहा विशेषांक प्रकाशित कइले रहे, उहँवें 'भोजपुरी सम्मेलन पत्रिका' के दोहा पर केन्द्रित अंक आ फेरू 'भोजपुरी सतसई' (संकलन) आइल रहे, जवना में अठासी दोहाकारन के सात सौ से ऊपर दोहा का सँगहीं कविवर जगन्नाथ के एगो–दोहा विषयक शोधपरक लेखो शामिल रहे। एकरा अलावा 'खोंइछा' के दोहा अंक छपल रहे आ दोहा के एकल संग्रहो प्रकाशित भइलन स। ओइसे त सात सौ से अधिक आ हजार ले दोहा संग्रहीत कइल गइलन स, बाकिर सतसई दोहा खातिर रूढ हो गइल आ 'सप्तशती' से बनल ई नाँव एह छंद के उठान आउर चोटी पर पहुँचे के सूचक बा। बहरहाल, गद्य में आजु जवन लोकप्रियता लघुकथा के बा, ऊहे काव्य में दोहा के बा।

भोजपुरी में आचार्य पाण्डेय कपिल के नाँव कबो कवनो परिचय के मोहताज नइखे रहल। भोजपुरी भाषा आ साहित्य के निरमान आउर विकास में उहाँ के जहाँ अहम भूमिका रहल, उहँवें संगठनात्मक स्तर पर आखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन के आधार–स्तम्भ उँहें के रहनीं। पूरबी के बेताज बादशाह महेन्दर मिसिर आ ढेलाबाई के अशरीरी प्रणय पर केन्द्रित कपिलजी के काव्यात्मक उपन्यास 'फुलसुंघी' इतिहास रचि चुकल बा आ गजल–संग्रह 'कह ना सकलीं', 'परिन्दा उड़ान पर' मील के पाथर साबित भइलन स। दोहा छंद का प्रति आचार्यजी के लगाव के अन्दाज एही बात से लगावल जा सकेला कि उहाँ के 'भोजपुरी सम्मेलन पत्रिका' के जब संपादक रहनीं, ओही घरी पत्रिका के दमगर दोहा विशेषांक प्रकाशित कइनीं आ सम्मेलन का ओर से दोहा–संकलन 'भोजपुरी सतसई' के संपादनो कइले रहनीं। साइत, ओही घरी से दोहा में उहाँ के समर्पित भाव से रमला के नतीजा रहे– तीन सौ एकावन गिनल–चुनल दोहन के अनमोल संग्रह 'जीभ बेचारी का कहीं' के ई प्रकाशन।

'जीभ बेचारी का कहीं' के एक–एक दोहा दोहाकार के लमहर साधना, पोढ़ जीवनानुभव, दृष्टि सम्पन्नता आ वैचारिक प्रतिबद्धता के सूचक रहे। जीवन–दर्शन इन्हनीं में कूटि–कूटि के भरल बा। कतहीं तरल अनुभूति के सघनता बा, त कतहीं भक्ति–भाव के पराकाष्ठा। सामाजिक विसंगति, विद्रूपता, आर्थिक असमानता, राजनीतिक विकृति, भ्रष्टाचार, नैतिक मूल्यन के अवमूल्यन, साम्प्रदायिक आ जातीय संकीर्णता, संघर्षशीलता, जुझारूपन अउर जिजीविषा के सुर इन्हनीं के खासियत बा। कतहीं सोन्ह माटी के मिठास बा, त कतहीं अमानवीयता के भयावह रूप। समकालीन जिनिगी के सोगहग साँच आ ओह में झलकत मानवीय चेहरा के तस्वीर संग्रह के दोहन में देखल जा सकेला।

आजु के दहशतजदा महौल में छुट्टा साँढ़ बनल अपराधकर्मी आ डेराइल–सहमल सकल समाज। वातावरन के चित्र उकेरत कवि कहत बा:

घूमे छुट्टा साँढ़ जस, अपराधी रँगबाज
रहत डेराइल आम जन, सहमल सकल समाज।

आखिर आम आदमी, जाउ त जाउ कहाँ। एक ओर गहिर खाई, त दोसरा ओर पहाड़। बीच में पातर छवर पर थथमा लागल बा खाड़ मनई के। भला ऊ केने आ कइसे आगे बढ़े ?

एक ओर खाई गहिर, दोसरा ओर पहाड़
बीचे पातर छिउर पर थथमल मनई खाड़।

एक तरफ बाजारवाद, लूट–खसोट आ भ्रष्ट तरीका अख्तियार कके कसहूँ दरब हथियावे के होड़, त दोसरा ओर महनतकश के हाथ में लागल शून्य आ हारल–थाकल तन–मन।

आगे रेते-रेत बा, नइखे कवनो छाँव
आँधी बहुते तेज बा, लथराइल बा पाँव।

जहवाँ फिरौती, अपहरन, हतिया उद्योग का रूप में सरकारी संरक्षण पाके फरत–फुलात होखे, उहवाँ 'आम जन के हितैषी' खुदे आपन पीठ ठोकत सत्ता–बेवस्था के मगन भाव देखीं आ निगाह डालीं लोगन के दसा–दुरदसा पर।

बनल फिरौती-अपहरन-हत्या अब उद्योग
शासन अपने में मगन, साँसत में बा लोग।

भलहीं अलचार–बेबस के जून पर रोटियो–नून नसीब ना होखत होखे, बाकिर पाँच सितारा होटल में उन्हूकर छप्पन भोग लागत बा। बुझिला लोकतंत्र इहे नू ह!

पंच सितारा में लगे उनकर छप्पन भोग
दू रोटी खातिर इहाँ, तरसत बाटे लोग।

बाकिर पाथर दिल समाज से संवेदना के आस लगावल बेमानी बा। एही से नू नाता–नेह आ मूल्यन के पतनशीलता आजु सबसे अधिका फिकिर के विषय बा। एह कठकरेजी हालात में का गीत आ का गवनई।

अटट गरीबी, बेबसी, बीमारी आ भूख
एह सबके प्रति आर्द्रता आज गइल बा सूख।

XX XX XX

जिनिगी के एह घाम से सूखल जाता प्रीत
मउराइल संवेदना, गाईं कइसे गीत।

मगर ना गावे के मूल में खाली इहे बात नइखे। आजु साहित्य–कला के हलका में बेलूर–सहूर वाला के कदर बा आ सही माने में साधना करेवाला के परखनिहार केहू नइखे।

ना मात्रा ना छंद बा, ना लय-सुर, ना ताल
अजब बेतुका-बेसुरा भइल कला के हाल।

साइत एही से नू कबो बिहारी लाल के कहे के परल रहे:

करि फुलेल को आचमन, मीठो कहत सराहि
रे गंधी! मतिमंद तू, इतर दिखावत काहि!

बाकिर कवि कतई निरास नइखे। एक दिन जरूर संघर्षशीलता–साधना के जीत होई आ हठी अन्हार के भेदत अँजोर के लाली देखिके चिरई चिरंग चहचहा उठिहें स।

होखी घुप्प अन्हार पर जब अँजोर के जीत
गइहें स चह-चह करत चिरइन मंगल-गीत।

दोहाकार के कहनाम बा कि आँखिन के भाषा पढ़ि के आँतर के बात बूझे के चाहीं। बेचारी जीभ के औकाते का बा, जे ऊ भितरिया गूढ़ बात बता सके। आँखिन के मार्फत रूप के छटा निरेखीं आ दिल में पइसे के राह बनाईं।

आँखिन के आकाश में घहरे घटा सजोर
चमके बिजुरी रूप के, नाचत मन के मोर।

XX XX XX

आँखिन के भाषा पढ़ीं बूझीं मन के बात
जीभ बेचारी का कही, ओकर का औकात।

XX XX XX

कह पावे ना जीभ जे, बतला देले आँख
जहाँ पाँव ना जा सके, पहुँचे मन के पाँख।

एगो अउर दोहा अइसन सुघर बा कि ओमें रोमानी बिम्ब देखिके अभिभूत होईं:

जूड़ा में खोंसल रहे लाल फूल बेदाग
लागे, केहू रात में बरले होय चिराग।

आज के बड़बोलापन के युग में जब बेसिर–पैर के हाँके के आ अपने मुँह मियाँ मिट्ठू के होड़ लागल बा, कवि के विनयी भाव अचरज में डालि देत बा। सही माने में साधक आ फर–फूल से गदराइल छतनार गाँछ के इहे नू सुभाव होला। एह साधक के सादगी देखे–जोग बा:

कइलीं जे कुछ हो सकल, खाके सतुआ-नून
बाटे रउरा सामने, जे भी नीक-जबून।

एकदम सादगी से बहुत गुरू–गम्हीर बात कहल सभका बूता के बात ना होला। बहुत लमहर आ अहर्निश साधना का बाद आके ई सादगी आ सहजता आवेले। उर्दू के मशहूर शायर निदा फाजली जब एगो मासूम लरिका का मुँह से एगो आचरज भरल बात कहवावत बाढ़न, त ऊ एगो अमर दोहा बनि जात बा। एकरे के नू कहल जाता अन्दाजे बयानी।

बच्चा बोला देखकर मस्जिद आलीशान
अल्ला! तेरे एक का, इतना बड़ा मकान!

आचार्य पाण्डेय कपिल के दोहा उहाँ के कठोर साधना आ मनुष्यता का प्रति वैचारिक प्रतिबद्धता के प्रतिफल बा। भाषा के बहत पानी नियर पनिगर प्रवाह आ भोजपुरी के खाँटी माटी के सोन्ह–मीठ मुहावरादार गमक–चमक हर दोहा के जानदार बना देत बा। चोट आ कचोट दूनों एह दोहन के खासियत

बा। भाव अभिव्यंजना के तीव्रता आ कहे के अन्दाज माने बाँकपन अधिकतर दोहन के प्राणवान बनावत बा। कतहीं सूक्तिपूरकता के दर्शन होत बा, त कतहीं बिम्बधर्मिता के। अन्योक्तिमूलक दोहो सिरिजाइल बाड़न स। ई बात खास तौर से रेघरियावे लायक बा कि एह दोहन में सउँसे दुनिया आ जिनिगी के समकाल अपना गहिर–गझिन संवेदना से लैस होके मौजूद बा। समसामयिक विषम हालात के तस्वीर उकेरे में आ सामाजिक चेतना जगावे के दिसाई महल करे में कवि कहीं–कहीं उपदेशको के मुद्रा में खाढ़ लउकत बा। कठिन साधना से सहजता हासिल करेके कवि के सीख हबेखे आ आचरन में उतारे जोग बा:

सहज भइल बहुते कठिन, कठिन भइल आसान
कठिन साधना से मिले, सहज बने के ज्ञान।

लघुता के एह जमाना में, जब जिनिगी के आपाधापी, जोड़–घटाव में समय के अभाव साफे लउकत बा, एह प्रभावी दोहन के प्रासंगिकता अउर बढ़ि जात बा। एक बेर बर्नाड शॉ कहले रहलन कि जब समय के पाबन्दी ना होखे, त बेगर सोचले–समुझले घंटों भासन झारि सकेलन, बाकिर जब कम–से–कम समय में किछु कहे के होखे, त ओकरा खातिर घंटों तइयारी करेके परी। एह चुनमुनिया छंद में रचाइल ई कृति बरिसन के मौन साधना के प्रतिफल ह, जवन कतहीं संवेदना के झकझोरत बा, घिरिकारत बा, त कतहीं अभिभूतो करत बा। मथानी नियर संवेदनशील मन के महे–मथे आ रसगर लैनू निकाले में एह दोहन के सानी नइखे। विषय का मुताबिक विभाजन ना कइके शुरूआती आखर के अकारांत क्रम में दिआइल ई दोहा अंताक्षरी करेवाला लोगनो खातिर सहायक हो सकेलन स। कतहीं–कतहीं आ गइल पुनरूक्ति, सपाटबयानी आ खुल्लमखुल्ला उपदेश से बचल गइल रहित, त एह कृति के उत्कृष्टता में अउर चार चान लागि गइल रहित।

कुल्हि मिलाके, तीन सौ एकावन बेशकीमती दोहन के ई गुलदास्ता भोजपुरी काव्य प्रेमियन खातिर एगो अइसन यादगार उपहार बा, जवन अपना अभिनव गमक–चमक से पढ़निहारन के दिल–दिमाग के आन्दोलित आ सुवासित करत रही आ रचनिहार नवकी पीढ़ी के प्रेरनास्त्रोत बनल रही। उद्धरणीयता के गुन से जब–जब मोका–बेमोका एह दोहन के उद्धृत कइल जाई, त पुन्नश्लोक पाण्डेय कपिल जी का प्रति सरधा से आदरांजलि अर्पित कइल जाई। उहाँ के पावन स्मृति के प्रणाम करत हम 'जीभ बेचारी का कही' शीर्षक के तर्ज पर अपना लेखनी के बौनापन के इजहार करत बानीं– 'कलम बेचारी का लिखी, ओकर का औकात।'●●

❑ शकुंतला भवन, सीताशरण लेन, मीठापुर,
पोस्ट बॉक्स–115, पटना–800001 (बिहार)

Anjoria.com
पहिलका भोजपुरी वेबसाइट

जिनिगी के 'आग' आ 'राग' में पागल कविताः 'कुछ आग कुछ राग'

✍ डॉ0 शारदा पाण्डेय

आग आ राग दूनू मन के आंदोलन के भावात्मक अभिव्यक्ति हऽ। मन कबो खाली ना रहे, ओकर प्रकृति चंचल हऽ। तरंग के आह्वान हऽ। एही से एकरा के 'मारूत् तुल्य वेग' से उपमित कइल गइल बा। आ ओहू में कवि के मन? ऊ तऽ भाव के असीम सागर हऽ, जवना में कतना आ कतना तरह के लहर उठेली सऽ एकरा के केहू ना जानि सके। ओकर भाव 'स्व' से 'पर' तक ओहू से ऊपर पूरा संसार तक हिलोर जाला। अशोक द्विवेदी जी अपना 'अछरे अछर सबद भाखा बनि जाला' में लिखलहूँ बानी कि 'निज के विस्तार करत कवि अपना संवेदनशीलता के जवरे समय, समाज, देश आ दुनियाँ के देखे समझेला। हमरो कविता में देखे–समझे के ई आत्मीय कोशिश लउकी। एही में समय आ जिनिगी के जथारथ रचाइल, बिनाइल मिली।'..... जिनिगी के आग आ राग दूनू एमे झलकत मिली।' एह संग्रह के ईहे देन हऽ, आ हमरा ई माने में तनिको संदेह नइखे कि कवि आ ओकर कविता एह मानदण्ड पर पूरा सफल भइल बा।

एह संग्रह में अतुकांत आ गीत खण्ड लेके कुल 79 गो रचना बाड़ी स, जवना में भ्रष्टाचार, महँगाई, खतम होत संबंधन के मिठास, गाँव के सीधा–आत्मीय गाँवपन के अलोपित होत भाव के भाषा, संवेदनहीनता अदहन नीयर कवि के मन में खउलता, तऽ दोसरा ओर इयाद में छलकत, झाँकत, मुस्कात फागुन, होली, सावन, प्रेम, मातृत्व, वात्सल्य के मधुर रागो सनाइल बा, जवन जिनगी के संघर्ष, रसहीनता, एकरसता में अचके राग के रंग घोरि देता। पाठक भावन के विरोधी, बाकिर यथार्थ भूमि–भाव के स्पर्श करे में कतो हिचकिचात नइखे, बलुक पूरा पृष्ठभूमि–रस भूमि के देखत अनुभव करऽता। पहिलकी अतुकांत कविता 'गाँव के कहानी' साचहूँ गाँव के अतीत आ वर्तमान के जीवन शैली के अतुकांतता के रेखांकित करे में समर्थ बा। ई एगो एगारह पृष्ठ के 'दीर्घ तनु' कविता हऽ जवन ठेठ भाषा के खाँचा में बिनाइल, दुःख, अभाव, पारस्परिक भाविक अविश्वास, ईर्ष्या, स्वार्थीपन के मानसिक डिजाइन प्रस्तुत कइले बिया। एकर भाषा, प्रतीक, बिम्ब प्राकृतिक वातावरण आ मानसिक अवरेबी वातावरण के सजीव चित्र उरेहले बा, –

1. 'बिहँसते रहे जवन सरेहि आ सिवान गाँव केऽ
आज अदकल सहमल बा
ताल पोखरा सुनसान/दरकत भिहिलात अरार वाली नदी
गुमसुम खरिहान/बाग–बगइचा/बँसवारि एकदम भकसावन !
फरे ना फुलाय/बलुक हर साल कटाय/
काजानी कवना आँच से/लहकत बतास/बन्हले हहास/
हुहुकारत बा/डाह, इरिखा आ खीसि में बुताइल/

2. ''पुरान नोनियाइल ईंटा के खधरल देवाल वाला खपरइला घरन आ/नीचे मुँहे थसकत–ओलरल मड़इयन के बीच कइले सीना उतान/दस बीस गो पक्का मकान। खोंसले खपड़ोई में एन्टीना/वैश्वीकरण के झंडा फहरावत बाड़न सऽ।''

3. 'अब, कुछ लोगन के ठेंगा पर/बा पंचन के पंचाइत आ पंचाइत घर/जेकरा दरकल देवाल में/नीचे मुसकइल/ऊपर बिरनी के खोंता बा/ओरी में सपटल बाड़ी स बिछकुटिया/फाँफर जगहा में/काहें ना अड्‌डा जमइहेंसऽ करइत।

4. आ ठाकुर के मठिया से/परधान के खोरी ले/दूगो गड़ही बाड़ी स/बहुत बरियार/चारू ओर से छिछिल, बीच में गहिर।.... ओकरे करिया पानी में/उतराइल बा खर–पतवार अस/संस्कृति आ रेवाज/नेकी–बदी, दोस्ती–दुस्मनी/कुछऊ साफ नइखे। अतना जरतपन आ अनदेखउवल/कि सब, भितरे भीतर रिन्हात चाउर अस खदकत बा।

5. 'रेवाज आ रसम/केनियो मोरी में लजबजाता।'

सँउसे कविता मन के अइसने धन्हकत आगि से उपजल बाड़ी स। ठेठ भोजपुरी शब्दन के प्रयोग से सजीव पुरनका भोजपुरी वातावरण खड़ा हो जाता। दबंग आ दलित शब्द जवन आजु समाज में घृणा, अलगाव आ ईर्ष्या के आगि लगावता ओकरो कटाक्ष भरल बानगी देखे जोग बा–

'टेढ़की टिसुरी बो घोंटावेले,

''हँ हो बहिनी। हमन केकरा ले बाउर ? अरे, तहरा जमीन बा/त हमरा जाँगर बा, नोट बा/बस एगो जतिए नु छोट बा ?'' तरमसि के रहि जाली ठकुराइन/ठाकुर हो जालन सुनि के बहिर।'

अब ई गाँव–गाँव ना रहल। सामाजिक ताना बाना छितराइ गइलबा, ना आचरण में विनम्रता रहल ना भाषा में मर्यादा। अइसन समाज–गाँव के रूप, संस्कृति कुल्ही भुला गइल आ उचाट शून्य हो गइल।

''शहर बनत–बनत गाँव/बहुत पाछा छूटि गइल/ढेर तेज चलले का चक्कर में/ओकर भुभुन फूटि गइल।

आजु गाँव जोहऽता–

''कि कब अइहें रामजी सिरीकिसुन, लछुमन
कब अइहें खुदाबक्स, नजीर आ घेंटा चमार
गावे गवनई, बजावे हरमुनिया।'' जोहते रहि जाता गाँव।'

मेहरारू के जीवन एगो परम्परा आ 'रेवाज' में बन्हाइल बा। बेलिया सभके खोमसन सुनत कोना अँतरा में लुकात डँटाट बड़ भइल। आन घरे गइल। बहुरिया बनल। माई फेरू दादी भइल। अब बहरा निकसेले। दुअरा बइठेले। नाती के दूध पियावेले नातिन के झहियावेले आ जवन अपने सुनते रहल ऊहे दोहरावेले –''का हो, हरे चलबू ? बनबू गवन्नर? बाप से दुलरइहऽ। हमरा से ना।'' एकरा माध्यम से कवि के कहनाम बा कि नारियो नारी के विकास में बाधक बिया। ऊ परम्परा तूरि नइखे पावत। बहरी अँजोर अबहियों ओकरा के छू नइखे पावत। ई एगो कटु व्यंग्य बा। सुधि भा इयाद अतीत के कहानी हऽ ओकर मिठास अदिमी मने मन पगुरसवेलन। माई अपना वात्सल्य में भेंइ देले, आँखी में लोर बनि के सुता देले। अपना कर्मठता, सजगता आ भाविक रसार्द्रता में डुबा लेले, अपना सुख के ना, संतान के सुख पहुँचावे के तपस्या में निरत लउकेले, तऽ पत्नी आ प्रेमिका के भाव–भंगी फूल के सुगंधि आ रसयय वातावरण के जमा जाले। माई के इयाद, तुहार सुधि, हमार पियास, अइसन कई गो कविता भावन के मोन्हा हई सऽ। तोहसे विलग होके, हमार पियास, गाँव आ बगइचा अपना रूप, व्यवहार आ धिरवल भंगिमा से, बेर–बेर इयाद आवेला, आत्मीयता के रस घोरेला आ अब ओही भाव के अभाव 'कवनो टभकल फोड़ा लेले/भीतरे भीतर कँहरेलों। 'हंसनाथ' अइसन सभके अपना गीत–भक्ति लय में बान्हे वाला लोग अब कहाँ बा? अंतोदय के बाबू के मकान, एकता, साँप, सदी के अंत अइसन कविता समय आ बदलत समाज में भ्रष्टाचार, अवसरवादिता, राजनीतिक दाँवपेंच, नैतिकता के ह्रास पर कठोर प्रहार करत बाड़ी स। 'समय देखावेला। जथारथ के नोचाइल चोंथाइल/असली चेहरा/समय देला नसीहत/अपना अंदाज से, हर घड़ी।' ई हमनी के जाने के परी।

''जिनिगी भर, नूने तेल लकड़ी जुटावत/ईजत आबरू जोगावत ... कबो दुश्मन घर में घुसि आइल/बनके दोस्त, कबो घरे में से निकलि आइल दोस्त/बन के दुश्मन रहि–रहि चिहइनी जा/बाकिर चेतनी जा ना।'' एहले सटीक कथन का कहाई। ई कविता पाठकन के मन में चिकोटी कटला नीयर वंश में देता। 'उजियार', वसंतोत्सव प्राकृतिक रूपोल्लास के भाव से लबरेज बा। एमे आ 'ओठ खुलल' में कवि के वात्सल्यों छलकल बा। 'सरकारी अलाव', 'गाँव खामोश' बा ऊहे भ्रष्टाचार, उपेक्षा के दुःख, 'आदिमी अदिमिए लेखा लउके' में, नया कौनो ठौर में प्राकृतिक दोहन, भावहीनता के दुःख फफाइल बा। 'चिठ्ठी',

'जनम दिन', 'हथेली पर जोन्ही', में मानवीय कोमल भाव छलकत बा। कतना कहल जाउ? खर जिउतिया, इयाद अइब के चिट्ठी तहार लइकी, 'माटी के लोना' अइसन कतना कविता आगि आ राग दूनू के संश्लिष्ट भाव के बानगी से भरल बाड़ी सऽ।

पहाड़ प्राकृतिक रूपच्छता आ मानवीय संवेदना से भरल एगो सुन्दर चित्रात्मक लमहर कविता बा। 'लहर समय के' से गीतात्मक रचना के प्रवाह प्रारंभ भइल बा। जवना में भोजपुरी के क्षेत्रीय परम्परा, बचपन के संग्रही प्रवृति, प्रेम के पहिली छुअन के कोमलता बोलल बिया, जेकरा के समय के धार बहाले गइल। परम्परा सुमिरन के संगे श्रम के पसीना अपनहीं चमके लागेला, कर्म में धर्म के आश्रयिता, नीम के छाँह, राम के मँड़इया ई कुल्ह भुलाला ना, अतीत के एक एक गो क्षण जीएला दहकेला, लोर बनि ढरकेला, अमृतरस से सींचल नेह नाता परंपरा के बान्हे चाहेला। कवि के व्याकुलता, अनुराग कुल्ही एह कवितन में आत्मीयता से पूरा सराबोर बा। उमिर के सरकत हाथ से कवि अबहियों ओह बातावरण के थाहे–जाने चाहता 'लिखिहऽ तनी' में ई लहर हिलोरता तऽ गाँव हूँ से अपना प्रवासी के लउटावे के भाव उठता 'तूँ घरे लवटि आवऽ में, बाढ़ में गाँव के पीड़ा मन में कसकता। 'राजा आ लोककवि' के बहाने ऐश्वर्य–विलास के मानसिकता आ लोकजीवन के कर्म निष्ठा के जीवन्तता एह देश के यथार्थ के उजागर करता। 'ऊ अँजोरिया कहाँ से सुधर लागे', 'हमहन के झूठे उमेद रहल तोहसे', 'जीअल सरल नइखे' कुल्ही में अनचाह बदलाव, भाव–विभ्रम के टीस बा। 'मलिकार काका' के जिनगी एक दृढ़व्रती कर्मनिष्ठ के चरित्र बा। अतना कुल्ह देखत, सँजोवत, बोलत, स्वीकारत क्षुभित कवि राग के जीअल क्षण के श्रृंगार के पिटारी नियर बेर–बेर खोलत, देखत रसमयता में डूब जाता 'बसंत फागुन' के मनुहार ओकरा भुलात नइखे। कइसे भुलाउ जबकि 'बुढ़वो मन से रंगाइ गइल फागुन में।'

व्यक्तिगत आ सामाजिक राग–आग से अलगा देश के प्रति कवि के प्रेम स्वाभिमान के रंग में रँगाइल बा। भारत के भौगोलिक रूप वर्णन तऽ पारंपरिक बा, बाकिर भाव में उत्कट उफान बा 'मोके देसवा के बाटे गुमान,' 'सांस्कृतिक मूल्यबोध के देश–गीत, कवि, तूँ धरती के गीत लिखऽ में एकर धार–प्रवाह दर्शनीय बा। बाकिर मुख्यतः कवि प्रेम के गायक बा ऊ प्रेम घर–परिवार, पति–पत्नी, पिता–संतान, माई–संतान, के होखो भी गाँव–खेत, खरिहान, बाग–बगइचा, प्रकाश–प्रकृति के सम्मिलन के। राजनीति से दू–चार भइल बिनु, नेतन के दाँव–पेंच के देखत–झेलत बिनु आजु के कवनो नागरिक कइसे रहि सकेला?

द्विवेदी जी के भाषा टकसाली आ निठाह भोजपुरी तेवर के भाषा हऽ। कऽतो – कऽतो अइसन कठिन ठेठ भाषा बा जहाँ कवि के ओह शबदन के अर्थ लिखे के परत बा। अइसन हिन्दी–भोजपुरी के ख्याति लब्ध विद्वान, माटी के कवि के कविता के आस्वादन अपना–आप में सौभाग्य कहाई। उनुका एह भाव सागरीय रचना खातिर साधुवाद। ●●

❑ 225 / 142, बाघम्बरी हाउस स्कीम, अल्लापुर, इलाहाबाद-6

फोटो ग्राफर, लेखक, कवि भाई लोगन से निहोरा.......

(1) फुल स्केप कागज पर साफ सुन्दर लिखावट में भा कृतीदेव 10 फॉन्ट में टाइप कराके रचना–सामग्री आ फोटोग्राफ रजि0 ड़ाक से भेजीं अउर paati.bhojpuri@gmail.com, या ashok.dvivedipaati@gmail.com पर मेल करीं।

(2) पत्रिका में रिपोर्ताज रपट, फीचर सामग्री भेजत खा, साथ में ऊहे चित्र/फोटो भेजल जाव, जवन बढ़िया आ प्रकाशन जोग होखे। आपन संक्षिप्त परिचय आ नया फोटो साथ में भेजीं। (रजि0 डाक से)

(3) पाठक भाई लोगन से विनती बा कि पत्रिका का बारे में, आपन प्रतिक्रिया/विचार भेजत खा, आपन नाम पता, पिनकोड सहित आ मोबाइल नंबर भेजीं। पता पत्रिका में छपल बा।

(4) संस्कृति–कला संबंधी आलेख बढ़िया चित्र रेखाचित्र, फोटोग्राफ के साफ प्रिन्ट–आउट का साथे भेजत खा ओकरा तथ्य–परक प्रामाणिकता के जाँच जरूर करीं। संपादक का नाँवें ईमेल पर फोटोग्राफ भेजल जा सकेला बाकि लिखित रचना के प्रिन्ट रजि0 डाक/कुरियर से भेजल जरूरी बा।

(5) निजी खर्चा पर निकलेवाली आ बिना लाभ के छपेवाली अव्यावसायिक पत्रिकन के सबसे ज्यादा सहयोग ओकरा लेखक कवियन आ पाठकन से मिलेला। ई समझ के एह पत्रिका के पहिले खुद ग्राहक बनी अउरी दुसरो के बनाईं।

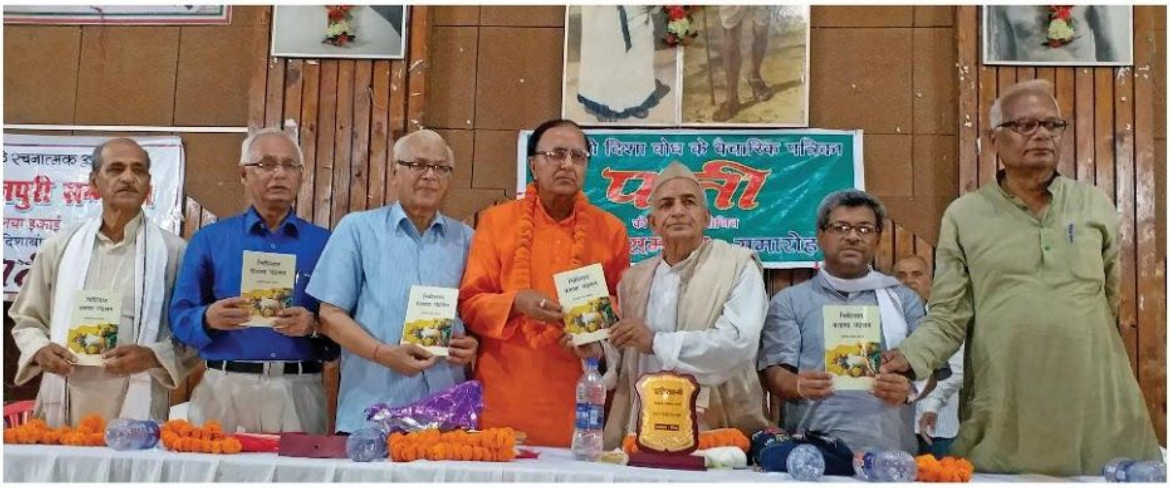

श्री विनोद द्विवेदी के लघुकथा संग्रह ''कहनी-अनकहनी'' के विमोचन

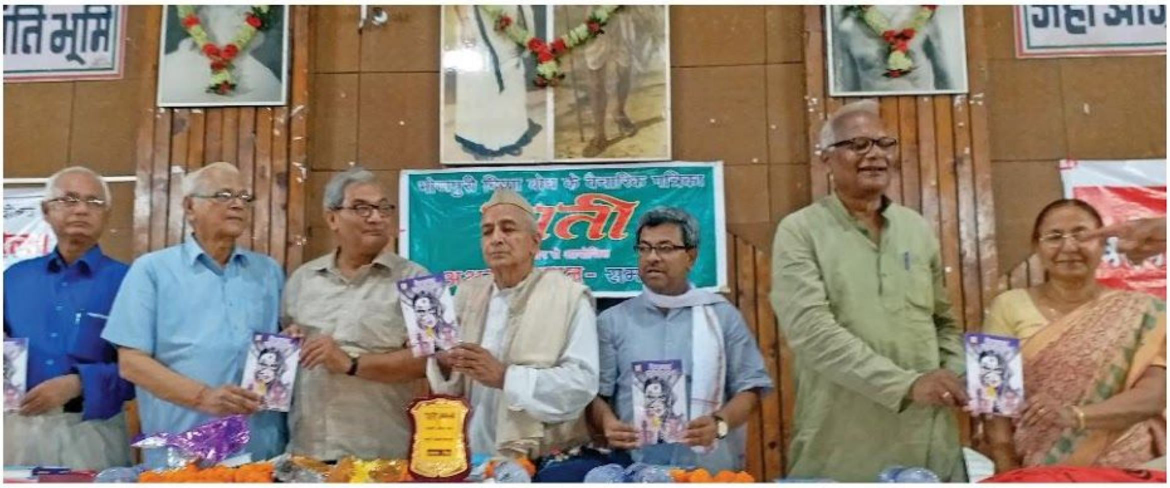

श्री कृष्णकुमार के उपन्यास ''एगो रहलन लक्षुमन मास्टर'' के विमोचन

पाती रचना-मंच के सांस्कृतिक आयोजन में गोड़ऊ नाच के प्रस्तुति

पाती रचना-मंच के सांस्कृतिक आयोजन में ओमप्रकाश के गायन

पाती रचना मंच से प्रतिनिधि भोजपुरी कवियन के कविता-पाठ

•• भोजपुरी पत्रिका 'पाती' के अंक 88–89 एह माने में बेजोड़ बा कि छपाई–सफाई में एतना दमकत पत्रिका भोजपुरी में अउर कवनो नइखे। आज अगर भोजपुरी के सरकारी मान्यता रहित त ई पत्रिका अपना स्वस्थ लेखन, स्वच्छ मुद्रण आ सुन्दर सम्पादन खातिर ओइसही पुरस्कारल जाइत, जइसे कवनो जमाना में 'धर्मयुग' बगैरह समादृत हो रहे।

एह अंक के आरम्भ श्रद्धांजलि सम्मान से होता जेमे खुद का सम्पादकीय में कविवर मोती बी0ए0 के एगो सामयिक गीत सादर स्मरण करे के साथ डा0 अर्जुन तिवारी के आचार्य धरीक्षण मिश्र पर आलेख, भगवती प्रसाद द्विवेदी के स्व0 परमेश्वर दूबे शाहावादी पर स्मृति लेख पाती पत्रिका के पुरान आ नया का साहित्य में सेतु के काम करत बा। अइसहीं कवितो मे स्व0 रामनवल मिश्र आ स्व0 कैलाश गौतम के रचना का साथ उपस्थिति से पत्रिका में चार चाँद लाग गइल बा। वर्तमान कवियन में श्रीमती ऋचा द्विवेदी, शशि प्रेमदेव, गुलरेज शहजाद, नरेन्द्र पांडेय, शिवजी पांडेय रसराज, अशोक कुमार तिवारी, हरेश्वर राय, मधुरेश नरायण, हीरलाल 'हीरा', केशव मोहन पांडेय, डा0 मधुबाला सिन्हा, गुरुविन्द्र सिंह आ शिलीमुख का कविता से पत्रिका अउर रसमय आ मुखर भइलि बा।

कहानी आ लघुकथा में 'सुग्गी' (डा0 रामदेव शुक्ल) कुनिया (अनिल ओझा 'नीरद') सवाल दर सवाल (डा0 प्रेमशीला शुक्ल) अन्हार में समात सूरज (डा0 आद्याप्रसाद द्विवेदी) नाँव (आलोक पाण्डेय) घर के आड़ (डा0 आशारानी लाल) आ नया लेखक के किताब (राजगुप्त) अइसन कथा साहित्य बा जवना से पाठक तइयार होता। हमरा इहां से ले जाके, जे भी पत्रिका के पढ़ल, ऊ ए कहानियन के प्रशंसा कइल। कहानी नीक बन परल बाड़ी सऽ।

निबन्ध आ संस्मरण में डा0 शारदा पांडेय के लेख 'ई विभाजन' विचारोत्तेजक बा। 'दाँत' पर लिखल डा0 नन्द किशोर तिवारी के ललित निबन्ध आ डा0 सुमन सिंह के संस्मरण 'पगली आजी' पढ़े में बड़ा रोचक बा।

राउर तीन गो कविता (चउकठ के भीतर, चउकठ के बाहर आ स्टेटस दुबारा प्रकाशित करे लायक रहली) सऽ। एह अंक खातिर हम विशेष रूप से राउर आभारी बानी, जेमे हमार दूगो कविता के प्रमुखता से छपले बानी आ करीब पचीस साल पुरान 'एक कड़ी गीत' पुस्तक के समीक्षो बहुत खोजबीन के रउरा छपले बानी। भोजपुरी साहित्य के राउर ई सेवा स्मरण कइल जाई।

बतौर सम्पादक रउरा के एह बात खातिर बधाई कि 'पाती' के एगो रखनउक अंक आप अपना आँख का इत्र से गमका के निकलले बानी।

अन्त में कवना मूल्य आ आदर्श खातिर पत्रिका से जुड़ल लोग संघर्षिआइल बा एहू पर समय–समय पर विचार होत रहे के चाही। अगर खाली सरकारी तौर पर प्रचारल मूल्यन, आदर्शन आ योजना खातिर कदमताल हो रहल बा आ एकरे नाप के कविता–कहानी सीये में लागल बा सब, त हमरा समझ से ई पर्याप्त नइखे। आपनो भी कुछ मूल्य आ आदर्श होखे के चाही जवना पर बहस होय। अगर ई सरकारी प्रचार से हट के भी होखे त कवनो बेजाइँ नइखे।

❑ **आनन्द संधिदूत /वासलीगंज, मिर्जापुर, उ०प्र०**

•• 'पाती' के पछिला आ एह अंक–88–89 के देखि के ई सुखद लागत बा कि एम्मे स्तरीय कविता, कहानी आ निबन्ध का साथ समालोचना/समीक्षा खातिर भरपूर जगह दिहल जा रहल बा। अइसे त सुरुवे से हम एह पत्रिका का सज्जा आ परोसल सामग्री से परिचिते ना, प्रशंसक रहल बानी। अपना भाषा का स्तरीय साहित्य का सँग–सँग, एमे भाषा आ व्याकरनो सम्बन्धी लेख छपल रहल बा आ दुसरा ओर समय के समाजिक–सांस्कृतिक स्थिति पर पत्रिका के पैना नजर रहल बा, तब्बो हर तरह से संपूरन पत्रिका भइलो पर जब भोजपुरी के पछिलका दौर पर, आकलन–मूल्यांकन आ बतकही वाला लेख छपेला त, मन खुश हो जाला। एहू अंक में संपादकी का अलावा बिपिन बिहारी चौधरी आ ब्रजभूषन मिश्र

का कविता पर सौरभ पाण्डेय के संस्मरणात्मक आलोचना का साथे, परमेश्वर दूबे 'शाहाबादी' पर भगवती प्रसाद द्विवेदी आ शारदा पाडेय के कहानियन पर समीक्षा बहुत बढ़िया आ सार्थक लागल।

❑ **डॉ० सान्त्वना, मालवीय नगर, नई दिल्ली**

•• 'पाती' पत्रिका का मार्च, अप्रैल, मई, जून 2018 अंक मिलल ई अंक पत्रिका क 88–89 वाँ हवें। इंटरनेट आ मोबाइल के दुनियाँ में, कवनो पत्रिका क येतनी लमहर यात्रा सुखद अचरज में भर देवे वाली बा। एकरे बदे पाती क सम्पादक डॉ0 अशोक द्विवेदी आ 'पाती परिवार' क कठिन मेहनत, लगन आ अपने तन–मन–धन के समपरण भाव, बन्दन कइला क योग्य बा। हम येकरे बाद बड़े भाई अशोक द्विवेदी के साथ सराहना करब कि ऊ अपने व्यवहार आ निष्ठा से एतनी पाठक अवर लेखक लोगन के अपने यात्रा में संगे रखले बाडें। कविता, कहानी, संस्मरण, व्यंग्य आ समायकिक सांस्कृतिक समाचार से भरल–पूरल इ पत्रिका, नेह से सनाइ के एक प्रकार से फूलन के गुलदस्ता बन गइल बा। ए गुलदस्ता में हर रंग के फूल गुँथाइल बा।

कवनो पत्रिका क सार बिन्दु ओकर संपादकीय होला। केतना पाठक लोग त केवल संपादकीय पढ़िके पत्रिका के सरिया के कवनो कोना–अँतरा में रख देले। लेकिन ए दिसाइ 'पाती' के एक अलग उदाहरन बा। पत्रिका के संपादकीय त देश अवर समाज के कवनो गंभीर समस्या पर लिखले रहेले बाकिर अन्दर के सामग्री भी एतना प्रौढ आ रसगर रहेले कि कवनो पढ़निहार के धेयान अपने दिसाई बरबस खींचि लेले। ये अंक के सम्पादकीय 'कटिया के बहाने, मोती बी0ए0 के कविता' पर केन्द्रित बा। मार्च–अप्रैल में उत्तर भारत में फसल के कटिया होले। किसान आ बनिहार सब अपने खेती–किसानी में बाझल रहेला। एह बिन्दु के द्विवेदी जी अपने सम्पादकीय में उठवले बाड़े आ ये ही संगे भोजपुरी के सेसर कवि स्व0 मोती बी0ए0 के एक कविता क भी इयाद कइले बाड़े। पूरा कविता में खेतिहर–मेहनतकश के मेहनत के तारीफ कइल गइल बा। अगर कवनो समाज आ पीढ़ी मेहनत से जीव चुराई त ओकर सत्यानाश त देर–सबेर हो जाई' एमें कवनो सन्देह नाहीं बा।

ये अंक के एक खास महत्व बा एसे बा कि एमें हिन्दी संस्कृत आ भोजपुरी कऽ चर्चित विद्वान आचार्य नन्दकिशोर तिवारी, पर विशेष चर्चा कइल बा। आचार्य जेतना बड़ विद्वान हवे, उतने बड़ श्रेष्ठ आदमी हवे। उनके व्यवहार, बोली, बाणी आ बात–बात में संस्कृत आ भोजपुरी के छौंके लगावत किस्सा–कहानी भा ठेठ मुहावरा। अइसन महापुरूष के ऊपर विशेष फोकस पत्रिका क ई अंक कइले बा, एकरे बदे भाई द्विवेदी जी साधुवाद के हकदार बारें। हमके उमेद बा कि आगे भी अइसन क्रम चलत रही।

पत्रिका मे छपल डॉ0 सुमन सिंह के 'पगलो आजी' संस्मरण विधा के नीमन उदाहरन बा जवना में एक संदेश भी झलकत बा। अइसन चरित्र समाज में आजो कबो–कबो देखे के मिलि जाले। ये अंक में छपल हर कहानी मे कवनो न कवनो संदेश समाज अवर देश बदे दियाइल बा, बाकिर प्रो0 रामदेव शुक्ल क कहानी 'सुग्गी' आजु के समय के कसौटी पर स्वागत योग्य बा। आज के पुरूष समाज आपन सोचि बदल के अवर नया जमाना के मोताबिक लड़किन के आगे बढ़ले के मोका देव। अगर एह में से कवनो चूक होई त आवे वाली पीढ़ी हमके माफ नाही करी।

संक्षेप में हम इहे कहब कि अइसे त 'पाती' क हर अंक भोजपुरी भाषा क प्रचार–प्रसार में जुड़ले बा, येकरे अलावा, हर तरह के देश समाज, आ देशान्तर तक के समसामयिक समस्यन पर हर तरह के सामग्री देबे खातिर पत्रिका में जगह दिहले जाला द्विवेदी जी अपने संपादकीय में राष्ट्रीय आ अंतराष्ट्रीय विषयनो पर विचार कइले रहेले आ बहस खातिर आवाज उठवले रहेले। येकर संपादकीय मौलिक सोच खातिर जमीन देत रहे ले।

लोकभाषा भोजपुरी में निकरे वाली अइसन नीमन स्तरीय पत्रिका खातिर हमार पत्रिका परिवार के लोगन के प्रति शुभकामना अवर आसीस बा।

❑ **डॉ० आद्याप्रसाद द्विवेदी, मालती कुंज, सिद्धार्थ इन्कलेव विस्तार,**
एच.आइ.जी.- II, 32, तारामंडल, गोरखपुर

''पाती'' कला-मंच

स्वस्थ लोकरंजन खातिर परिवारिक सांस्कृतिक आयोजन बदे गाँव-जवार के अचर्चित, नवोदित गायक - कलाकारन के मंच

(उद्घाटन - 15 सितम्बर 2018 राजेन्द्र - भवन, आडिटोरियम, दीनदयाल उपाध्याय मार्ग, आई० टी० ओ०, नई दिल्ली)

वर्ष 2018 के पाती - ''अक्षर-सम्मान'', श्री अनिल ओझा 'नीरद', श्रीमती प्रेमशीला शुक्ल, विजयशंकर पाण्डेय आ डा० शत्रुघ्न पाण्डेय के दिहल गइल

वाराणसी में श्री विजयशंकर पाण्डेय के नया उपन्यास ''देश खातिर'' के विमोचन समारोह

रजि0 नं0 – आर0एन0 3548/79 (वर्ष 1979) ISSN-2456-9372 पाती अंक 90 सितम्बर' 2018

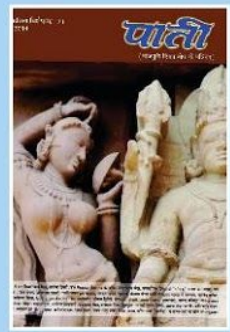

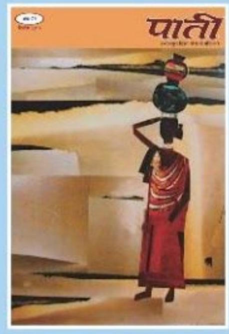

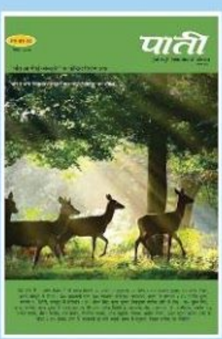

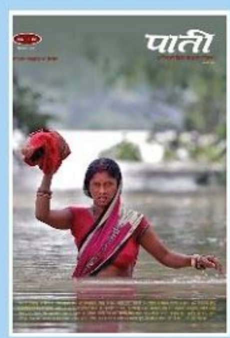

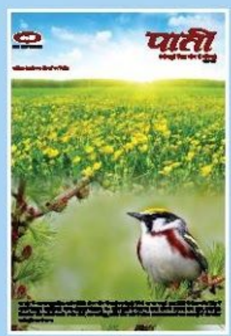

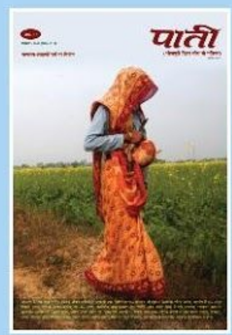

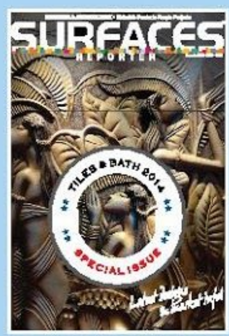

BIG SEA MEDIA PUBLICATION

F-1118, GF, C.R.PARK, NEW DELHI-110019
Ph.: 08373955162, 09310612995
Email: ashok.dvivedipaati@gmail.com, plyreportersubscription@gmail.com

स्वामित्व, प्रकाशक, सम्पादक डॉ० अशोक द्विवेदी, टैगोर नगर, सिविल लाइन्स, बलिया (उ०प्र०)
खातिर माडेस्ट ग्राफिक्स प्रा० लि०, डी०डी० शेड, ओखला इन्ड० एरिया, नई दिल्ली से मुद्रित
आ एफ 1118, आधार तल, चित्तरंजन पार्क, नई दिल्ली-19 से प्रकाशित।